सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार
Ministry of Information and Broadcasting
Government of India

फ़िल्म समारोह निदेशालय
Directorate of Film Festivals

66वें राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार 2018

National Film Awards 2018

आधिकारिक विवरणिका

THE OFFICIAL CATALOGUE

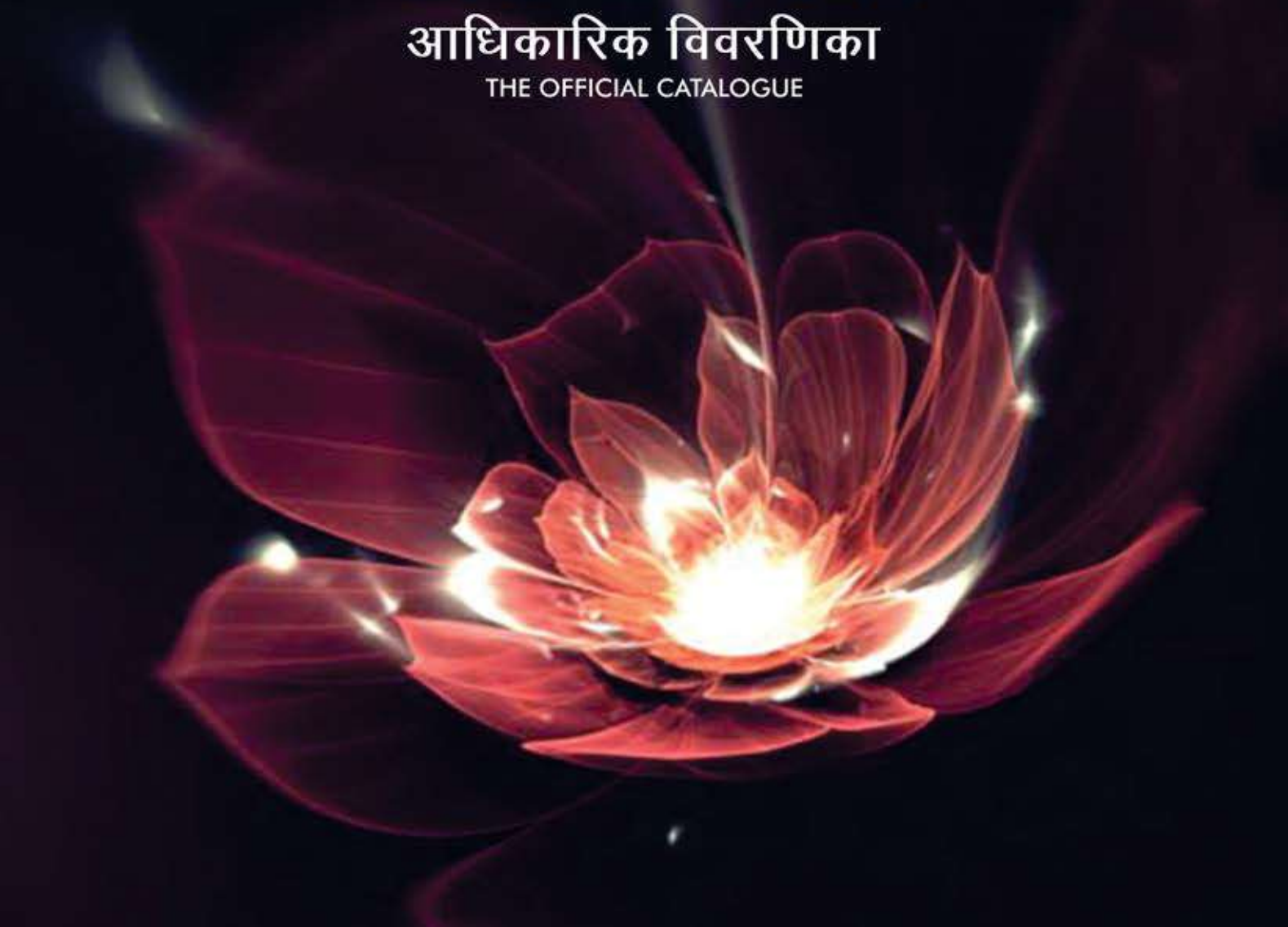

वें

आधिकारिक विवरणिका

THE OFFICIAL CATALOGUE

चैतन्य प्रसाद (अतिरिक्त महानिदेशक, डीएफएफ)
Chaitanya Prasad (Additional Director General, DFF)

तनु राय (उप निदेशक, एनएफए)
Tanu Rai (Deputy Director, NFA)

सम्पादक: **शंभु साहु** (अंग्रेजी), **पंकज रामेंदु** (हिन्दी)
Editors: **Shambhu Sahu** (English), **Pankaj Ramendu** (Hindi)

सहयोग: **कौशल्या मेहरा, अरविंद कुमार, कमलेश कुमार रावत**
Assisted by: **Kaushalya Mehra, Arvind Kumar, Kamlesh Kumar Rawat**

संयोजन: **सरवत जबीन, जोलीन क्लेयर लंगु, रूद्र प्रताप सिंह, गीतेश कुमार**
Co-ordination: **Sarwat Jabin, Jolyn Clair Langhu, Rudra Pratap Singh, Geetesh Kumar**

डिज़ाइन: **निर्माण एडवरटाईज़िंग प्रा. लि.**
Design: Nirman Advertising Pvt. Ltd.

कला निर्देशक: **मुकेश चंद्रा**
Creative Director: **Mukesh Chandra**

कला सहायक: **पवन यादव**
Creative Assistance: **Pawan Yadav**

प्रकाशक: **वि.दृ.प्र.नि., सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय**
Publisher: **DAVP, Ministry of Information and Broadcasting**

© Directorate of Film Festivals, Ministry of Information and Broadcasting, Government of India except the film related material.

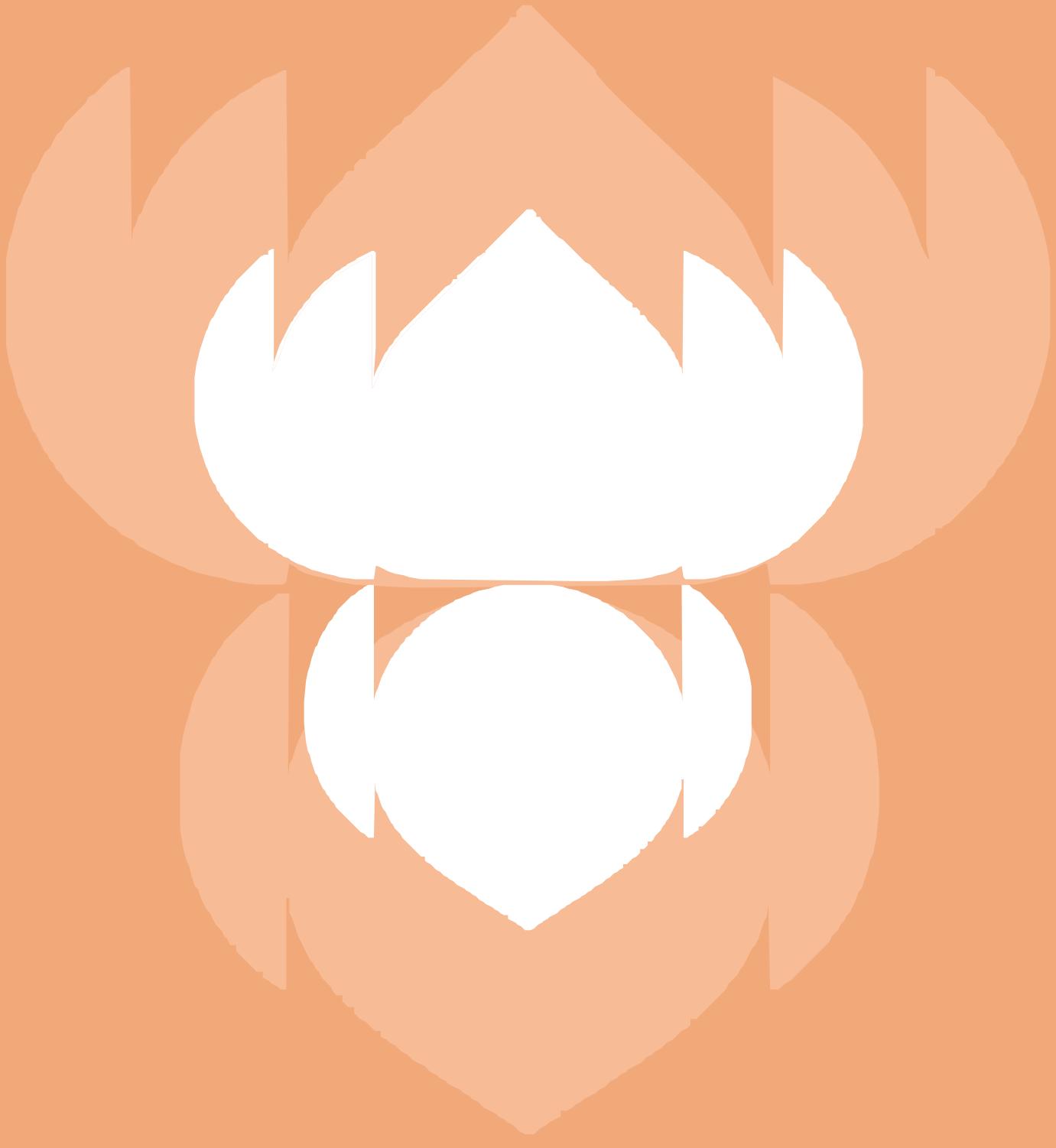

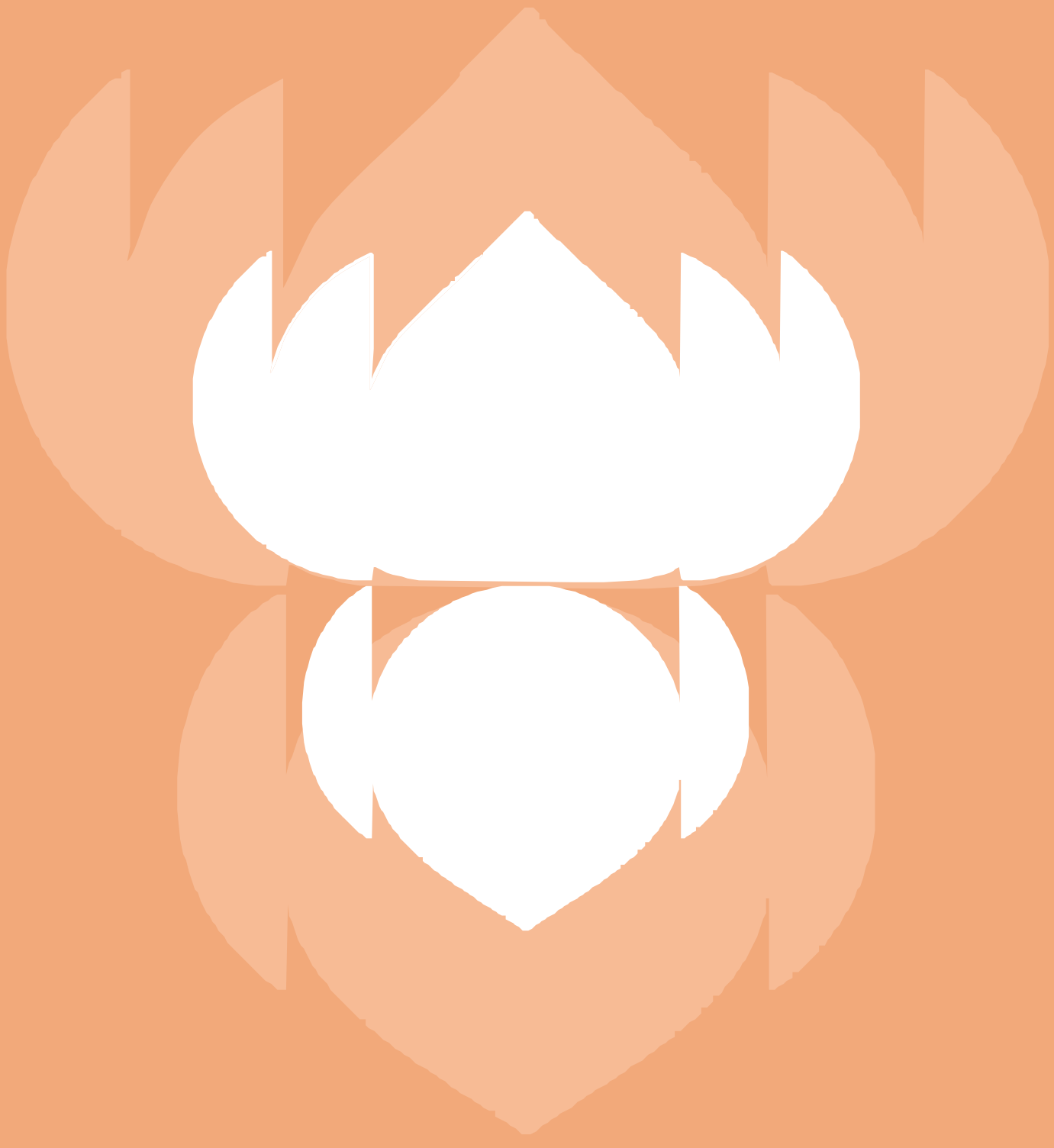

विषय सूची
CONTENTS

दादासाहब फ़ाल्के पुरस्कार
DADASAHEB PHALKE AWARD

दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार के विषय में 09 About Dadasaheb Phalke Award
दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार : अब तक सम्मानित 13 Dadasaheb Phalke Award Past Recipients
पुरस्कार चयन समिति 18 Award Committee
अमिताभ बच्चन – प्रोफाइल 23 Amitabh Bachchan - Profile
निर्णायक मंडल (फ़ीचर फ़िल्म) 28 Feature Film Jury
निर्णायक मंडल (गैर–फ़ीचर फ़िल्म) 34 Non-Feature Film Jury
निर्णायक मंडल (सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ लेखन) 38 Best Writing on Cinema Jury
प्रादेशिक निर्णायक मंडल (फ़ीचर फ़िल्म) 40 Regional Feature Film Jury
फ़िल्म अनुकूल प्रदेश निर्णायक समिति 45 Film Friendly State Jury Committee

फ़ीचर फ़िल्में
FEATURE FILMS

फ़ीचर फ़िल्में - एक नज़र में 48 Feature Films - At a Glance
सर्वश्रेष्ठ फ़ीचर फ़िल्म 50 Best Feature Film
इन्दिरा गांधी पुरस्कारः निर्देशक की पहली सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म 52 Indira Gandhi Award for Best Debut Film of a Director
लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाली सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म 54 Award for Best Popular Film Providing Wholesome Entertainment
राष्ट्रीय एकता के लिए सर्वश्रेष्ठ फ़ीचर फ़िल्म का नर्गिस दत्त पुरस्कार 56 Nargis Dutt Award for Best Feature Film on National Integration
सामाजिक मुद्दों पर सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म 58 Best Film on Social Issues
पर्यावरण संरक्षण / परिरक्षण पर सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म 60 Best Film on Environment Conservation/Preservation
सर्वश्रेष्ठ बाल फ़िल्म 62 Best Children's Film
सर्वश्रेष्ठ गुजराती फ़िल्म 64 Best Gujarati Film
सर्वश्रेष्ठ पंजाबी फ़िल्म 66 Best Punjabi Film
सर्वश्रेष्ठ असमिया फ़िल्म 68 Best Assamese Film
सर्वश्रेष्ठ कोंकणी फ़िल्म 70 Best Konkani Film
सर्वश्रेष्ठ कन्नड़ फ़िल्म 72 Best Kannada Film
सर्वश्रेष्ठ तेलुगू फ़िल्म 74 Best Telugu Film
सर्वश्रेष्ठ मलयालम फ़िल्म 76 Best Malayalam Film
सर्वश्रेष्ठ बांग्ला फ़िल्म 78 Best Bengali Film
सर्वश्रेष्ठ उर्दू फ़िल्म 80 Best Urdu Film
सर्वश्रेष्ठ हिन्दी फ़िल्म 82 Best Hindi Film
सर्वश्रेष्ठ तमिल फ़िल्म 84 Best Tamil Film
सर्वश्रेष्ठ मराठी फ़िल्म 86 Best Marathi Film
सर्वश्रेष्ठ गारो फ़िल्म 88 Best Garo Film
सर्वश्रेष्ठ शेरदुकपान फ़िल्म 90 Best Sherdukpan Film
सर्वश्रेष्ठ पंगचेन्पा फ़िल्म 92 Best Pangchenpa Film
सर्वश्रेष्ठ राजस्थानी फ़िल्म 94 Best Rajasthani Film

विषय सूची
CONTENTS

फ़ीचर फ़िल्में
FEATURE FILMS

सर्वश्रेष्ठ निर्देशन	96	Best Direction
सर्वश्रेष्ठ अभिनेता (साझा)	97	Best Actor (Shared)
सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री	99	Best Actress
सर्वश्रेष्ठ सह अभिनेता	100	Best Supporting Actor
सर्वश्रेष्ठ सह अभिनेत्री	101	Best Supporting Actress
सर्वश्रेष्ठ बाल कलाकार	102	Best Child Artist
सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायक	106	Best Male Playback Singer
सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायिका	107	Best Female Playback Singer
सर्वश्रेष्ठ छायांकन	108	Best Cinematography
सर्वश्रेष्ठ पटकथा (मौलिक)	109	Best Screenplay (Original)
सर्वश्रेष्ठ पटकथा (रूपांतरित)	110	Best Screenplay (Adapted)
सर्वश्रेष्ठ पटकथा (संवाद)	111	Best Screenplay (Dialogues)
सर्वश्रेष्ठ ध्वन्यांकन (लोकेशन साउंड)	112	Best Audiography (Location Sound)
सर्वश्रेष्ठ ध्वन्यांकन (साउंड डिज़ाइन)	113	Best Audiography (Sound Design)
सर्वश्रेष्ठ ध्वन्यांकन	114	Best Audiography
सर्वश्रेष्ठ सम्पादन	115	Best Editing
सर्वश्रेष्ठ प्रोडक्शन डिज़ाइन	116	Best Production Design
सर्वश्रेष्ठ वेशभूषा डिज़ाईनर	117	Best Costume Designer
सर्वश्रेष्ठ रूपसज्जा कलाकार	118	Best Make-up Artist
सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशन (संगीत)	119	Best Music Direction (Songs)
सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशन (पार्श्व संगीत)	120	Best Music Direction (Background Music)
सर्वश्रेष्ठ गीत	121	Best Lyrics
निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार	122	Special Jury Award
सर्वश्रेष्ठ स्पेशल इफैक्ट	124	Best Special Effects
सर्वश्रेष्ठ नृत्य संयोजन	126	Best Choreography
सर्वश्रेष्ठ एक्शन निर्देशन पुरस्कार	127	Best Action Direction Award (Stunt Choreography)
विशेष उल्लेख	128	Special Mention
कथासार	129	Synopsis

विषय सूची
CONTENTS

ग़ैर फ़ीचर फ़िल्में
NON-FEATURE FILMS

ग़ैर फ़ीचर फ़िल्में - एक नज़र में	140	Non-Feature Films - At a Glance
सर्वश्रेष्ठ ग़ैर फ़ीचर फ़िल्म	142	Best Non-Feature Film
निर्देशक की पहली सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म	146	Best Debut Non-Feature Film Of A Director
सर्वश्रेष्ठ कला / सांस्कृतिक फ़िल्म	148	Best Arts and Culture Film
सर्वश्रेष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी फ़िल्म	150	Best Science & Technology Film
सर्वश्रेष्ठ प्रचार फ़िल्म	152	Best Promotional Film
सर्वश्रेष्ठ पर्यावरण फ़िल्म	154	Best Environment Film
सामाजिक मुद्दों पर सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म	156	Best Film on Social Issues
सर्वश्रेष्ठ शैक्षणिक फ़िल्म	158	Best Educational Film
सर्वश्रेष्ठ खेल फ़िल्म	160	Best Film on Sports
सर्वश्रेष्ठ खोजपरक फ़िल्म	162	Best Investigative Film
सर्वश्रेष्ठ लघु कल्पित फ़िल्म	164	Best Short Fiction Film
पारिवारिक मूल्यों पर सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म	166	Best Film on Family Values
निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार	168	Special Jury Award
सर्वेश्रेष्ठ निर्देशन	170	Best Direction
सर्वश्रेष्ठ छायांकन	171	Best Cinematography
सर्वश्रेष्ठ ध्वनि आलेखन	172	Best On-Location Sound Recordist
सर्वश्रेष्ठ संगीत आलेखन	173	Best Audiography
सर्वश्रेष्ठ संपादन	174	Best Editing
सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशन	175	Best Music Direction
सर्वश्रेष्ठ प्रकथन / वॉइस ओवर	176	Best Narration/ Voice Over
विशेष उल्लेख	177	Special Mention
कथासार	178	Synopsis

सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ लेखन
BEST WRITING ON CINEMA

सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ पुस्तक	184	Best Book on Cinema
विशेष उल्लेख	186	Special Mention
सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म समीक्षक	187	Best Film Critic

फ़िल्म अनुकूल प्रदेश पुरस्कार
FILM FRIENDLY STATE AWARD

फ़िल्म अनुकूल राज्य	191	Film-Friendly State Award
सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म अनुकूल राज्य		Most Film-Friendly State

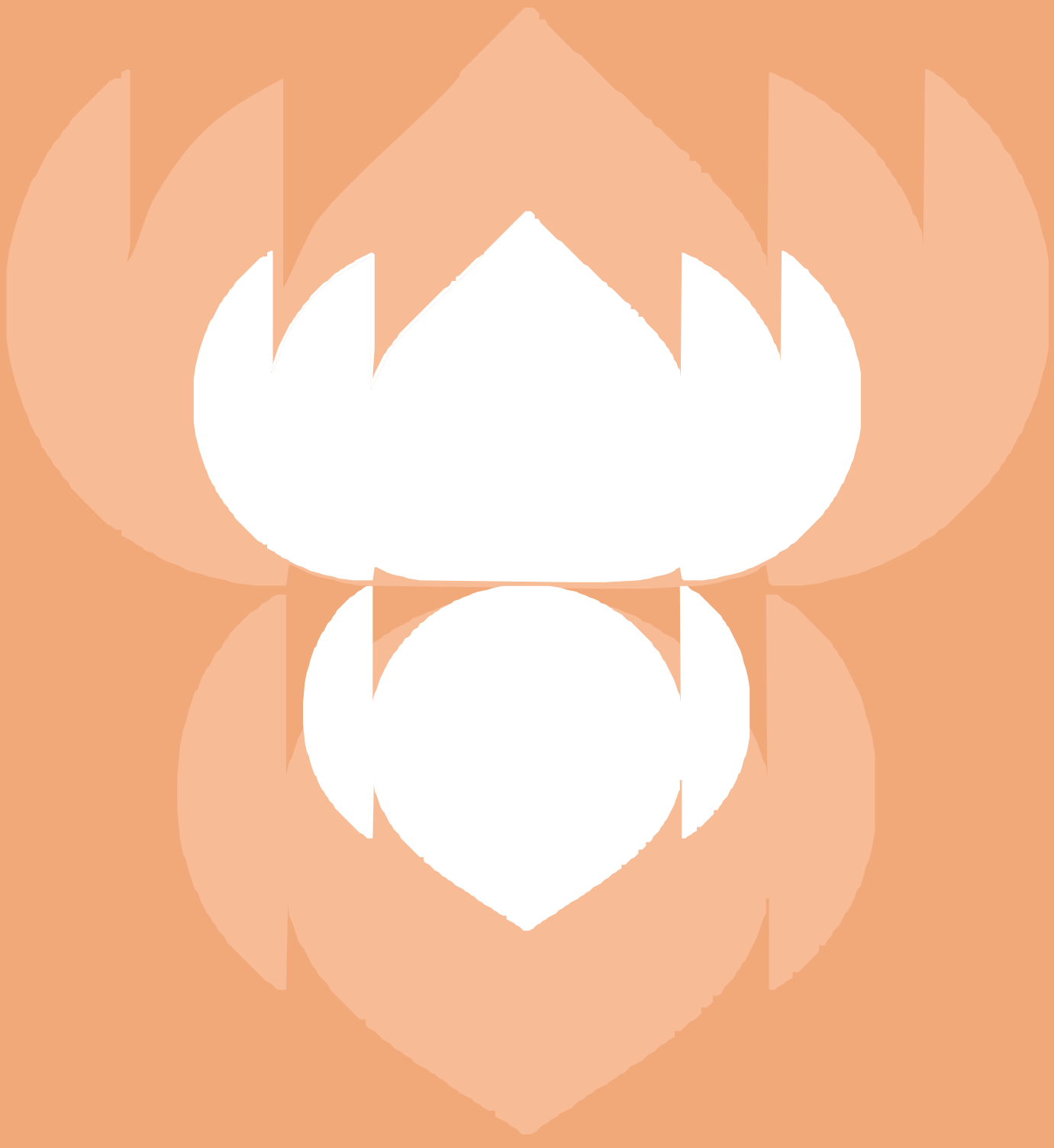

दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार
DADASAHEB PHALKE AWARD

राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार 2018

NATIONAL FILM AWARDS 2018

दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार भारतीय सिनेमा के संवर्धन और विकास में अप्रतिम योगदान के लिए किसी एक फ़िल्मी व्यक्तित्व को दिया जाता है। इसके अंतर्गत पुरस्कार स्वरूप स्वर्ण कमल, ₹10,00,000/– प्रशस्ति पत्र तथा शॉल प्रदान किया जाता है। भारत सरकार ने वर्ष 1969 में भारतीय सिनेमा के जनक, धुंडिराज गोविन्द फ़ाल्के के सम्मान में इसे स्थापित किया था।

The Dadasaheb Phalke Award is given to a film personality for his / her outstanding contribution to the growth and development of Indian Cinema. The Award comprises a Swarna Kamal, a cash Prize of ₹10,00,000/- (Rupees Ten Lakh) and a shawl. The award was instituted in 1969 by the government in honour of the father of Indian cinema, Dhundiraj Govind Phalke.

दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार
DADASAHEB PHALKE AWARD

भारतीय सिनेमा के जनक धुंडिराज गोविंद फाल्के या दादासाहेब फाल्के (1870–1944) ने 1913 में भारत की पहली फ़ीचर फिल्म *राजा हरिश्चंद्र* के द्वारा एक विलक्षण नवोन्मेषी फिल्मी जीवन की शुरुआत की। निर्माता, निर्देशक और पटकथा लेखक के रूप में उन्होंने अपनी कंपनी हिंदुस्तान फिल्म्स के द्वारा सिर्फ 15 सालों में 95 फ़ीचर फिल्मों और 26 लघु फिल्मों का निर्माण किया। उनकी महत्त्वपूर्ण फिल्मों में *मोहिनी भस्मासुर* (1913), *सत्यवान सावित्री* (1914), *लंका दहन* (1917), *श्री कृष्ण जन्म* (1918) और *कालिया मर्दन* (1919) शामिल हैं।

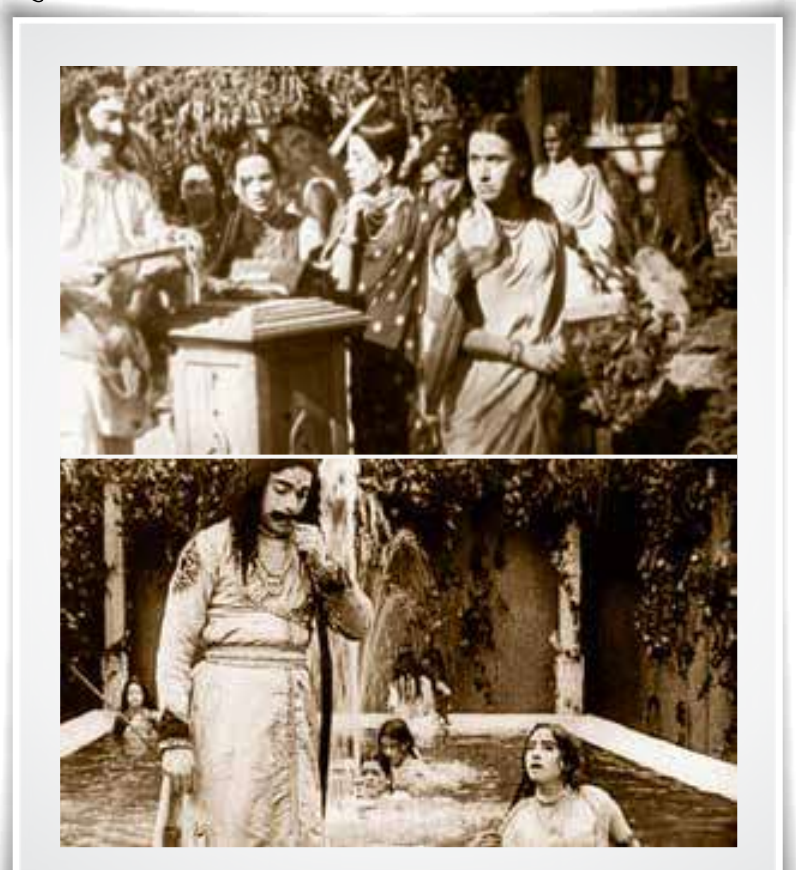

तेजी से बदलता कैरियर, हठी स्वभाव और विदेश यात्राएं, 20वीं सदी के उषाकाल में एक पारिवारिक व्यक्ति के बजाए उन्हें 21वीं सदी के किशोर के ज्यादा नजदीक ले आते हैं। मुद्रण व्यवसाय में प्रवेश करने से पहले उन्होंने फ़ोटोग्राफ़ी स्टुडियो से अपना कार्य शुरू किया। फिर कला की शिक्षा प्राप्त की और वे एक जादूगर और मंच कलाकार भी बने। चित्रकार राजा रवि वर्मा से प्रेरित होकर उन्होंने लीथोग्राफ़ी और ओलियोग्राफ़ी में दक्षता हासिल की। बाद में उन्होंने अपना प्रिंटिंग प्रेस स्थापित किया। आधुनिकतम प्रौद्योगिकी और मशीनरी के बारे में सीखने के लिए उन्होंने जर्मनी की यात्रा भी की। हालांकि अपने भागीदार के साथ विवाद होने पर उन्होंने मुद्रण व्यवसाय छोड़ दिया। एक मूक फिल्म *दि लाइफ ऑफ क्राइस्ट* से गहरे रूप में प्रभावित होने पर उन्होंने फ़िल्म बनाने का निर्णय लिया। उन्होंने लंदन से एक कैमरा, प्रिंटिंग मशीन, परफ़ोरेटर और कच्चा माल खरीदा। उन्होंने वहीं पर फिल्म बनाने का क्रैश कोर्स भी किया। इसके बाद उन्होंने भारत की पहली फ़ीचर फ़िल्म *राजा हरिश्चंद्र* बनायी। इस फ़िल्म को 1913 में बंबई के कोरोनेशन सिनेमा में प्रदर्शित किया गया और उसे अपार सफलता मिली। प्रथम विश्वयुद्ध के कारण भयंकर वित्तीय और कच्चे माल का संकट पैदा हो गया था, फिर भी उनका हौसला पस्त नहीं हुआ। उन्होंने लघु, वृत्तचित्र, शिक्षाप्रद, ऐनिमेशन और हास्य फ़िल्में बनायीं। जल्दी ही उन्होंने पाँच व्यावसायिकों की भागीदारी में एक फ़िल्म कंपनी हिंदुस्तान फ़िल्म्स की स्थापना की, जिसमें एक स्टूडियो था और प्रशिक्षित टेक्नीशियन और अभिनेता भी थे। एक बार फिर वे अपने भागीदारों के साथ संकट में फंस गये और उन्होंने कंपनी छोड़ दी।

फाल्के ने कुछ और फ़िल्मों का निर्देशन किया लेकिन वे अब अवरोध महसूस करने लगे थे। 1931 के बाद उनकी मूक फ़िल्में सवाक फ़िल्मों के साथ प्रतिद्वंद्विता नहीं कर पा रही थीं। उनकी अंतिम फ़िल्मों में *सेतु बंधन* (1932) और सवाक फिल्म *गंगावतरण* (1937) थीं। 1944 में उनका देहावसान हो गया। दादा साहब फाल्के ने फिल्मों की एक महान परंपरा का सूत्रपात किया। उन्होंने कई विपत्तियों और निजी त्रासदियों को झेला और ऐसे भारतीय फ़िल्म उद्योग की बुनियाद रखी जो आज विश्व में सर्वाधिक सफल और वैविध्यपूर्ण फ़िल्म उद्योग है।

दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार
DADASAHEB PHALKE AWARD

Dhundiraj Govind Phalke or Dadasaheb Phalke (1870-1944) is regarded as the father of Indian cinema. He directed India's first feature film, *Raja Harishchandra,* in 1913, flagging off a remarkably inventive career. A producer, director and screenwriter, he is believed to have made 95 feature films and 26 short films - a significant number - that his company Hindustan Films made in barely 15 years. His amazing body of films include *Mohini Bhasmasur* (1913), *Satyavan Savitri* (1914), *Lanka Dahan* (1917), *Shri Krishna Janma* (1918) and *Kaliya Mardan* (1919).

His rapid career switches, headstrong nature and trips abroad, more closely characterise a teenager in the 21st century, than a family man at the dawn of the 20th century. Starting out in a photography studio, he studied art, was a magician and stage performer, before joining the printing business. Inspired by the painter Raja Ravi Varma, Phalke specialised in lithographs and oleographs. Later, he started his own printing press, and even travelled to Germany to learn more about the latest technology and machinery. However, following a dispute with his partners, he quit the printing business. Greatly impressed by a silent film, *The Life of Christ,* he decided to make a film. He sailed London and bought a camera, printing machine, perforator and raw stock, and even got a crash course in film making. He soon made *Raja Harishchandra,* on a righteous king who sacrifices his family and kingdom to fulfil a vow and uphold the truth. India's first feature film *Raja Harishchandra* was exhibited at Bombay's Coronation Cinema in 1913, and was a grand success. Undeterred when World War I brought a severe financial and raw stock crunch, he made shorts, documentary features, educational, animation and comic films. Soon he established a film company, Hindustan Films, in partnership with five businessmen, with a studio, and trained technicians and actors. Again he ran into trouble with his partners and quit.

Phalke directed a few more films, but felt constrained. Moreover, his silent films were unable to cope with competition from the talkies after 1931. Among his last films were *Setu Bandhan* (1932) and a talkie, *Gangavataran* (1937). He died in 1944. Dadasaheb Phalke leaves behind a pioneer's legacy, not only of his astonishing films, but a joyous inventiveness, and a resilient, unbowed spirit that weathered many reverses and personal tragedies. Little did he know then that he was laying the foundation for the Indian film industry, today the most prolific and diverse in the world.

पूर्ववर्ती दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार विजेता
DADASAHEB PHALKE AWARD PAST RECIPIENTS

01 देविका रानी रोरिच
Devika Rani Roerich
■ 1969 ■

02 बी.एन. सरकार
B.N. Sircar
■ 1970 ■

03 पृथ्वीराज कपूर
Prithviraj Kapoor
■ 1971 ■

04 पंकज मल्लिक
Pankaj Mullick
■ 1972 ■

05 सुलोचना (रूबी मेयर्स)
Sulochana (Ruby Myers)
■ 1973 ■

06 बी.एन. रेड्डी
B.N. Reddy
■ 1974 ■

07 धीरेन गांगुली
Dhiren Ganguly
■ 1975 ■

08 कानन देवी
Kanan Devi
■ 1976 ■

09 नितिन बोस
Nitin Bose
■ 1977 ■

10 आर.सी. बोराल
R.C. Boral
■ 1978 ■

पूर्ववर्ती दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार विजेता
DADASAHEB PHALKE AWARD PAST RECIPIENTS

11

सोहराब मोदी
Sohrab Modi
■ 1979 ■

12

पी. जयराज
P. Jairaj
■ 1980 ■

13

नौशाद अली
Naushad Ali
■ 1981 ■

14

एल. वी. प्रसाद
L.V. Prasad
■ 1982 ■

15

दुर्गा खोटे
Durga Khote
■ 1983 ■

16

सत्यजीत राय
Satyajit Ray
■ 1984 ■

17

वी. शांताराम
V. Shantaram
■ 1985 ■

18

बी. नागी रेड्डी
B. Nagi Reddy
■ 1986 ■

19

राज कपूर
Raj Kapoor
■ 1987 ■

20

अशोक कुमार
Ashok Kumar
■ 1988 ■

पूर्ववर्ती दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार विजेता
DADASAHEB PHALKE AWARD PAST RECIPIENTS

21
लता मंगेशकर
Lata Mangeshkar
■ 1989 ■

22
ए. नागेश्वर राव
A. Nageswara Rao
■ 1990 ■

23
बी.जी. पेंठारकर
B.G. Pendharkar
■ 1991 ■

24
डॉ. भूपेन हज़ारिका
Dr. Bhupen Hazarika
■ 1992 ■

25
मज़रूह सुल्तानपुरी
Majrooh Sultanpuri
■ 1993 ■

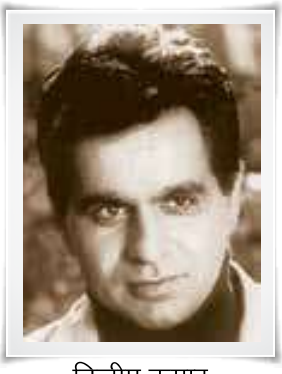
26
दिलीप कुमार
Dilip Kumar
■ 1994 ■

27
डॉ. राजकुमार
Dr. Rajkumar
■ 1995 ■

28
शिवाजी गणेशन
Shivaji Ganesan
■ 1996 ■

29
कवि प्रदीप
Kavi Pradeep
■ 1997 ■

30
बी.आर. चोपड़ा
B.R. Chopra
■ 1998 ■

पूर्ववर्ती दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार विजेता
DADASAHEB PHALKE AWARD PAST RECIPIENTS

31
ऋषिकेश मुखर्जी
Hrishikesh Mukherjee
■ 1999 ■

32
आशा भोंसले
Asha Bhosle
■ 2000 ■

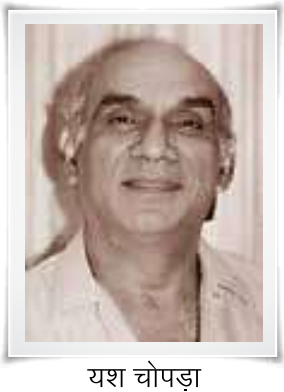
33
यश चोपड़ा
Yash Chopra
■ 2001 ■

34
देव आनंद
Dev Anand
■ 2002 ■

35
मृणाल सेन
Mrinal Sen
■ 2003 ■

36
अडूर गोपालाकृष्णन
Adoor Gopalakrishnan
■ 2004 ■

37
श्याम बेनेगल
Shyam Benegal
■ 2005 ■

38
तपन सिन्हा
Tapan Sinha
■ 2006 ■

39
मन्ना डे
Manna Dey
■ 2007 ■

40
वी.के. मूर्ति
V.K. Murthy
■ 2008 ■

पूर्ववर्ती दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार विजेता
DADASAHEB PHALKE AWARD PAST RECIPIENTS

41
डी. रामानायडू
D. Ramanaidu
■ 2009 ■

42
के. बालाचंदर
K. Balachander
■ 2010 ■

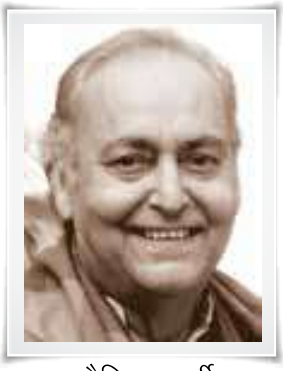
43
सौमित्र चटर्जी
Soumitra Chatterjee
■ 2011 ■

44
प्राण
Pran
■ 2012 ■

45
गुलज़ार
Gulzar
■ 2013 ■

46
शशि कपूर
Shashi Kapoor
■ 2014 ■

47
मनोज कुमार
Manoj Kumar
■ 2015 ■

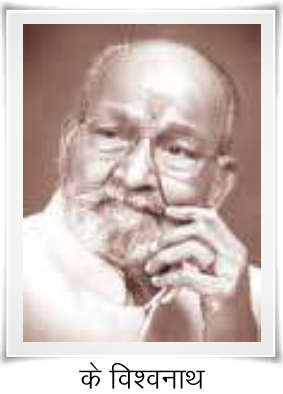
48
के विश्वनाथ
K Viswanath
■ 2016 ■

49
विनोद खन्ना
Vinod Khanna
■ 2017 ■

दादासाहब फाल्के पुरस्कार समिति

DADASAHEB PHALKE AWARD COMMITTEE

1

आशा भोंसले (Asha Bhosle)

आशा भोंसले भारतीय संगीत, विशेषकर हिन्दी फ़िल्म संगीत की महान हस्तियों में से एक हैं। 1943 में एक पार्श्व गायिका के तौर पर अपनी यात्रा की शुरुआत करते हुए उन्होंने अब तक एक हज़ार से भी अधिक फ़िल्मों के लिए गाने गाये हैं। आशाजी ने फ़िल्म संगीत, पॉप, ग़ज़ल, पारम्परिक भारतीय शास्त्रीय संगीत, लोकगीत आदि सभी विधाओं एवं शैलियों में गायन किया है। 2009 में वर्ल्ड रिकॉर्ड्स एकेडमी ने, जो विश्व रिकॉर्ड को प्रमाणित करने वाली एक अंतरराष्ट्रीय संस्था है, उन्हें 'मोस्ट रिकॉर्डेड आर्टिस्ट' के तौर पर मान्यता दी है। गिनीज़ बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स ने भी संगीत के इतिहास में मोस्ट रिकॉर्डेड आर्टिस्ट के तौर पर आशाजी को आधिकारिक स्वीकृति दी है। उन्हें 2000 में दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार और 2008 में पद्म विभूषण से सम्मानित किया जा चुका है।

Asha Bhosle is one of the legends of Indian music, particularly Hindi film music. Starting as a playback singer in 1943, she has sung for over a thousand films. Bhosle's work includes film music, pop, ghazals, traditional Indian classical music and folk songs. World Records Academy, an international organisation which certifies world records, recognised her as the 'Most Recorded Artist' in the world in 2009. In 2011, she was acknowledged by the Guinness Book of World Records as the most recorded artist in music history. She is a recipient of the Dadasaheb Phalke Award in 2000 and the Padma Vibhushan in 2008.

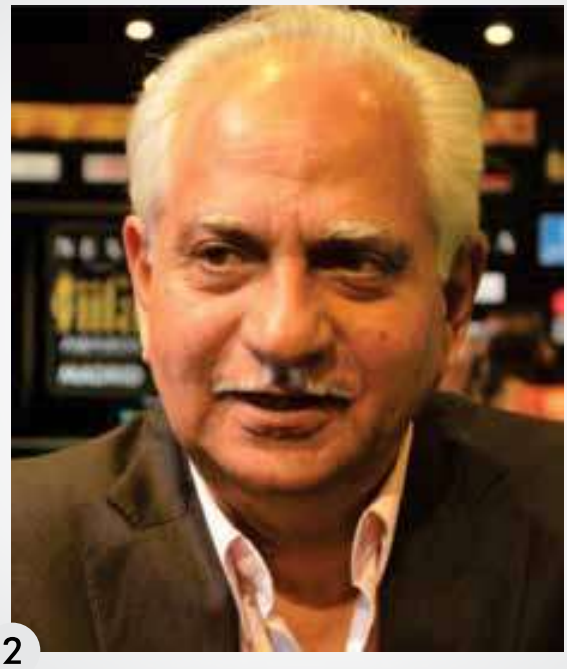

2

रमेश सिप्पी (Ramesh Sippy)

रमेश सिप्पी एक भारतीय फिल्म निर्देशक और निर्माता हैं। जो अपनी चर्चित और हिंदी सिनेमा के इतिहास में मील का पत्थर फिल्म शोले (1975) के लिए जाने जाते हैं। इन्होंनें और भी कई चर्चित फिल्मों का निर्देशन किया जिसमें सीता और गीता (1972), सागर (1985), शक्ति (1982) और निर्माता के तौर पर इनकी फिल्मों में ब्रह्मचारी (1968), चांदनी चौक टू चाइना (2009), दम मारो दम (2011) शामिल हैं। इन्हें भारत के प्रतिष्ठित सम्मान पदम श्री (2013) से भी नवाजा जा चुका है।

Ramesh Sippy is an Indian film director and producer, best known for directing the popular and critically acclaimed film 'Sholay' (1975). He has also directed other popular films such as 'Seeta Aur Geeta' (1972), 'Zameen' (1987), 'Saagar' (1985), 'Shakti' (1982) and also produced films including 'Brahmachari' (1968), 'Chandni Chowk to China' (2009), 'Dum Maaro Dum' (2011). He won the coveted civilian honour Padma Shri in 2013.

3

टी.एस. नागाभर्ना (T.S. Nagabharana)

टी.एस. नागाभर्ना एक फिल्म निर्देशक और वे कन्नड़ फिल्म जगत एवं समानांतर सिनेमा में अग्रणी स्थान रखते हैं। वे उन चुनिंदा फिल्म निर्देशकों में से एक हैं, जिनका मुख्यधारा और समानांतर सिनेमा जगत में नाम है। उन्होंने टेलीविजन और सिनेमा दोनों में अपार सफलता हासिल की है।

T.S. Nagabharana is an Indian film director active in the Kannada film industry and a pioneer of the parallel cinema. He is one of the few film directors to have straddled the mainstream and parallel cinema worlds. He achieved success both in television and cinema. He has multiple National Awards to his credit.

4

अनिल कपूर (Manoj Kumar)

अनिल कपूर एक हिंदी फिल्म अभिनेता और निर्माता है, इन्होंने 100 से भी ज्यादा फिल्मों में अभिनय किया इसके अलावा इन्होंने अंतर्राष्ट्रीय फिल्म और टेलीविजन श्रंखला में भी अभिनय किया. इन्होंनें पहली बड़ी भूमिका वो सात दिन (1983) में निभाई थी. इसके बाद इन्होंने कर्मा (1986) मि. इंडिया (1987), तेजाब (1988) बेटा, (1992), विरासत (1997), ताल (1999), पुकार (2000) नो एंट्री (2005), वेलकम (2007), रेस (2008), रेस 2 (2013), दिल धड़कने दो (2015), और टोटल धमाल (2019) जैसी चर्चित फिल्मों में अभिनय किया. डेनी बोयल की ऑस्कर अवार्ड विनिंग स्लमडॉग मिलेनियर (2008) , मिशन इम्पॉसिबल–घोस्ट प्रोटोकॉल और एक्शन टीवी सीरीज 24 में भी अभिनय किया. इन्हें पुकार (2001), और गांधी माय फादर (2008) के लिए राष्ट्रीय फिल्म अवार्ड से नवाजा गया.

Anil Kapoor is a Hindi film actor and producer who has acted in over 100 films besides a few international films and television series. His first major role was in 'Woh 7 Din' (1983), following which he starred in many popular films such as 'Karma' (1986), 'Mr. India' (1987), 'Tezaab' (1988), 'Beta' (1992), 'Virasat' (1997), 'Taal' (1999), 'No Entry' (2005), 'Welcome' (2007), 'Race' (2008) and 'Race 2' (2013), 'Dil Dhadakne Do' (2015), and 'Total Dhamaal' (2019). His also starred in Danny Boyle's Academy Award-winning film 'Slumdog Millionaire' (2008), 'Mission Impossible: Ghost Protocol' and action TV series '24'. He has won the National Film Award for 'Pukar' (2001) and 'Gandhi, My Father' (2008).

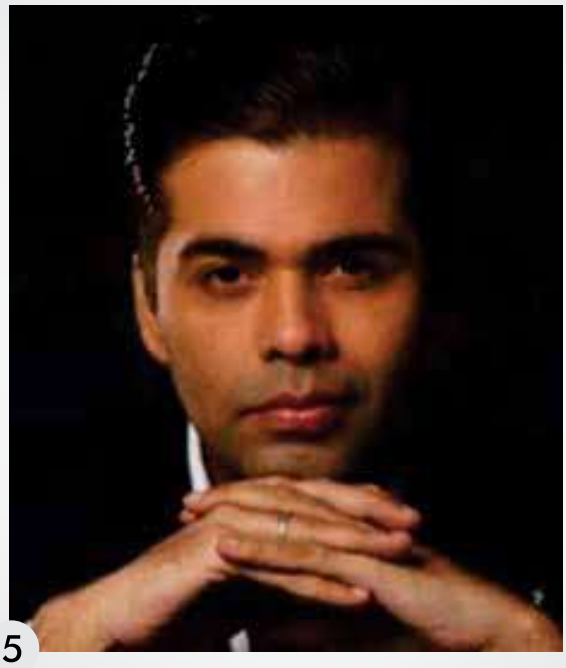

5

करण जोहर (Karan Johar)

करण जोहर उर्फ केजो एक जाने माने हिंदी फिल्म निर्देशक, निर्माता, पटकथा लेखक, अभिनेता और टेलिविजन कलाकार हैं. इनके निर्देशन में बनी फिल्मों में कुछ कुछ होता है (1998), कभी खुशी कभी गम (2001), कभी अलविदा ना कहना (2006), माय नेम इज खान (2010) स्टूडेंट ऑफ दि इयर (2012), बॉम्बे टॉकीज (2013), ए दिल है मुश्किल (2016) शामिल हैं. इनका टीवी शो 'कॉफी विद करण' काफी चर्चित है।

Karan Johar, a.k.a. KJo, is a well-known Hindi film director, producer, screenwriter, actor and television personality. His films as director include 'Kuch Kuch Hota Hai' (1998), 'Kabhi Khushi Kabhie Gham' (2001), 'Kabhi Alvida Naa Kehna' (2006), 'My Name Is Khan' (2010), 'Student of the Year' (2012), 'Bombay Talkies' (2013), 'Ae Dil Hai Mushkil' (2016). He also hosts popular celebrity chat show 'Koffee with Karan' on TV.

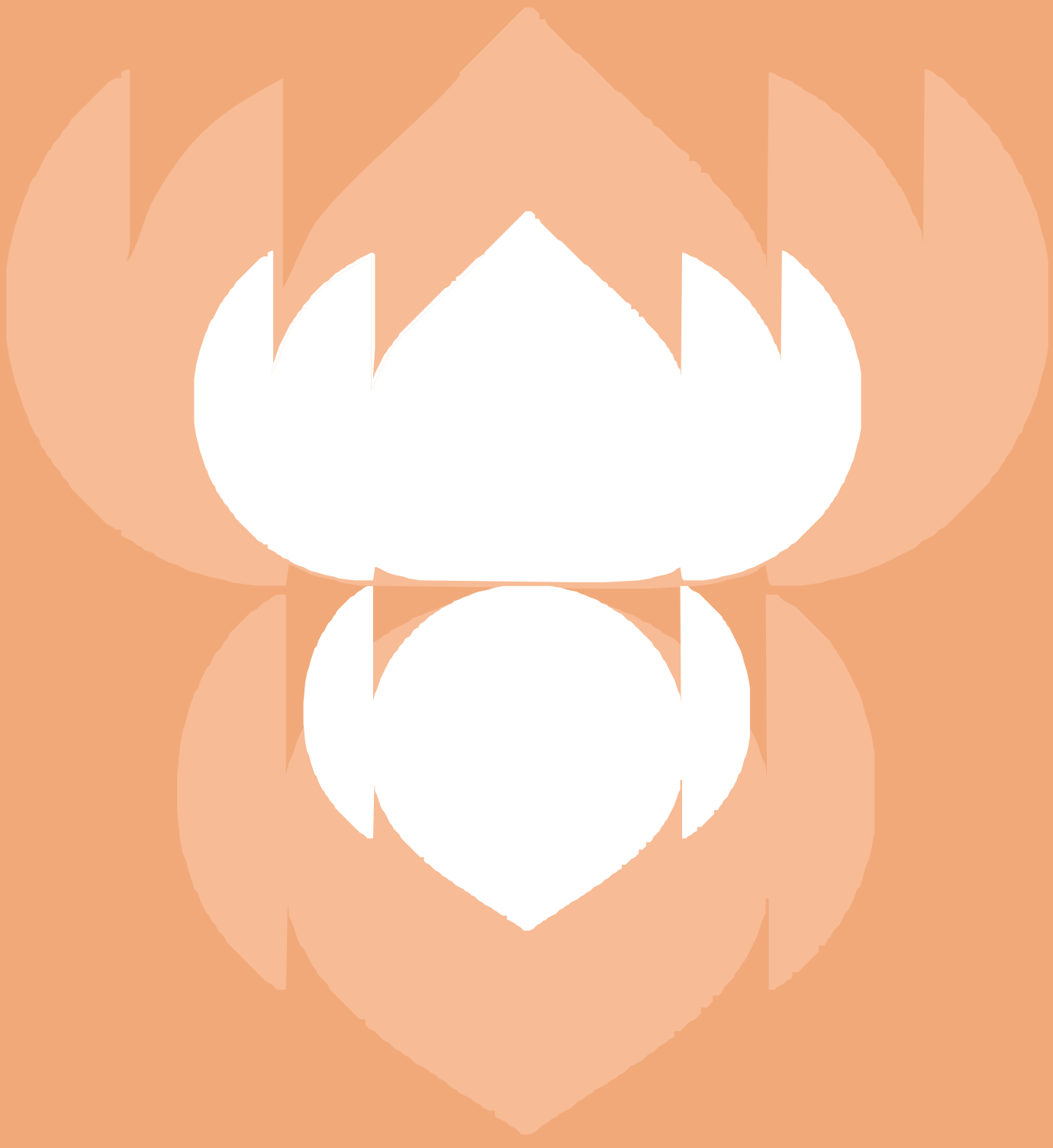

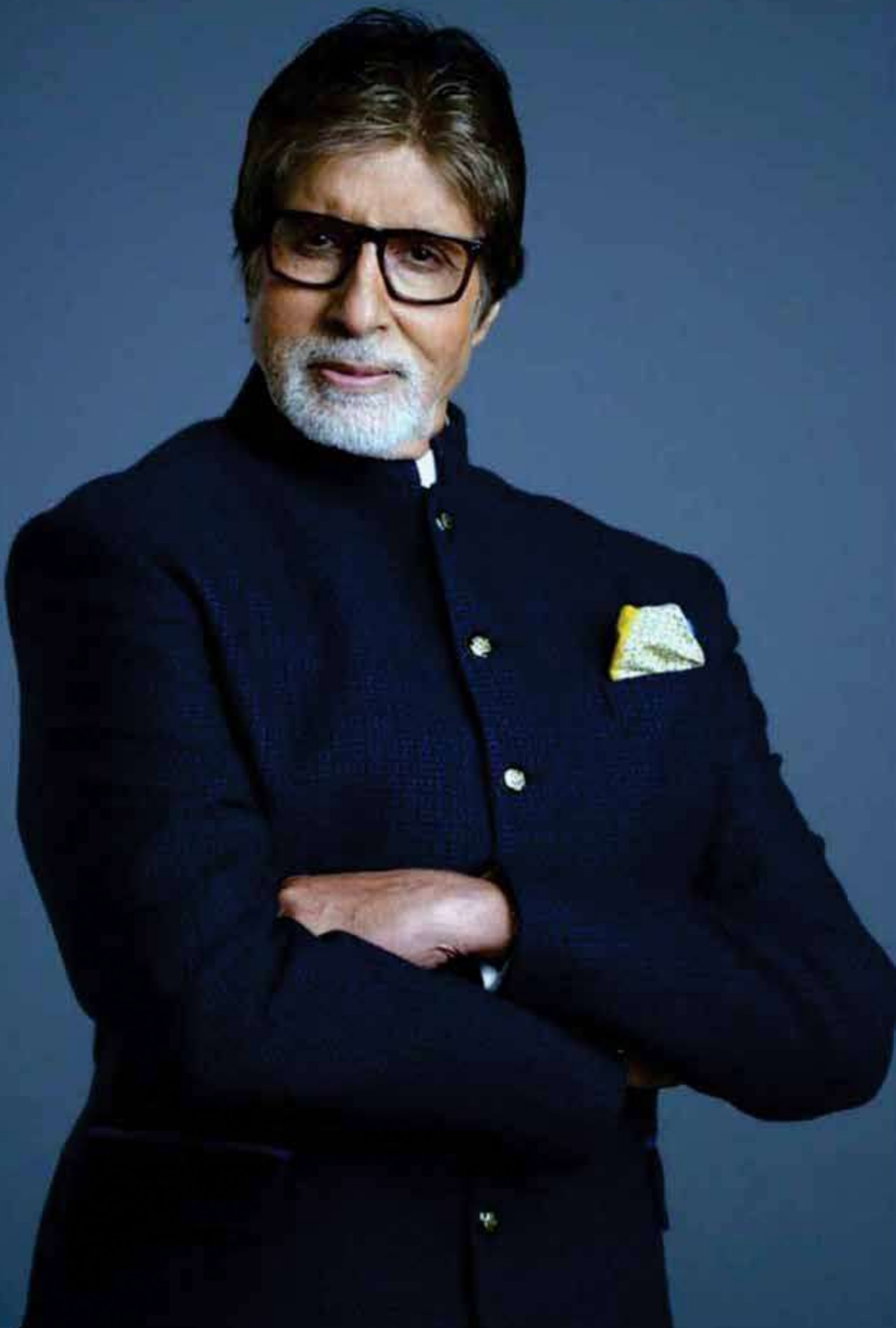

दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार विजेता परिचय
DADASAHEB PHALKE AWARD WINNER PROFILE

अमिताभ बच्चन
दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार विजेता, 2018

ये एक सुखद संयोग है कि अमिताभ बच्चन ने इसी साल फिल्म उद्योग में अपने 50 साल पूरे किए हैं और इसी साल उन्हें भारतीय सिनेमा के सर्वोच्च सम्मान दादा साहेब फाल्के से नवाजा गया है। 1999 में उन्हें बीबीसी ने सदी के सितारे के तौर का रुतबा हासिल हुआ, उन्होंने हिंदी फिल्म को अपने पांच दशक दिए हैं।

इन्होंने अपने अभिनय की शुरूआत 'सात हिंदुस्तानी' (1969) से की थी, आगे चलकर उन्होंनें 'आनंद' (1971), 'जंजीर' (1973), 'दीवार'(1975), शोले (1975) और डॉन (1978) जैसी चर्चित फिल्में शुमार हैं, जिसके बाद उनकी एंग्री यंग मैन की छवि बनी और वो देश के दिलों की धड़कन बन गए। इनके इन फिल्मों में निभाए किरदार और उनका असर भारत के युवाओं पर प्रभाव छोड़ता है। युवाओं ने उन्हें अपनी बात करने वाले हीरो की तरह देखा।

1970 का अंत होते होते बच्चन 35 फिल्मों मे काम कर चुके थे। तब से अब तक कुछ वक्त को अगर छोड़ दिया जाए तो वो हमेशा ही बड़े पर्दे के शहंशाह रहे हैं अपनी बेहतरीन अभिनय, दमदार संवाद अदायगी उनके अभिनय में चार चांद लगा देता है, हिंदी सिनेमा में इनके कुछ नहीं भूलने वाले किरदारों में, इन्सपेक्टर विजय (जंजीर), जय (शोले), डॉन, (डॉन), डॉ. भास्कर बनर्जी उर्फ बाबु मोशाय (आनंद), एंथोनी गोंजालवेस (अमर अकबर एंथोनी) अर्जुन सिंह (नमक हलाल), कालिया (कालिया), विजय दीनानाथ चौहान (अग्निपथ), इन्सपेक्टर विजय कुमार श्रीवास्तव–शंहशाह (शहंशाह), विकी कपूर (शराबी), राज मलहोत्रा (बागबान), सुभाष नागरे – सरकार (सरकार), ऑरो (पा), भाश्कोर बेनर्जी (पिकू) और कई दूसरे किरदार शामिल हैं। इनकी किरदार को जीने की कला सभी भाषाई और सामाजिक बंधनों को तोड़ देती है और इनका निभाया किरदार आम इंसान से सीधा नाता जोड़ लेता है चाहे फिर वो देश का हो या विदेशी। यही खूबी इन्हें भारत का सबसे विविधताओं से भरा कलाकार बनाती है।

एक सफल अभिनेता के साथ ही बच्चन विख्यात हिंदी कवि हरिवंश राय बच्चन और तेजी बच्चन के पुत्र हैं। इन्होंने गायकी और फिल्म निर्माण में भी हाथ आजमाया है।

इनकी ऊंची कद काठी, गहरी आंखे और वजनदार आवाज इन्हे एक ऐसे व्यक्तित्व के तौर पर प्रस्तुत करती है जो पर्दे पर एंग्रीयंग मैन की छवि के साथ उचित न्याय कर सकती है। अपने वक्त के चर्चित रोमांचित किरदारों से इतर बच्चन ने अक्सर समाजिक बुराइयों जैसे भ्रष्टाचार, सामाजिक शोषण, मजदूरी से लड़ने वाले किरदारों को निभाया। फिल्म जैसे शोले, मर्द, जजीर, कुली, दीवार, शंहशाह, काला पत्थर, कालिया आदि में निभाए इनके किरदार लोगों से सीधा नाता जोड़ते हैं।

दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार विजेता परिचय
DADASAHEB PHALKE AWARD WINNER PROFILE

बच्चन अपनी पत्नी जया भादुड़ी जो एक अभिनेत्री हैं, उनसे फिल्म गुड्डी में काम करने के दौरान मिले थे, दोनों ने 1973 में शादी कर ली। इन्होंने साथ में कई फिल्में जैसे, जंजीर, अभिमान, सिलसिला, कभी खुशी कभी गम आदि की।

कई दूसरे सम्मानों के अलावा बच्चन को 'अग्निपथ' (1990), 'ब्लैक' (2005), 'पा'(2009), और 'पीकू' (2015) के लिए चार राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। बच्चन ने 175 से भी ज्यादा बॉलीवुड फिल्मों में काम किया है और 70 साल की उम्र में 'बज लरमैन' की 'दि ग्रेट गेट्सबी' से उन्होंने हॉलीवुड में पदार्पण किया. वह पिछले एक दशके से भी ज्यादा वक्त से टेलीविजन गेम शो 'कौन बनेगा करोड़पति' का संचालन भी कर रहे हैं।

दादासाहेब फ़ाल्के पुरस्कार विजेता परिचय
DADASAHEB PHALKE AWARD WINNER PROFILE

Amitabh Bachchan
Dadasaheb Phalke Award Winner, 2018

It's a pleasant coincidence that Amitabh Bachchan has won the 50th Dada Saheb Phalke Award, Indian cinema's biggest honour, in his 50th year in the Indian film industry. Bachchan, who was recognised as the 'Star of the Millennium' by the BBC in 1999, has been acting in Hindi films for over five decades now.

He made his acting debut with 'Saat Hindustani' (1969), followed by 'Anand' (1971). His next films, like 'Zanjeer' (1973), 'Deewar' (1975), 'Sholay' (1975), and 'Don' (1978), gave him an image of 'angry young man' and made him a heartthrob of the nation. His characters in such films and his effective portrayals of them embodied the aspirations and emotions of the youth of India, who saw in him a champion of their cause. By the end of the 1970s, Bachchan had appeared in over 35 films! Since then he has reigned supreme on the big screen, except for a few hiatuses. Amitabh Bachchan, with his supreme skill in acting and unmatched dialogue delivery, increased the scope of his roles, bringing to life some of the most unforgettable characters in Hindi cinema. Some of these include Inspector Vijay ('Zanjeer'), Jai ('Sholay'), Don ('Don'), Dr Bhaskar Banerjee aka Babu Moshay ('Anand'), Anthony Gonzalves ('Amar Akbar Anthony'), Arjun Singh ('Namak Halal'), Kalia ('Kalia'), Vijay Dinanath Chauhan ('Agneepath'), Inspector Vijay Kumar Srivasatav/Shehanshah ('Shehanshah'), Vicky Kapoor ('Sharaabi'), Raj Malhotra ('Baghban'), Subhash Nagre/Sarkar ('Sarkar'), Auro ('Paa'), Bhashkor Banerjee ('Piku'), and many more. His convincing portrayal of emotions in his acting transcended all social and lingual boundaries and established a personal connect with the viewers in the country and abroad, making him one of the greatest and most versatile actors in India.

Besides being a hugely successful actor, Bachchan, a son of renowned Hindi poet Harivansh Rai Bachchan and Teji Bachchan, has also dabbled in playback singing, narration, and film production.

Interestingly, his tall persona, intense eyes and deep baritone voice, which came in the way of his becoming an actor initially, became his biggest asset and added gravity and nuances of his angry man image on screen. Unlike the popular, romantic characters of his time, Bachchan often portrayed characters of grit fighting ills of the society, like corruption, social oppression, slavery, etc. His characters in films like 'Sholay', 'Mard', 'Zanjeer', 'Coolie', 'Deewar', 'Shehanshah', 'Kala Pathar', 'Kalia', etc. had a huge connect with the large masses

Bachchan met his future wife Jaya Bhaduri, also an accomplished actor, while working together in the film 'Guddi'. They married each other in 1973. They worked together in many films like 'Zanjeer', 'Abhimaan', 'Silsila', 'Kabhi Khushi Kabhi Gham', etc.

Bachchan has won four National Film Awards, for 'Agneepath' (1990), 'Black' (2005), 'Paa' (2009), and 'Piku' (2015), besides several other awards. Bachchan has appeared in over 175 Bollywood films, and made his Hollywood debut in Baz Luhrmann's 'The Great Gatsby' (2013) at the age of 70. He also has been hosting popular television game show 'Kaun Banega Crorepati' for over a decade now.

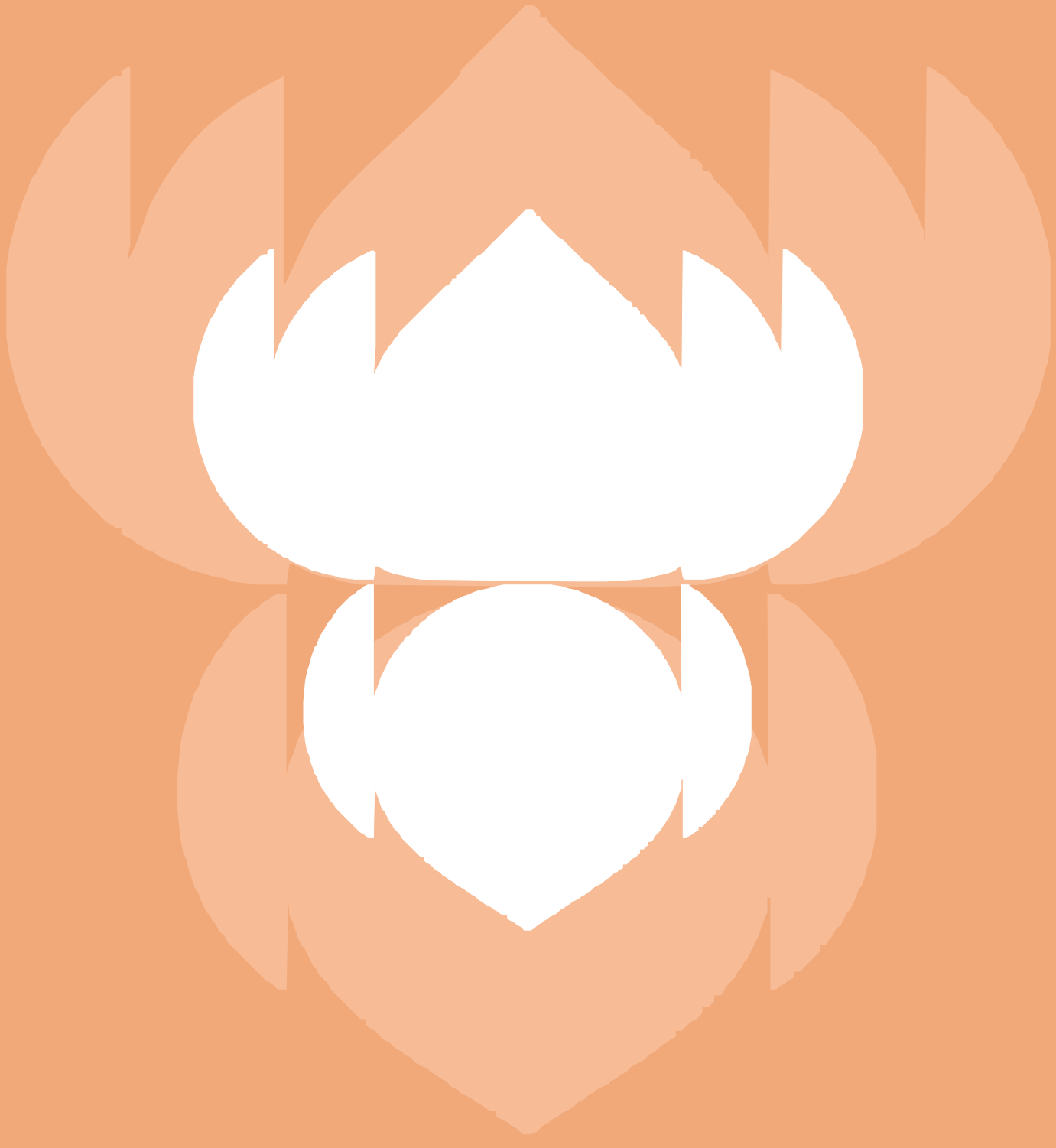

ज्यूरी
JURY

66वें राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार 2018

NATIONAL FILM AWARDS 2018

राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार तीन वर्गों में दिये जाते हैं–फ़ीचर फ़िल्म, गैर–फ़ीचर फ़िल्म तथा सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ लेखन। प्रत्येक वर्ग के लिए अलग निर्णायक मण्डल होता है।

57वें राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कारों से फ़ीचर फ़िल्म श्रेणी में विजेताओं का चयन द्वि–स्तरीय समिति द्वारा किया जाता है। ये हैं पाँच प्रादेशिक समितियाँ और एक केन्द्रीय समिति। चयन समिति के सदस्य सिनेमा, संबद्ध क्षेत्रों और मानवीय शास्त्रों से जुड़े हुए प्रतिष्ठित लोग होते हैं। चयन प्रक्रिया के दौरान विचार–विमर्श पूर्ण रूप से गोपनीय होते हैं जिससे सदस्यों को बाहरी प्रभावों से दूर रखने में मदद मिलती है और पूरी स्वतन्त्रता, निष्पक्षता के साथ पुरस्कार विजेताओं का चयन किया जाता है।

The National Film Awards are given in three sections, viz., Feature Films, Non-Feature Films and Best Writing on Cinema. Each section has a different jury.

Since the 57th National Film Awards, the awards in feature film section are decided through a two-tier selection process comprising five regional panels and a central jury. The juries are distinguished persons in the field of cinema, other allied arts and humanities. The jury deliberations are confidential, which provides an enabling environment to insulate the jurors from external influences, and also facilitates selection with impartiality, freedom and fairness.

फ़ीचर फ़िल्म केन्द्रीय ज्यूरी
(FEATURE FILMS CENTRAL JURY)

अध्यक्ष (Chairperson)

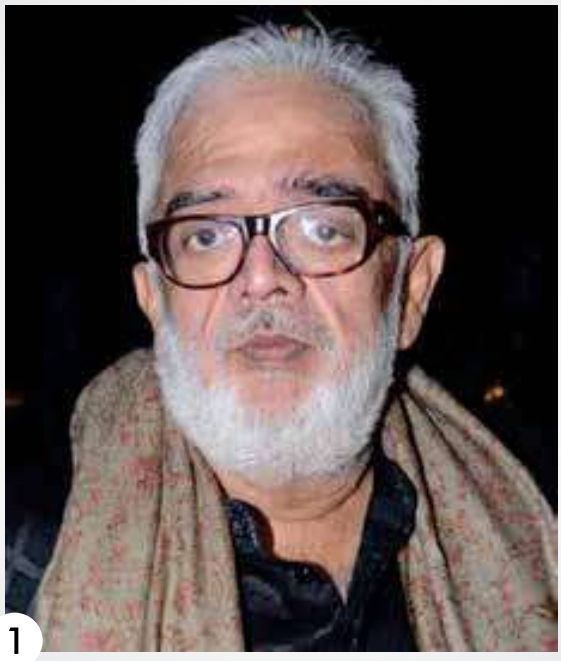

राहुल रवैल (Rahul Rawail)

राहुल रवैल एक जाने माने फिल्म निर्देशक हैं जिन्हें तीस साल से ज्यादा का अनुभव है और जिन्होंने 17 फीचर फिल्म और दो टीवी सीरिज बनाई हैं। उनकी यादगार फिल्मों में लव स्टोरी (1981), बेताब (1983), अंजाम (1994), और प्यार हो गया (1997), और जो बोले सो निहाल (2005) शामिल है। उन्हें कुमार गौरव, अमृता सिंह, सनी देओल, काजोल और एश्वर्या राय बच्चन जैसे लोकप्रिय सितारों को लॉन्च करने का श्रेय जाता है। वह ईफ्फी के भारतीय पैनोरामा, राष्ट्रीय फिल्म समारोह और ऑस्कर्स के लिए भेजी जाने वाली भारतीय फिल्मों के निर्णायक मंडल के सदस्य रह चुके हैं। वह 2017 में ईफ्फी के कार्यवाहक अध्यक्ष थे।

Rahul Rawail is a well-known film director whose work spans over three decades and includes 17 feature films and two TV series. His notable films include 'Love Story' (1981), 'Betaab' (1983), 'Anjaam' (1994), '...Aur Pyaar Ho Gaya' (1997) and 'Jo Bole So Nihaal' (2005). He is credited with launching popular film stars such as Kumar Gaurav, Amrita Singh, Sunny Deol, Kajol and Aishwarya Rai Bachchan. He has been on the jury of IFFI's Indian Panorama, National Film Awards and the jury which selected Indian films for the Oscars. He was the acting chairperson of the IFFI in 2017.

फ़ीचर फ़िल्म केन्द्रीय ज्यूरी
(FEATURE FILMS CENTRAL JURY)

2

अर्चना आर सिंह (Archana R. Singh)

अर्चना आर सिंह, पीएचडी हैं और स्कूल ऑफ कम्यूनिकेशन स्टडीज, पंजाब यूनिवर्सिटी, चंढीगढ़ की प्रोफेसर और चेयरपर्सन है। वह एफटीआईआई सोसायटी और एफटीआईआई की अकादमिक और संचालन समिति की सदस्य रही हैं। वह वृत्तचित्र निर्माता, लेखक, वॉइस ओवर कलाकार भी हैं। वह आकाशवाणी के लिए वाणी वर्कशॉप और राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान के लिए ऑनलाइन लेक्चर देती हैं। इन्हें 2015 में कॉन्फेडरेशन ऑफ इंडियन इंडस्ट्रीज (सीआईआई) की तरफ से वुमन ऑफ एक्शन से नवाजा गया था।

Archana R. Singh, PhD, is a Professor and Chairperson of the School of Communication Studies, Panjab University, Chandigarh. She is a member of Film and Television Institute of India (FTII) Society and a Member of FTII's Academic and Governing Council. She is also a documentary maker, scriptwriter and voice-over artist. She conducts Vani workshops for Akashvani, and online lectures for National Institute for Technical Teachers Training. She was awarded the 'Woman of Action' award by Confederation of Indian Industries (CII) in 2015.

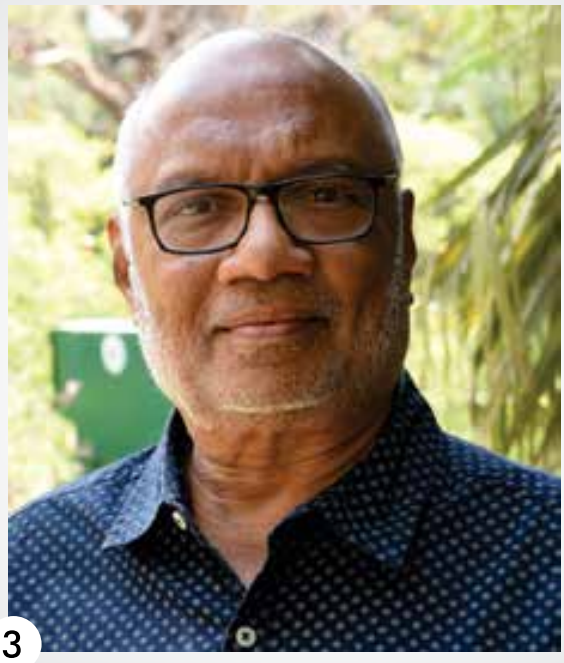

3

अशोक राणे (Ashok Rane)

अशोक राणे फिल्म सोसाइटी के सक्रिय कार्यकर्ता, फिल्म आलोचक, इतिहासविद, फिल्म शिक्षक, लेखक, निर्देशक और फिमिंगो इंटरनेशनल शॉर्ट फिल्म फेस्टिवल, और औरंगाबाद इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल के फेस्टिवल निदेशक हैं। वह इंडियन फिल्म अकादमी (आईएफए) के संस्थापक निदेशक हैं। इन्हें दो बार राष्ट्रीय सम्मान से नवाजा जा चुका है – पहला विश्व सिनेमा के इतिहास पर लिखी गई पुस्तक के लिए और दूसरी बार बतौर सर्वश्रेष्ठ फिल्म आलोचक के लिए। वह कान फिल्म मार्केट में मराठी सिनेमा के लिए बतौर कोऑर्डिनेटर अपनी सेवाएं दे रहे हैं जो 2016 से शुरू की गई महाराष्ट्र सरकार की पहल है।

Ashok Rane is a film society activist, film critic, historian, film teacher, writer, director and also the festival director of Fimingo International Short Film Festival and Aurangabad International Film Festival. He is the Founder Director of Indian Film Academy (IFA). He is a recipient of two National Awards – the first one for his very first book on the history of world cinema and the other one as the Best Film Critic. He has been serving as the coordinator for the Marathi Cinema at Cannes Film Market, an initiative of the government of Maharashtra since 2016.

फ़ीचर फ़िल्म केन्द्रीय ज्यूरी
(FEATURE FILMS CENTRAL JURY)

4

बी.एस. लिंगादेवारू (B.S. Lingadevaru)

बी.एस. लिंगादेवारू टेलीविजन के एक जाने माने अभिनेता, निर्माता और निर्देशक हैं। कर्नाटक के एक कृषि व्यापार से जुड़े परिवार से ताल्लुक रखने वाले लिंगादेवारू एक फार्मासिस्ट भी हैं. मौनी उनकी पहली फिल्म थी, आगे चलकर इन्होंने काड़ा बेलादिंगालु और नानु अवनाल्ला अवालु जैसी फिल्में बनाई। इनकी तीनों फिल्मों को भारतीय पैनोरमा के लिए चुना गया और राजकीय और राष्ट्रीय अवार्ड भी हासिल किए। नम्मूरा चित्रोत्सव के जरिए पुरस्कार विजेता फिल्मों को जन–जन तक पहुंचाने में इनका अहम योगदान रहा है।

B.S. Lingadevaru is a well-known actor, producer and director of the small screen. He is also a pharmacist, hailing from an agricultural-trading family in Karnataka. 'Mouni' was his first film, followed by 'Kaada Beladingalu' and 'Naanu Avanalla Avalu'. All the three films were selected for the Indian Panorama and won State and National Awards. He is instrumental in taking award-winning films to viewers across Karnataka through 'Nammoora Chitrotsava'.

5

इमो सिंह (Imo Singh)

इमो सिंह को एक फिल्म निर्देशक, निर्माता, और पटकथा लेखक के तौर पर करीब 25 साल का अनुभव हैं। इनके परिवार को मणिपुरी नृत्य में महारत है जिसकी वजह से कला में इनकी खास दिलचस्पी है। बड़े परदे पर काम करने के सपने को लेकर इन्होंने पुणे में एफटीआईआई में प्रवेश लिया। धीरे धीरे इन्होंने निर्देशन, निर्माण, स्क्रिप्ट और अध्ययन में अच्छा अनुभव हासिल किया। इनकी लघु फिल्म पुनरावृत्ति ने 1992 में राष्ट्रीय फिल्म सम्मान हासिल किया। वह एफटीआईआई में संचालन समिति के सदस्य हैं, फिल्म निर्माण सिखाते हैं और 2017 के राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार के निर्णायक मंडल के सदस्य थे।

Imo Singh is a film director, producer and scriptwriter with about 25 years' experience. Hailing from a family with a lineage in Manipuri dances, he had a natural affinity for the arts. Dreaming of working for the big screen, he joined Film and Television Institute of India (FTII) in Pune. He subsequently earned a rich experience in direction, production, scripting and teaching. His short film 'Punaravritti' won a National Film Award in 1992. He is a governing council member at FTII, teaches filmmaking and has been a jury at the National Film Awards 2017.

फ़ीचर फ़िल्म केन्द्रीय ज्यूरी
(FEATURE FILMS CENTRAL JURY)

के वासु (K. Vasu)

के वासु एक फिल्म निर्देशक, लेखक और निर्माता हैं जिन्हें क्षेत्रीय सिनेमा का 42 साल का अनुभव है। इनके हिस्से तीन भाषाओं में 40 फिल्में और चार तेलुगू सीरियल हैं। वह 63वें राष्ट्रीय फिल्म सम्मान के निर्णायक मंडल के सदस्य रह चुके हैं। इन्होंने विभिन्न कलेवर की फिल्मों का निर्माण किया है जैसे कॉमेडी, एक्शन, भक्ति फिल्में जिसने अपार सफलता हासिल की। 18 सुपरहिट फिल्मों के साथ इन्हें तेलुगू इंडस्ट्री में कुछ काम सबसे पहले करना का श्रेय भी जाता है जैसे मेगास्टार चिरंजीवी को सबसे पहले स्क्रीन पर लाना और उन्हें पहली 100 दिन पूरे करने वाली फिल्म देना। साथ ही एसपी बालासुब्रमण्यम को चरित्र अभिनेता लेकर आना। इसके अलावा इन्होंने पहली तेलुगू फिल्म बनाई जिसे अमेरिका में बनाया गया था।

K. Vasu is a film director, writer and producer with 42 years of experience in regional cinema. He has over 40 films in three languages and four Telugu serials to his credit. He was a jury member for the 63rd National Film Awards. He directed a wide variety of movies, such as comedy, action, and devotional films, and achieved success in all. With 18 super hit films, he also has to his credit many firsts in the Telugu Industry — like introducing megastar Chiranjeevi and giving him his first 100 days film; introducing S.P. Balasubramanyam as a character artist, and directing the first Telugu film that was shot in the US.

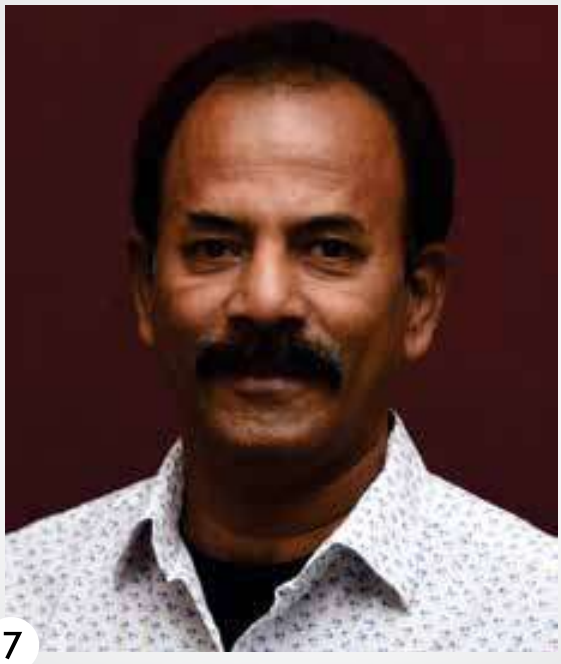

मेजर रवि (Major Ravi)

मेजर रवि (एके रवींद्रन) एक भारतीय फिल्मकार और मलयालम सिनेमा के कलाकार हैं। इन्होंने भारतीय सेना में बतौर मेजर अपनी सेवाएं दी हैं। इन्होंने कीर्ति चक्र (2006) का निर्देशक एवं लेखन किया जिसने सर्वश्रेष्ठ पटकथा के लिए केरल राज्य फिल्म सम्मान हासिल किया। इनकी अगली फिल्म मिशन 90 डेज (2007), पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी के हत्यारों को पकडने से जुड़े ऑपरेशन में उनके खुद के अनुभव पर आधारित है। फिर इन्होंने कुरुक्षेत्र (2008), कंधार (2010), कर्मा योद्धा (2012), पिकेट 43 (2015) और 1971 – बियोन्ड बॉर्डर्स (2017) का निर्देशन किया।

Major Ravi (aka AK Raveendran) is an Indian filmmaker and actor in Malayalam cinema. He also served as a Major in the Indian Army. He wrote and directed 'Keerthi Chakra' (2006) which won him a Kerala State Film Award for Best Screenplay. His next 'Mission 90 Days' (2007) was based on his experiences from an operation to catch the killers of former Prime Minister Rajiv Gandhi. He then directed: 'Kurukshetra' (2008), 'Kandahar' (2010), 'Karma Yodha' (2012), 'Picket 43' (2015) and '1971: Beyond Borders' (2017).

फ़ीचर फ़िल्म केन्द्रीय ज्यूरी
(FEATURE FILMS CENTRAL JURY)

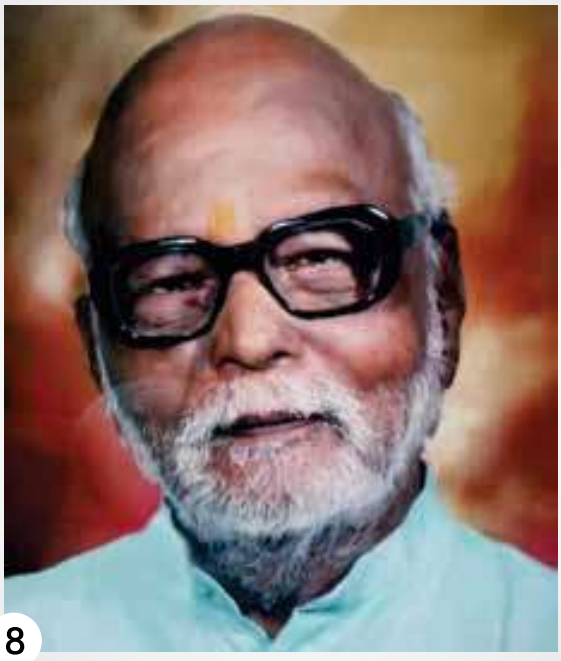

8

राज दत्त (Raj Dutt)

राज दत्त मराठी सिनेमा के स्वर्णिम काल के अहम फिल्मकारों में से एक और राष्ट्रीय फिल्म अवार्ड विजेता है। इन्होंने 1960 से 1980 के दौरान कई सफल फिल्मों का निर्देशन किया जिसमें घरची रानी (1968), अपराध (1969), देवकीनंदन गोपाला (1977), पुणेचा पॉउल (1985) शामिल हैं। ये सभी फिल्में महाराष्ट्र स्टेट अवार्ड में सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार हासिल कर चुकी हैं। इसके अलावा भोलीभाबड़ी (1972) और अष्टविनायक (1978) भी उनकी निर्देशित फिल्में हैं। इन्होंने कुछ फिल्मों में अभिनय भी किया जिसम छोटे नवाब (1961–हिंदी), दुसार्या जगतली (2012 मराठी) और वाक्या (2017) शामिल हैं।

Raj Dutt is one of the prime filmmakers during the 'Golden Era' of Marathi cinema and a National Film Awards winner. He directed several successful movies through the 1960s and 1980s viz. 'Gharchi Raani' (1968), 'Apraadh' (1969), 'Devkinandan Gopala' (1977), 'Pudhcha Paul' (1985) — all winners of the Maharashtra State Award Best Film — and also 'Bholibhabdi' (1972) and 'Ashtavinayak' (1978). He also starred in few films including 'Chhote Nawab' (1961; Hindi), 'Dusarya Jagatli' (2012; Marathi) and 'Wakya' (2017).

9

डॉ. सब्यसाची महापात्रा (Dr. Sabyasachi Mohapatra)

डॉ. सब्यसाची महापात्रा उड़ीसा के जाने माने फिल्मकारों में से एक हैं। वह जिंदगी और मानव मूल्यों के साफ चित्रण के लिए जाने जाते हैं। इनके हाल ही काम में साला बुढ़ा रा बदला निर्माणाधीन है. इनकी पहले की फिल्मों में पहाड़ा रा लुहा (2015 – राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता) ने एलआईएफएफआई 2016 में सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म और सातवें जागरण फिल्म फेस्टिवल में स्पेशल ज्यूरी अवार्ड हासिल किया था। इनकी फिल्म साला बुढ़ा (2013) और आदिम विचार (2014– राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता) इंडियन पैनोरामा के लिए चुनी गई। ये राष्ट्रीय फिल्म अवार्ड, भारतीय ऑस्कर चयन समिति और इंडियन पैनोरामा के निर्णायक मंडल के सदस्य रह चुके हैं।

Dr. Sabyasachi Mohapatra is one of the acclaimed filmmakers from Odisha. He is known for his impeccable portrayal of human values. His current work 'Sala Budha Ra Badla' is under production. His previous film 'Pahada Ra Luha' (2015-National Award Winner) won the Best Feature Film Award at LIFFI 2016 and a Special Jury Award at 7th Jagaran Film Festival 2016. His films, 'Sala Budha' (2013) and 'Aadim Vichaar' (2014-National Award Winner) were selected for Indian Panorama. He has been a Jury Member for National Film Award, Oscar Selection Committee of India and Indian Panorama.

फ़ीचर फ़िल्म केन्द्रीय ज्यूरी
(FEATURE FILMS CENTRAL JURY)

10

विजयकृष्णन (Vijayakrishnan)

विजयकृष्णन ने अपनी किताब चलचित्र समीक्षा के लए 1982 में राष्ट्रीय पुरस्कार जीता। इन्होंने 1986 में फिल्म 'निधियूड़े कढ़ा' से मलयालम सिनेमा में शुरूआत की थी। इन्हे अपनी पुस्तकों (कल्लाथिल कोथिया शिल्पांगल सहित) के लिए कई बार केरल राज्य सम्मान से नवाजा गया। 1995 में मयूर नृतम फिल्म बनाने के बाद विजयकृष्णन ने टीवी इंडस्ट्री में कदम रखा और 15 टीवी सीरिज, 19 टेलीफिल्म और 9 वृत्तचित्र बनाए। विजयकृष्णन ने फिल्म इंडस्ट्री में फिर से कदम रखा फिल्म दालामरमरंगल (2009) और उम्मा (2011) के निर्देशन के साथ। इलाकल पच्चा पोक्कल मांजा (हरी पत्तियां, पीले फूल) इनकी छठीं फीचर फिल्म रही। इसी श्रेणी में इन्हें केरल राज्य सम्मान भी लगातार तीन साल तक मिलता रहा।

Vijayakrishnan won National Award for his book 'Chalachitra Sameeksha' in 1982. He won the Kerala State Awards for many of his books including 'Kaalathil Kothiya Shilpangal'. He made his debut in Malayalam Cinema with 'Nidhiyude Kadha' in 1986. After making the movie 'Mayoora Nritam' in 1995, Vijayakrishnan entered the television industry and has made 15 TV series, 19 tele-films and nine documentaries. He resumed his career in film industry by directing 'Dalamarmarangal' in 2009 and 'Umma' in 2011. 'Ilakal Pacha Pookkal Manja' (Green Leaves Yellow Flowers) is his sixth feature film.

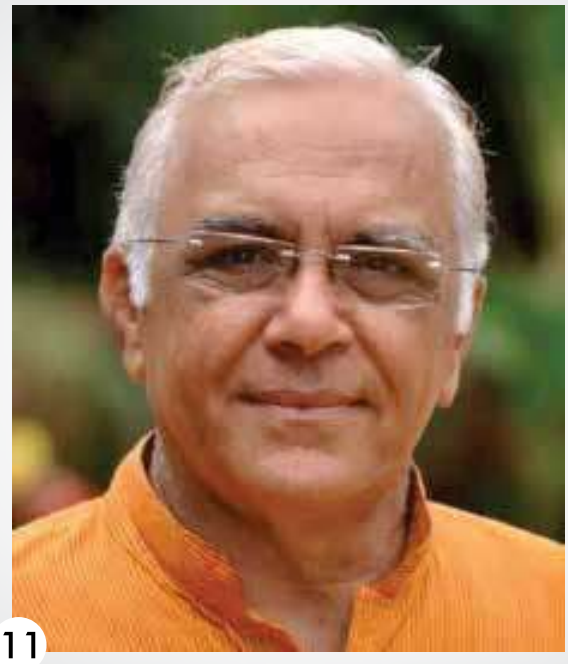
11

विनोद गणात्रा (Vinod Ganatra)

विनोद गणात्रा ने 2009 में शिकागो अंतरराष्ट्रीय बाल फिल्म समारोह में हारुण–अरुण के लिए लिव उलमन शांति पुरस्कार हासिल किया। वह 1982 से फिल्म और टेलीविजन में सक्रिय रहे हैं और इन्होंने 400 से ज्यादा वृत्तचित्र और न्यूजरील का संपादन एवं निर्देशन किया है। इन्होंने बच्चों एवं युवाओं के लिए हिन्दी, मराठी और गुजराती में 25 टीवी कार्यक्रम बनाए हैं। इन्होंने भारतीय बाल चित्र समिति के लिए तीन फिल्में बनाई हैं जिसने कई राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय सम्मान हासिल किए हैं। दुनिया भर की यात्रा कर चुके विनोद 75 अंतरराष्ट्रीय फिल्म महोत्सवों के निर्णायक मंडल के सदस्य रह चुके हैं।

Vinod Ganatra received the Liv Ullmann Peace Prize at the Chicago International Children's Film festival in 2009 for his film 'Harun-Arun'. He has been active in film and television from 1982 and has edited and directed about 400 documentaries and newsreels. He has produced 25 TV programmes in Hindi, Marathi and Gujarati for Children & Youth. He has also made three films for Children's Film Society India (CFSI), which have won a number of national and international awards. Widely travelled, he has also served as Jury at 75 International Film Festivals world over.

गैर–फ़ीचर फ़िल्म ज्यूरी
(NON-FEATURE FILMS JURY)

अध्यक्ष (Chairperson)

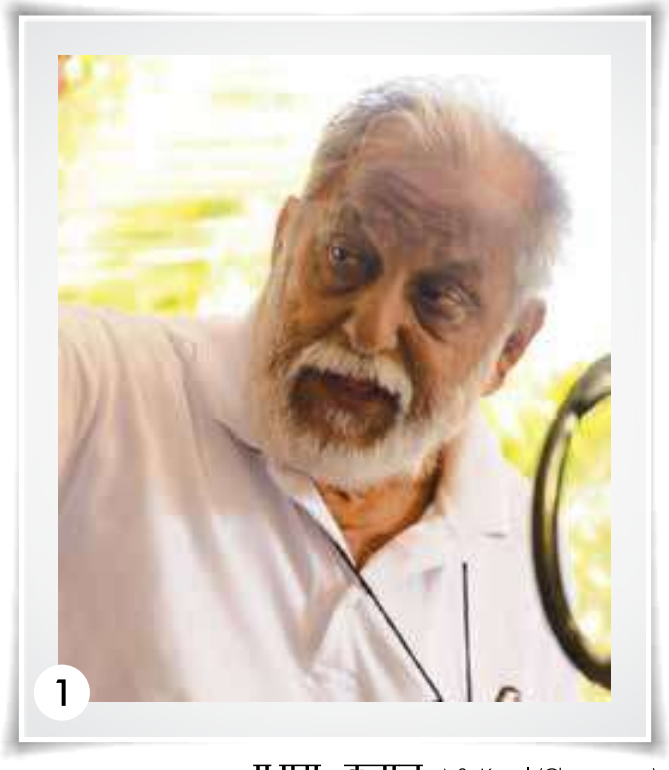

ए.एस. कनाल A.S. Kanal (Chairperson)

ए.एस. कनाल एफटीआईआई, पुणे से स्नातक हैं और बतौर सिनेमेटोग्राफर कई विज्ञापन, फिल्म, वृत्तचित्र और टीवी प्रोग्राम में काम कर चुके हैं, बतौर सिनेमेटोग्राफर इनकी फिल्मों में हरुण–अरुण (2009), दि हैंगमैन (2005), और वी. बाबासाहेब लाइफ इन फुल ओपन नाम से एक वृत्तचित्र शामिल है। इन्होंने एफटीआई आई, पुणें में सिनेमेटोग्राफर के शिक्षक का काम भी किया है। वर्तमान में वे स्वतंत्र निर्माता और प्रशिक्षक की भूमिका निभा रहे हैं।

A.S. Kanal is a graduate from FTII, Pune and has worked as a cinematographer for many ads, films, documentaries and TV programmes. Some of his films as a cinematographer include 'Harun-Arun' (2009), 'The Hangman' (2005) and a documentary titled 'V. Babasaheb Life in Full Open (2013). He has also worked as a teacher of cinematography at FTII, Pune. Currently, he is working as an independent producer and trainer.

गैर–फ़ीचर फ़िल्म ज्यूरी
(NON-FEATURE FILMS JURY)

2

अतुल गंगवार (Atul Gangawar)

अतुल गंगवार फिल्म लेखक संघ और भारतीय फिल्म और टेलीविजन निर्देशक संघ (मुंबई) के सदस्य हैं। वो टेलीविजन उद्योग में पिछले दो दशकों से बतौर प्रोग्रामर अपनी सेवाएं दे रहे हैं। वह कई विषयों पर वृत्तचित्र का निर्माण और संपादन कर चुके हैं। इन्होंने इन्फोटेन्मेंट कार्यक्रम जैसे अदाबी कॉकटेल और उर्दू बाजार का निर्माण भी किया। इन्होंने बतौर एंकर–प्रस्तुतकर्ता, चुनाव पर आधारित व्यंग्य कार्यक्रम में भी काम किया। अतुल जलेबी कल्चर फिल्म के लिए कहानी लेखन और निर्देशन भी कर रहे हैं, वहीं इनकी कहानी को फिल्म मुआवजा के लिए रुपांतरित किया गया। वह राष्ट्रीय अवार्ड विजेता निर्देशक उज्जवल चटर्जी के लिए हू किल्ड दीनदयाल उपाध्याय के पटकथा लेखन पर भी काम कर रहे हैं।

Atul Gangawar is a member of Film Writers Association (Mumbai) and Indian Film and Television Directors Association (Mumbai). He has been working with television industry as a programmer for over two decades. He has produced, edited documentaries on various subjects. He has produced infotainment programmes like 'Adabi Cocktail' and 'Urdu Bazar'. He also worked as an anchor/presenter in many election based satirical programs. Atul is also directing and writing the story for the film 'Jalebi Culture', while his other story has been adopted for the film 'Muawaza'. He is also working on the screenplay of 'Who Killed Deendayal Upadhyay' for National Award winning Director Mr. Ujjwal Chatterjee.

3

चेतन माथुर (Chetan Mathur)

चेतन माथुर एक फिल्मकार, लेखक, निर्देशक, पत्रकार और शिक्षाविद हैं। इन्होंने 500 से भी ज्यादा वृत्तचित्र, यात्रा वृत्तांत, विज्ञापन फिल्म, प्रोमो और लघु फिल्मों का लेखन किया है। इनकी लघु फिल्म दास्तान–ए–आलम आरा इंडियन टॉकी के गोल्डन जुबली सेलिब्रेशन के शुरुआत और अंत में दिखाई गई थी। यह कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय फिल्म अवार्ड्स और फेस्टिवल के निर्णायक मंडल में भी रह चुके हैं। इन्होंने कई संगीत निर्माता कंपनियों के लिए 75 से अधिक भक्ति संगीत एल्बम और प्रोमोज निर्देशित किये हैं। समाज के लिए अपने दायित्व का निर्वाह करते हुए इन्होंने विभिन्न मीडिया स्कूल और विश्वविद्यालय के लिए पाठ्यक्रम भी तैयार किया है।

Chetan Mathur is a filmmaker, writer, director, journalist & educationist. He has written and directed over 500 documentaries, travelogues, advertisement films, promos & short films. He has directed over 2500 music videos of prominent singers, numerous TV serials and programs for various channels. His short film 'Dastaan-E-Alam Ara' was the opening and closing film of Golden Jubilee celebration of Indian Talkie. He has also been in the jury of various National & International Film Awards and Festivals. He has directed over 75 devotional music albums and promos for various music companies. As a gesture of giving back to society, he has devised syllabus for various media schools as well as universities.

गैर–फ़ीचर फ़िल्म ज्यूरी
(NON-FEATURE FILMS JURY)

ध्वनि देसाई (Dhvani Desai)

ध्वनि देसाई एक अंतर्राष्ट्रीय और भारतीय पुरस्कार विजेता एनिमेशन फिल्मकार, क्यूरेटर और कवयित्री हैं। वह पिछले 27 सालों से एनिमेशन के क्षेत्र में हैं और इन्होंने अपने खुद के एनिमेशन स्टूडियो मेटामॉरफोसिस की स्थापना भी की है। इन्हें बतौर निर्णायक मंडल सदस्य अंतर्राष्ट्रीय और भारतीय फिल्म फेस्टिवल में बुलाया जाता रहा है जिसमें पांच सालों तक न्यू यॉर्क फिल्म फेस्टिवल में ग्रांड ज्यूरी होना भी शामिल है। वह पिछले कुछ सालों से मुंबई फिल्म फेस्टिवल (एमआइएफएफ) के लिए विभिन्न देशों के एनिमेशन फिल्म पैकेज के क्यूरेटर की भूमिका निभा रही है।

Dhvani Desai is an international and Indian-award winning animation filmmaker, curator and poet. She has been in the animation field for over 27 years and has established her animation studio 'Metamorphosis'. She has been a jury for many international and Indian film festivals including Grand Jury in New York film festivals. She has also been a curator of animation film packages from various countries for the Mumbai International Film Festival (MIFF). She is on the Advisory board of Children's Film Society India (CFSI), and her work has been mentioned in World encyclopaedias and research journals of Animation.

राजेन्द्र के. महापात्रा (Rajendra K. Mahapatra)

राजेन्द्र के. महापात्रा एक फिल्म एडिटर और निर्देशक हैं, 21 साल के अपने फिल्मी सफर में इन्होंने 500 से अधिक कॉरपोरेट, लघु और फीचर फिल्म, वृत्तचित्र और 2000 से ज्यादा टीवी सीरियल्स के एपिसोड का संपादन (एडिट) किया। इन्हें जय जगन्नाथ के लिए सर्वश्रेष्ठ एडिटिंग का उडीसा स्टेट अवार्ड प्राप्त हुआ था। इसे 15 भाषाओं में रिलीज किया गया था। इसके अलावा इन्हें अन्य सरहाना भी मिली। वे 2015 के अंतर्राष्ट्रीय बाल फिल्म महोत्सव, बंगलुरू और 2019 के अहमदाबाद बाल फिल्म महोत्सव के निर्णायक मंडल में भी रह चुके हैं। इन्होंने अपने काम की शुरूआत बाल थियेटर अभिनेता से की और 1978 में पहली बार फिल्म में अभिनय किया।

Rajendra K. Mahapatra is a film editor and director. With a career spanning 21 years, he has edited more than 500 corporate, short and feature films, documentaries, and 2000 episode of TV Serials. He won the Odisha State Award for Best Editing for 'Jai Jagannath', which was released in 15 languages. He has been a jury for the International Children Film Festival, Bangalore in 2015 and also for the International Children Film Festival, Ahmedabad in 2019. Earlier, he started as a child theatre actor and acted first time in a feature film in 1978.

गैर–फ़ीचर फ़िल्म ज्यूरी
(NON-FEATURE FILMS JURY)

6

श्रीवत्स बी.आर
(Srivatsa B. R.)

श्रीवत्स बी.आर अपने शानदार काम के लिए जाने जाते हैं। सिनेमा में दिलचस्पी रखने वाले एक बेहतरीन फोटोग्राफर जिन्होंने भारत और दुनिया की कई कॉरपोरेट हस्तियों को कैमरे में कैद किया है। इन्होंने पर्यावरण शिक्षा केंद्र, पर्यावरण मंत्रालय, भारत सरकार, स्वास्थ्य विभाग, कर्नाटक सरकार के लिए वृत्तचित्र निर्माण किया इन्हें कर्नाटक सरकार से आर्यभटट् अंतरराष्ट्रीय सम्मान, केम्पेगोवड़ा प्रशस्ति और यही नहीं, कला एवं फिल्म इंडस्ट्री में अपने काम के लिए पसंद किये जाने वाले श्रीवत्स ने कई बड़े सितारों को अपने कैमरे में कैद किया है।

Srivatsa B. R. wears many illustrious hats at once. An ace photographer, with a keen interest in cinema, he has profiled most corporate leaders of India and the world. He has produced documentaries for Center for Environment Education (CEE), Ministry of Environment, GOI, and Department of Health, Govt of Karnataka. He has received many laurels such as the Aryabhatta International Award, Kempegowda Prashati and Accredited Media Photographer award from the Karnataka state government. Also acclaimed as a portrait photographer in the arts scene and film industry, many leading celluloid stars have been captured by his lens.

7

वंदना कोहली (Vandana Kohli)

वंदना कोहली एक फिल्मकार, संगीतकार और लेखक हैं जिन्हें इंसानी दिमाग और रवैये में काफी रुचि है। वंदना ने अंतरराष्ट्रीय सम्मान हासिल कर चुके वृत्तचित्र द सबटेक्स्ट ऑफ एंगर का निर्माण एवं निर्देशन किया है। भारतीय राष्ट्रीय गान पर उनके निर्माण को सोशल मीडिया पर 60 लाख से ज्यादा बार देखा गया। यह 2015 के राष्ट्रीय पुरस्कार में गैर फीचर फिल्म के निर्णायक मंडल की सदस्य रहीं। वंदना ने 2012–18 तक के बीच द वीक के लिए मस्तिष्क–दिमाग–सोच पर आधारित एक साप्ताहिक कॉलम भी लिखा। इन्होंने पियानो पर भारतीय मेलैडी के दो वाद्य संगीत एलबम भी जारी किए हैं।

Vandana Kohli is a filmmaker, musician and writer with an interest in the human mind and behavior. She has produced and directed the international award-winning documentary 'The Subtext Of Anger'. Her production of the Indian National Anthem has over six million views on Social Media. She has served on the Jury for non-feature films for the National Awards, 2015. Vandana has written weekly columns for 'The Week' on mind-brain-psyche, during 2012-2018. She has released two instrumental albums of Indian Melodies on the Piano.

सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ लेखन ज्यूरी
BEST WRITING ON CINEMA JURY

अध्यक्ष (Chairperson)

उत्पल बोरपुजारी Utpal Borpujari (Chairperson)

उत्पल बोरपुजारी एक राष्ट्रीय फिल्म अवार्ड विजेता फिल्म आलोचक और फिल्मकार हैं। बोरपुजारी ने अपनी पहली फीचर इशू (2017) के लिए ही राष्ट्रीय पुरस्कार हासिल किया। इन्हें 2002 में सर्वश्रेष्ठ फिल्म आलोचक के लिए स्वर्ण कमल भी प्राप्त हुआ। इनकी फिल्म कई अंतर्राष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल के लिए बुलाई जा चुकी है। इन्होंने भारतीय तकनीकी संस्थान (आईआईटी) रुड़की से अप्लाइड जियोलॉजी में एम.टेक की डिग्री हासिल की है।

Utpal Borpujari is a National Film Award-winning film critic and filmmaker. Borpujari won the National Award for his debut feature film 'Ishu' (2017). He has also won the Swarna Kamal for Best Film Critic in 2002. His films have been invited to a number of international film festivals. He holds an M.Tech degree in Applied Geology from the Indian Institute of Technology (IIT), Roorkee.

सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ लेखन ज्यूरी
BEST WRITING ON CINEMA JURY

मोहन रमन (Mohan Raman)

मोहन रमन, राजनीतिज्ञ वी.पी. रमन के पुत्र हैं, इन्होंने मनोरंजन उद्योग में आने से पहले खुद की ट्रेवल एजेंसी और कम्यूनिकेशन सेंटर शुरु किया था। इनके फिल्मी सफर की शुरुआत 1991 में तमिल फिल्म इदयम से हुई आगे चलकर इन्होंने 'महानदी' (1994), 'वन्स मोर' (1997) 'कुसेलान' (2008), '24' (2016), 'कढ़ाली' (2017) और 'थनिमाई' (2019) जैसी फिल्मों में यादगार भूमिका निभाई। टीवी के चर्चित किरदार के तौर पर इन्होने 'चिन्ना पाप्पा पेरिया पाप्पा' (2001–2005) और 'अननधम' (2005–2009) 'श्रंखला' के 6000 से भी ज्यादा टीवी एपिसोड किए।

Mohan Raman, son of politician V.P. Raman, started his own travel agency and communication centre before entering the entertainment industry. He made his debut in the 1991 Tamil film 'Idayam', followed by noticeable roles in movies like 'Mahanadhi' (1994), 'Once More' (1997), 'Kuselan' (2008), '24' (2016), 'Kaadhali' (2017), and 'Thanimai' (2019). As popular character TV actor, he has done more than 6000 television episodes for the series 'Chinna Pappa Periya Pappa' (2001-2005) and 'Anandham' (2005-2009).

यतीन्द्र मिश्रा (Yatindra Mishra)

यतीन्द्र मिश्रा एक लेखक, संपादक, संगीत और सिनेमा के विद्वान हैं। वे अयोध्या के राज परिवार से ताल्लुक रखते हैं। इनकी पुस्तक लताः सुर–गाथा (2016) ने को मिला सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ लेखन के लिए राष्ट्रीय फिल्म अवार्ड भी शामिल है। इन्होंने 2013 में हमसफर नाम से भारतीय सिनेमा के संगीत के सफर के बारे में भी किताब लिखी है। इनके चार कविता संग्रह, 'यदा–कदा' (1997), 'अयोध्या तथा अन्य कविताएं' (1999), 'ड्यौढ़ी पर आलाप' (2005), और 'विभास' (2013) भी प्रकाशित हो चुके हैं, इन्होंने 'गिरिजा' (2001), 'देवप्रिया' (2007) और 'सुर की बारादरी' (2009) नाम की किताबें भी लिख हैं जो क्रमश ठुमरी गायिका गिरिजा देवी, नृत्यांगना सोनल मानसिंह और शहनाई वादक उस्ताद बिस्मिल्लाह ख़ान के जीवन और काम को बारे में बताती है।

Yatindra Mishra is a poet, editor, music and cinema scholar. He hails from the lineage of the Ayodhya royal family. His book 'Lata: Sur-Gatha' (2016), received numerous awards including the National Film Award for Best Writing on Cinema. He has also written a book about Hindi cinema's musical journey titled 'Humsafar' in 2013. He has four collections of Hindi poetry to his credit. He has also written 'Girija' (2001), 'Devpriya' (2007) and 'Sur Ki Baradari' (2009) about the life and work of thumri singer Girija Devi, danseuse Sonal Mansingh and shehnai maestro Bismillah Khan respectively.

फ़ीचर फ़िल्म ज्यूरी | पूर्व पैनल
FEATURE FILMS JURY | EAST PANEL

विनोद गणात्रा (अध्यक्ष) Vinod Ganatra (Chairperson)

विनोद गणात्रा ने 2009 में शिकागो अंतरराष्ट्रीय बाल फिल्म समारोह में हारुण–अरुण के लिए लिव उलमन शांति पुरस्कार हासिल किया। वह 1982 से फिल्म और टेलीविजन में सक्रिय रहे हैं और इन्होंने 400 से ज्यादा वृत्तचित्र और न्यूजरील का संपादन एवं निर्देशन किया है। इन्होंने बच्चों एवं युवाओं के लिए हिन्दी, मराठी और गुजराती में 25 टीवी कार्यक्रम बनाए हैं। इन्होंने भारतीय बाल चित्र समिति के लिए तीन फिल्में बनाई हैं जिसने कई राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय सम्मान हासिल किए हैं।

Vinod Ganatra received the Liv Ullmann Peace Prize at the Chicago International Children's Film festival in 2009 for his film 'Harun-Arun'. He has been active in film and television from 1982 and has edited and directed about 400 documentaries and newsreels. He has produced 25 TV programmes in Hindi, Marathi and Gujarati for Children & Youth. He has also made three films for Children's Film Society India (CFSI), which have won a number of national and international awards.

आकाशादित्य लामा (सदस्य) Akashaditya Lama (Member)

आकाशादित्य लामा एक फिल्म निर्देशक, पटकथा और संवाद लेखक हैं। उनके फिल्म और टेलीविजन के सफर की शुरूआत 1997 में विज्ञापन फिल्म और फीचर फिल्म जैसे गदर एक प्रेमकथा के सहायक के तौर पर हुई। इनके निर्देशन की शुरूआत 'सिगरेट की तरह' (2012) से हुई। इन्होंने पहली आधिकारिक नागामी भाषा की फिल्म 'नानी तेरी मोरनी' बनाई जिसे पूरी तरह से नागालैंड के पहाड़ों मे फिल्माया गया। वो एक नाटक कलाकार और नाटककार रह चुके हैं ।

Akashaditya Lama is a film director, screenplay and dialogue writer. He began his career in 1997 by assisting in ad films and feature films like 'Gadar-Ek Prem Katha'. He made his directorial debut with 'Cigarette Ki Tarah' (2012). His film 'Nani Teri Morni' was the first official Nagamese language film and was shot entirely in the hills of Nagaland. He has been a theatre artist and playwright; and has worked in various TV shows also.

मोनालिसा मुखर्जी (सदस्य) Monalisa Mukherji (Member)

मोनालिसा मुखर्जी एक कवि, प्रोडक्शन डिजाइनर, और पूर्व कास्टिंग निर्देशक हैं। मोना ने अपने करियर की शुरूआत इक्विनॉक्स फिल्म्स में निर्देशन इंटर्न के तौर पर की जिसके बाद वह इक्विनॉक्स की पहली महिला निर्माता बनी। 2007 में मोना ने अपने पति बौद्धायन के साथ लिटिल लैंब फिल्म्स की शुरूआत की । मोनालिसा ने दो फीचर फिल्म का निर्माण किया है – तीनकाहो (बांग्ला) और द वायलन प्लेयर (हिन्दी) । इन्होंने हाल ही में अपनी पहली लुघ फिल्म किसके लिए निर्देशित की है।

Monalisa Mukherji is a poet, a production designer, and former casting director. She started her career as a direction intern at Equinox Films and went on to become Equinox's first female producer. In 2007, Mona with her husband Bauddhayan formed Little Lamb Films. She has produced two feature films called 'Teenkahon' (Bangla) and 'The Violin Player' (Hindi), both of which have travelled globally to various film festivals. She has recently directed her first short film called 'Kiske Liye'.

नामाश्री (सदस्य) Namasrri (Member)

नामाश्री एक कन्नड़ अभिनेत्री एवं निर्माता हैं। वह न्यू लुक सिनेमा की संस्थापक हैं । यह बतौर कलाकार जनपडा, येकलव्या, कामिनी, सधाकरू , बासु अधे हाले कथे, गंडाना माने, शुक्र, बिंधास, महाकाली, पारु वाइफ ऑफ देवदास, सांथेयल्ली निन्था कबीरा, और दो तमिल फिल्म कल्ला परुणुधू और चुड़ा चुड़ा में दिखाई दी हैं। इन्होंने विज्ञापन, टेलीफिल्म, भक्ति एल्बम, स्टेज शो और ड्रामा परफोर्मेंस भी दिया है। इन्होंने अपने बैनर तले कन्नड़ भक्ति एल्बम अम्बिके मनरंजीते का निर्माण किया है।

Namasrri is a Kannada actress, producer and founder of New Luk Cinema. She has featured as an artist in films like 'Janapada', 'Yekalavya', 'Kamini', 'Sadhakaru', 'Basu Adhe Haley Kathe', 'Gandana Mane', 'Shukra', 'Bindhas', 'Mahakali', 'Paru W/O Devdas', 'Santheyalli Nintha Kabira', etc. and also two Tamil films 'Kalla Parundhu' and 'Chuda Chuda'. She has also done advertisement, telefilms, devotional album, stage shows, and drama performances. She produced 'Ambike Manaranjithe' a Kannada devotional album under her own banner.

सूरज दुवाराह (सदस्य) Suraj Duwarah (Member)

सूरज दुवाराह गुवाहाटी, असम में रहने वाले सिनेमाटोग्राफर हैं। गुवाहाटी यूनिवर्सिटी से स्नातक करने के बाद इन्होंने रीजनल गवर्नमेंट फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, गुवाहाटी से सिनेमाटोग्राफी का कोर्स भी किया. इसके बाद से ही वह पेशेवर कैमरामैन के तौर पर फिल्म एवं टेलीविजन में सक्रिय हैं। 2014 में इन्होंने अपनी पहली फीचर फिल्म ओरोंग निर्देशित की जिसे 62वें राष्ट्रीय फिल्म समारोह, 2015 में सिल्वर लोटस मिला।

Suraj Duwarah is a cinematographer based in Guwahati, Assam. After his graduation from Gauhati University, he did a course in cinematography from Regional Govt. Film and Television Institute, Guwahati. After this, he has been working as a professional cameraman in both film as well as television. In 2014, he has directed his first feature length film 'Orong', which got the Silver Lotus Awad at the 62nd National Film Awards, 2015.

फ़ीचर फ़िल्म ज्यूरी | उत्तर पैनल
FEATURE FILMS JURY | NORTH PANEL

मेजर रवि (अध्यक्ष) Major Ravi (Chairperson)

मेजर रवि मलयालम सिनेमा के एक फिल्मकार और कलाकार हैं। इन्होंने भारतीय सेना में बतौर मेजर अपनी सेवाएं दी हैं। इन्होंने कीर्ति चक्र (2006) का निर्देशक एवं लेखन किया जिसने सर्वश्रेष्ठ पटकथा के लिए केरल राज्य फिल्म सम्मान हासिल किया। इनकी अगली फिल्म मिशन 90 डेज (2007), पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी के हत्यारों को पकडने से जुड़े ऑपरेशन पर आधारित है। फिर इन्होंने कुरुक्षेत्र (2008), कंधार (2010), कर्मा योद्धा (2012), पिकेट 43 (2015) और 1971 – बियोन्ड बॉर्डर्स (2017) का निर्देशन किया।

Major Ravi is a filmmaker and actor in Malayalam cinema. He also served as a Major in the Indian Army. He wrote and directed 'Keerthi Chakra' (2006) which won him a Kerala State Film Award for Best Screenplay. His next 'Mission 90 Days' (2007) was based on an operation to catch the killers of former Prime Minister Rajiv Gandhi. He then directed: 'Kurukshetra' (2008), 'Kandahar' (2010), 'Karma Yodha' (2012), 'Picket 43' (2015) and '1971: Beyond Borders' (2017).

अशोक शरण (सदस्य) Ashok Sharan (Member)

अशोक शरण, केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड के सलाहकार दल के सदस्य हैं। 1978 में बतौर ड्रामा कलाकार शुरूआत करने के बाद अशोक ने 1981 में 'द डिग्री' नाम की अपनी पहली लघु फिल्म का निर्माण किया, साथ ही इसमें अभिनय भी किया। इन्होंने भारतीय आदिवासी समुदाय पर 150 से ज्यादा वृत्तचित्र का निर्माण एवं निर्देशन किया, साथ ही बिरसा मुंडा पर फीचर फिल्म भी बनाई। 2006, 2016 और 2019 में अशोक, राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार के निर्णायक मंडल में भी रहे।

Ashok Sharan is an advisory panel member of the Central Board of Film Certification (CBFC). Starting out as a drama artist in 1978, he produced and acted in his first short film 'The Degree' in 1981. He has produced and directed over 150 documentaries on Indian tribal communities. He has also made a feature film on Birsa Munda. He served as a jury of the National Film Awards in 2006, 2016 and 2019.

देवेन्द्र खंडेलवाल (सदस्य) Devendra Khandelwal (Member)

देवेन्द्र खंडेलवाल देवेन्द्र खंडेलवाल जाने माने निर्माता–निर्देशक हैं. इन्होंने करीब 400 लघु फिल्म और इतनी ही संख्या में विज्ञापन फिल्म का निर्माण किया है. ये अकेल फिल्मकार हैं जिन्होंने महात्मा गांधी पर 18 से अधिक फिल्में बनाई हैं. ये 5 भाषाओं में बनी 18 फिल्मों में मुख्य अभिनेता के तौर पर काम कर चुके हैं. इनके काम करने की क्षमता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि इन्होंने चर्चित कॉमेडी सीरियल, ऐतिहासिक और धार्मिक फिल्म, शिक्षाप्रद कार्यक्रम और म्यूजिकल काउंटडाउन शो, खेल पर आधारित श्रंखला, सांस्कृतिक और सूचनाप्रद वृत्तचित्र और बच्चों के कार्यक्रम तक का निर्माण किया है।

Devendra Khandelwal is a producer-director who has made around 400 short films and equal number of ad commercials. He has made over 18 films on Mahatma Gandhi. He has acted as a leading man in 18 films in five languages. A record holder in the 'Limca Book of Records', his body of work ranges from popular comedy serials, historical and religious films, educational programs and musical countdown shows, sports based series, cultural and informative documentaries and children's programs.

कुलदीप सिन्हा (सदस्य) Kuldeep Sinha (Member)

कुलदीप सिन्हा राष्ट्रीय फिल्म सम्मान हासिल करने वाले फिल्मकार हैं जो 100 से ज्यादा लघु फिल्मों का निर्माण कर चुके हैं। इनकी यादगार फिल्मों में है – 'रफी – वी रिमेंबर यू, टूटे पंख' – थ्रू ए लेंस स्टार्कली, नॉन कंवेंश्नल एनर्जी रिसोर्सेज, नो रूम फॉर फीयर और एंड देन द फलड्स। फिल्म निर्माण पर इनकी ट्रायलॉजी सिनेमा के छात्रों के बीच काफी लोकप्रिय है। यह फिल्म प्रभाग के मुख्य निर्माता/डायरेक्टर जनरल और भारतीय बाल फिल्म सोसायटी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी भी रह चुके हैं।

Kuldeep Sinha is a National Film Award-winning filmmaker who has written and directed more than 100 short films. Some of his remarkable films include 'Rafi: We remember you', 'Toote Pankh: Through a lens starkly', 'Non-conventional Energy Resources', 'No Room for fear' and 'And then the floods'. His trilogy on filmmaking is equally popular with students of cinema. He has served as a Chief Producer/Director-General in Films Division and as CEO in the Children Films society of India (CSFI).

राहुल दत्तारे सोलापुरकर (सदस्य) Rahul Dattatray Solapurkar (Member)

अभिनेता **राहुल दत्तारे सोलापुरकर** ने 100 से ज्यादा मराठी फिल्मों में काम किया है जिसमें फेयरवेल, पलावाह–पलवी, तालावाविचिनाबलाला, बालगंधर्य, चार्म, यशवंतराव चव्हान (2014), वेंटीलेटर (2016) शामिल हैं। इन्होंने हिन्दी फिल्मों में भी काम किया जिसमें होली, डॉ बाबासाहेब आम्बेडकर (2000), हनन (2004), वज्र (2017) शामिल है। इन्होंने 30 से ज्यादा टीवी सीरिज में अभिनय किया है जिसमें मृगनयनी, अवंतिका, बाजीराव मस्तानी, नुपुर, नन्दादिप, सर्च, लोकराजा राजर्षि शाहू महाराज शामिल है।

Actor **Rahul Dattatray Solapurkar** has worked in over a 100 Marathi films including 'Farewell', 'Palavah-Palvi', 'Talavavichinabalala', "Balgandharva, 'Charm', Yashwantrao Chavan (2014), 'Ventilator' (2016), etc. He has also done Hindi films as well which include 'Holi', 'Dr. Babasaheb Ambedkar' (2000), 'Hanan' (2004), 'Vajra' (2017), etc. He has acted in over 30 TV series including 'Mraganayani', 'Avantika', 'Bajirao-Mastani', 'Nupur', 'Nandadip', 'Search', 'Lokaraja Rajarshi Shahu Maharaj', etc.

फ़ीचर फ़िल्म ज्यूरी | दक्षिण - I पैनल
FEATURE FILMS JURY | SOUTH-1 PANEL

अशोक राणे (अध्यक्ष) Ashok Rane (Chairperson)

अशोक राणे फिल्म सोसाइटी के सक्रिय कार्यकर्ता, फिल्म आलोचक, इतिहासविद, फिल्म शिक्षक, लेखक, निर्देशक और फिमिंगो इंटरनेशनल शॉर्ट फिल्म फेस्टिवल, और औरंगाबाद इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल के फेस्टिवल निदेशक हैं। इन्हें दो बार राष्ट्रीय सम्मान से नवाजा जा चुका है – पहला विश्व सिनेमा के इतिहास पर लिखी गई पुस्तक के लिए और दूसरी बार बतौर सर्वश्रेष्ठ फिल्म आलोचक के लिए। इनके नाम पर सात किताबें, सात वृत्तचित्र, दो टीवी सीरियल और दो फिल्में हैं।

Ashok Rane is a film society activist, film critic, historian, film teacher, writer, director and also the festival director of Fimingo International Short Film Festival and Aurangabad International Film Festival. He is a recipient of two National Awards – the first one for his very first book on the history of world cinema and the other one as the Best Film Critic. He has seven books, seven documentaries, two TV serials and two films to his credit.

ए. कार्तिकराजा (सदस्य) A. Karthikraaja (Member)

ए. कार्तिकराजा एक सिनेमाटोग्राफर हैं जिन्होंने नामी निर्देशक जैसे के भाग्यराज, आरवी उदय कुमार, धरनी (रमानी), मनोज कुमार, रत्नकुमार और सुरेश शंकर के साथ कई तमिल फिल्मों में काम किया है। उनकी फिल्मों में चायना ग्राउंडर (1991), एजामान (1993), वनजा गिरिजा (1994), रेट्टई जदई वायासु (1997), ओरु ओरला ओरू राजाकुमारी (1995), एधिरम पुधिरम (19990, वानाविल (2000), राज्जियम (20020, आय लव यू दा (2002), थुनई मुधालवर (2015) और इनायाथलम (2017) शामिल है।

A. Karthikraaja is a cinematographer who has worked in several Tamil films with reputed directors such as K. Bhagyaraj, R.V. Udhaya Kumar, Dharani (aka Ramani), Manoj Kumar, Rathnakumar, and Suresh-Sankar. Some of his films include 'Chinna Gounder' (1991), 'Ejamaan' (1993), 'Vanaja Girija' (1994), 'Rettai Jadai Vayasu' (1997), 'Oru Oorla Oru Rajakumari' (1995), 'Edhirum Pudhirum' (1999), 'Vaanavil' (2000), 'Raajjiyam' (2002), 'I Love You Da' (2002), 'Thunai Mudhalvar' (2015), and 'Inayathalam' (2017).

बी. दिवाकर (सदस्य) B. Diwakar (Member)

बी. दिवाकर भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान (एफटीआईआई) पुणे से प्रशिक्षित सिनेमेटोग्राफर हैं। इनके पास डायरेक्टर ऑफ फोटोग्राफी (डीओपी) के तौर पर व्यापक अनुभव रहा है, इन्होंने 34 से अधिक फिल्मों के लिए काम किया है। वे करीब दो दशकों तक जामिया मिलिया इस्लामिया दिल्ली के (एजेके) मास कम्यूनिकेशन रिसर्च सेंटर में फिल्ममेकिंग पढ़ा चुके हैं।

B. Diwakar is a qualified cinematographer from Films and Television Institute of India (FTII), Pune. He has a vast experience as the Director of Photography (DoP) and has worked in as many as 34 feature films. He has taught filmmaking at AJK Mass Communication Research Centre (MCRC), Jamia Millia Islamia, Delhi for nearly two decades.

जयराम कैलास (सदस्य) Jayaram Kailas (Member)

जयराम कैलास भारतीय फिल्म निर्देशक और विज्ञापनकार हैं। इन्होंने कई टेलीफिल्म और विज्ञापनों में बतौर कैमरामैन अपने करियर की शुरूआत की। बाद में विज्ञापन फिल्म निर्माण के लिए इन्होंने यूएई का रुख किया जहां इन्होंने एक फिल्म निर्माण कंपनी की शुरूआत की। इन्होंने भारत के बड़े कलाकारों के साथ मिलकर यूरोप और खाड़ी देशों में बड़े स्टेज शो भी किए। जयराम कैलास ने 'अक्कलधामायिले पेन्नू' (2015) के साथ निर्देशन की शुरूआत की जिसने उन्हें 2016 में सर्वश्रेष्ठ फिल्म क्रिटिक सम्मान और विशेश निर्णायक मंडल सम्मान दिलवाया।

Jayaram Kailas is a film director and ad filmmaker. He started his career as a cameraman for several telefilms and ad films. Later, he turned to ad filmmaking in UAE where he started an ad filmmaking company. He also directs major stage shows with Indian leading actors in Europe and Gulf countries. He made his directional debut with 'Akkaldhamayile Pennu' (2015), which bagged a film critics' award and a Special Jury Award for direction in 2016.

शैलेष गुप्ता (सदस्य) Shailesh Gupta (Member)

शैलेष गुप्ता एक फिल्म निर्देशक और सिनेमेटोग्राफर हैं। वे अपने घरेलू बैनर शैडोज एंड विसपर्स के तहत 100 से ज्यादा टीवी विज्ञापन, ऑडियो–विजुअल कॉरपोरेट फिल्म, म्यूजिक वीडियो, जनजागृति अभियान और टीव शोज का निर्माण और निर्देशन कर चुके हैं। इन्होंने एफटीआईआई, पुणे से स्नातक किया । इनके बनाए वृत्तचित्रों – कोल टेल्स, ऑफ लाइफ एंड लव, और एक जर्मन डॉक्यू–ड्रामा, टिबेट– रीआइस डर्क एइन वर्बोतिनेज लैंड को काफी सराहना मिली। वे बच्चों और छात्रों के साथ कई फिल्म निर्माण वर्कशॉप कर चुके हैं।

Shailesh Gupta is a film director, cinematographer and a graduated from FTII, Pune. He has produced and directed more than 100 TV commercials, audio-visuals, corporate films, music videos, public service campaigns and TV shows under his home banner 'Shadows & Whispers'. Some of his highly acclaimed documentaries include, 'Kol Tales'; 'of Life and Love'; and a German Docu-Drama, 'Tibet - Journey through a Forbidden Land'. He conducted numerous filmmaking workshops for children.

फ़ीचर फ़िल्म ज्यूरी | दक्षिण - II पैनल
FEATURE FILMS JURY | SOUTH-II PANEL

इमो सिंह (अध्यक्ष) Imo Singh (Chairperson)

इमो सिंह को एक फिल्म निर्देशक, निर्माता, और पटकथा लेखक के तौर पर करीब 25 साल का अनुभव हैं। इनके परिवार को मणिपुरी नृत्य में महारत है जिसकी वजह से कला में इनकी खास दिलचस्पी है। बड़े परदे पर काम करने के सपने को लेकर इन्होंने पुणे में एफटीआईआई में प्रवेश लिया। धीरे धीरे इन्होंने निर्देशन, निर्माण, स्क्रिप्ट और अध्ययन में अच्छा अनुभव हासिल किया। इनकी लघु फिल्म पुनरावृत्ति ने 1992 में राष्ट्रीय फिल्म सम्मान हासिल किया। वह एफटीआईआई में संचालन समिति के सदस्य हैं, फिल्म निर्माण सिखाते हैं और 2017 के राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार के निर्णायक मंडल के सदस्य थे।

Imo Singh Imo Singh is a film director, producer and scriptwriter with about 25 years' experience. Hailing from a family with a lineage in Manipuri dances, he had a natural affinity for the arts. Dreaming of working for the big screen, he joined Film and Television Institute of India (FTII) in Pune. He subsequently earned a rich experience in direction, production, scripting and teaching. His short film 'Punaravritti' won a National Film Award in 1992.

बालभद्रपुत्रानि रमानी (सदस्य) Balabhadrapatruni Ramani (Member)

बालभद्रपुत्रानि रमानी एक तेलुगू उपन्यासकार, कहानी लेखक और फिल्म कहानी–पटकथा लेखक हैं। रमानी का साहित्य जगत में प्रवेश 1993 में विपुल नाम की पत्रिका में कविताओं और लघु कथा प्रकाशन के साथ हुआ। इनका पहला उपन्यास थ्रुपथि, चतुर पत्रिका में प्रकाशित हुआ। इन्होंनें ऑल इंडिया रेडियो के लिए तीन नाटकों का लेखन भी किया है। इन्होंने टीवी शो जैसे तुलसी दालम, अंथरमुखम और कलाकनिदि के लिए संवाद लेखन भी किया। इन्हें कई सम्मानों से नवाजा जा चुका है। इन्होंने करीब 150 लघु कथाएं लिखी है ।।

Balabhadrapatruni Ramani is a Telugu novelist, story writer and movie story-screenplay writer. Ramani's entry into literature started in 1993 with poetry and a short story 'Mullabata', published in 'Vipula' magazine. Her first novel 'Thrupthi' was published in 'Chatura' magazine. She has written three plays for the All India Radio (AIR). She has also written dialogues for TV shows such as 'Tulasi Dalam', 'Antharmukham' and 'Kalakanidi'. Winner of several accolades, she has written close to 150 short stories.

मालती सहाय (सदस्य) Malti Sahai (Member)

मालती सहाय फिल्म फेस्टिवल निदेशालय की पूर्व निदेशक है जहां इन्होंने 20 साल तक सेवाएं दी. इन्होंने भारतीय सिनेमा पर तीन पुस्तकें लिखी हैं. वे पिछले 20 सालों से, पहले यू.एन.आई के लिए बाद में 'दि सेंटिनेल' के लिए अंतर्राष्ट्रीय फिल्म फेस्टीवल जैसे केन्स, मोंटरील, टोरंटो आदि को कवर करती आ रही है. वे विदेशों में होने वाले दर्जनों अंतर्राष्ट्रीय फिल्म के निर्णायक मंडल के तौर परसेवाएं दे चुकी है और साउथ कोरिया के प्रतिष्ठित पुसान फिल्म फेस्टिवल की अध्यक्ष रह चुकी हैं।

Malti Sahai Malti Sahai is the former director of Directorate of Film Festivals (DFF) where she served for 20 years. She has written three books on Indian Cinema. She has been covering international film festivals like Cannes, Montreal, Toronto, etc. for 20 years initially for 'U.N.I.' and lately for 'The Sentinel'. She has served as jury for more than a dozen international film festivals abroad and was chairperson of the prestigious Pusan Film Festival in South Korea.

एम. के. भास्कर राव MK Bhaskara Rao (Member)

एम. के. भास्कर राव एक वरिष्ठ पत्रकार और कन्नड़ भाषा के जाने माने फिल्म समीक्षक है. इन्होंने एक दशक तक चर्चित अखबारों जैसे प्रजावानी, और संयुक् कर्नाटका के लिए काम किया. वे एक लघुकथा लेखक भी हैं. इन्होंने कन्नड़ फिल्म अवार्ड समीति और क्वालिटी टैग समीति के सदस्य के तौर पर सेवाएं दी. इन्हें कई प्रतिष्ठित सम्मान प्राप्त हुए जिसमें कर्नाटक मीडिया एकेडमी अवार्ड भी शामिल है।

M.K. Bhaskara Rao is a senior journalist and well-known film critic in Kannada language. He has worked with popular vernacular dailies like 'Prajavani' and 'Samyukta Karnataka' for decades. He is also a published short story writer. He has served as a member of the Kannada Film Award Committee and Quality Tag Committees, headed by the legendary B. V. Karanth and M. S. Sathyu, respectively. He has won several prestigious awards, including the Karnataka Media Academy award.

एस.एम. पाटिल (सदस्य) SM Patil (Member)

एस.एम. पाटिल एसएम पाटिल कन्नड़ फिल्म एवं टीवी इंडस्ट्री के निर्देशक, स्क्रिप्ट लेखक एवं गीतकार हैं। इन्होंने 2006 में फिल्म नन्ना कानासिना हूवे और टीवी सीरियल जाला का निर्देशन किया। इन्होंने 2015 में मेलैडी और 15 से ज्यादा लोकप्रीय टीवी सीरिज के लिए स्क्रिप्ट लिखी है। वह 2007–09 और फिर 2012–16 के बीच दो बार सीबीएफसी की सलाहकार समिति के सदस्य रहे हैं। यह बेंगलुरू अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह 2012 और 2013 की स्क्रीनिंग समिति के सदस्य रहे।

S.M. Patil is a director, scriptwriter, lyricist in Kannada film and TV industry. He wrote and directed the film 'Nanna Kanasina Hoove' (2006) and TV serial 'Jaala'. He wrote the script for another film 'Melody' (2015) and over 15 popular TV series. He has been a member of the Advisory Committee of the CBFC twice – first, between 2007-09 and then, 2012-16. He has also served as a screening committee member for the Bangalore international film festival 2012 and 2013.

फ़ीचर फ़िल्म ज्यूरी | पश्चिम पैनल
FEATURE FILMS JURY | WEST PANEL

बी.एस. लिंगादेवारू (अध्यक्ष) B.S. Lingadevaru (Chairperson)

बी.एस. लिंगादेवारू टेलीविजन के एक जाने माने अभिनेता, निर्माता और निर्देशक हैं। कर्नाटक के एक कृषि व्यापार से जुड़े परिवार से ताल्लुक रखने वाले लिंगादेवारू एक फार्मासिस्ट भी हैं। मौनी उनकी पहली फिल्म थी, आगे चलकर इन्होंने काड़ा बेलादिंगालु और नानु अवनाल्ला अवालु जैसी फिल्में बनाई. इनकी तीनों फिल्मों को भारतीय पैनोरमा के लिए चुना गया और राजकीय और राष्ट्रीय अवार्ड भी हासिल किए। नम्मूरा चित्रोत्सव के जरिए पुरस्कार विजेता फिल्मों को जन–जन तक पहुंचाने में इनका अहम योगदान रहा है।

B.S. Lingadevaru is a well-known actor, producer and director of the small screen. He is also a pharmacist, hailing from an agricultural-trading family in Karnataka. 'Mouni' was his first film, followed by 'Kaada Beladingalu' and 'Naanu Avanalla Avalu'. All the three films were selected for the Indian Panorama and won State and National Awards. He is instrumental in reaching award-winning films to viewers across Karnataka through 'Nammoora Chitrotsava'.

ज्ञान सहाय (सदस्य) Gyan Sahay (Member)

ज्ञान सहाय भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान (एफटीआईआई) पुणे से स्नातक हैं, जहां इन्होंनें सिनेमेटोग्राफी में विशेषज्ञता हासिल की। इन्होंने अपने पेशेवर काम की शुरूआत गोविंद निहलानी के साथ बतौर सिनेमेटोग्राफर की और भूमिका, कोंदुरा, जुनून, कलयुग, आक्रोश, विजेता और रिचर्ड एटनबॉरॉ की गांधी में काम किया। वे भारत में मल्टी कैमरा टीवी प्रोडक्शन और रियलिटी शो बनाने वाले शुरुआती लोगों में से हैं। इन्होंने विभिन्न टीवी चैनलों के लिए बतौर डायरेक्टर ऑफ फोटोग्राफी (डीओपी) 3000 से ज्यादा एपिसोड और बतौर निर्देशक करीब 1000 एपिसोड का निर्माण किया।

Gyan Sahay is a graduate from Film and Television Institute of India (FTII), Pune where he specialized in Cinematography. He started his professional career as a cinematographer in Mumbai with Govind Nihalani, and worked in movies like 'Bhumika', 'Kondura', 'Junoon', 'Kalyug', 'Aakrosh', 'Vijeyta' and Richard Attenborough's 'Gandhi'. He is a pioneer in reality shows and multi-camera TV productions in India. He has shot more than 3000 episodes as DOP and almost 1000 episodes as Director on various TV channels.

महेंद्र तेरेदेसाई (सदस्य) Mahendra Teredesai (Member)

महेंद्र तेरेदेसाई स्क्रीनराइटर और निर्देशक हैं जो अपनी फिल्म डोम्बिविली रिटर्न के लिए जाने जाते हैं जो इन्होंने 2014 में निर्देशित की थी। इन्होंने ही फिल्म की पटकथा और संवाद लिखे थे। वह पिछले बीस सालों से नाटक, संवाद, पटकथा और टीवी सीरियल निर्माण कर रहे हैं। इनका निर्देशक डॉ जब्बार पटेल के साथ लंबा साथ रहा, खासकर डॉ बी आर आम्बेडकर के बायोपिक डॉ बाबासाहेब आम्बेडकर (2000) के निर्माण के दौरान ।

Mahendra Teredesai is a screenwriter and director known for his film 'Dombivli Return' which he directed in 2014. He wrote its screenplay and dialogues also. He has been writing plays, dialogues, screenplays and making TV serials for over two decades now. He has had a long association with director Dr. Jabbar Patel, especially during the making of his biopic of Dr. B. R. Ambedkar titled 'Dr. Babasaheb Ambedkar' (2000).

नीरज पाठक (सदस्य) Neerraj Pathak (Member)

पढ़ने के दौरान **नीरज पाठक** लगातार गुजराती नाटकों के लिए लेखन, निर्दशन और अभिनय करते आ रहे थे. जल्द ही वह गुजराती टेलीविजन का एक चर्चित नाम बन गए. फिर वह मुबंई आ गए जहां इन्होंने 1000 से ज्यादा टीवी एपिसोड, एड फिल्म, लघु फिल्म करने के बाद इन्होंने फीचर फिल्म लिखना / निर्देशन शुरू किया. इनकी लोकप्रिय फिल्मों में परदेस, घात, दीवानगी, अपने, राइट या रॉन्ग, भैय्याजी सुपरहिट है. हाल ही में इन्होंने अपने खुद के बैनर गोल्ड माउंटेन पिक्चर्स का निर्माण किया है

While studying, **Neerraj Pathak** was simultaneously writing, directing and acting in Guajarati plays. Soon, he was a popular name in Gujarati Television. He then shifted to Mumbai and went on to write 1000 television episodes, numerous Ad films and short films. He then went on to write and direct various feature films. Some of his writer/director films include 'Pardes', 'Ghath', 'Deewangi', 'Apne', 'Right Yaaa Wrong', 'Bhaiyaji Superhit'. He has recently formed his own banner Gold Mountain Pictures.

पराग छापेकर (सदस्य) Parag Chhapekar (Member)

पराग छापेकर दैनिक जागरण.कॉम क एंटरटेनमेंट एडिटर हैं। इससे पहले वह आईबीएन 7, जी न्यूज, स्टार न्यूज और इंडिया टीवी में बतौर एंटरटेनमेंट हेड कई मीडिया हाउज में काम कर चुके हैं। छापेकर, 19 साल से मनोरंजन जगत से जुड़े हुए हैं। अभी तक के कार्यकाल में पराग ने लगभग हिन्दी फिल्म इंडस्ट्री के सभी बड़े कलाकार को इंटरव्यू किया है और इन्हें कई पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। इसके अलावा वह सेंसर बोर्ड सदस्य रहे हैं ।

Parag Chhapekar is the Entertainment Editor at DainikJagran.com. Earlier, he has worked at several media house like IBN 7, Zee News, Star News and India TV as Entertainment Head. Chhapekar has worked in the entertainment industry for 19 years. During his tenure so far, Parag has literally interviewed every leading actor and actress of the Hindi film industry and has been honoured with several awards. He has been a member of the Central Board of Film Certification (CBFC).

फ़िल्म अनुकूल प्रदेश निर्णायक समिति
FILM FRIENDLY STATE JURY COMMITEE

रमेश सिप्पी (अध्यक्ष) Ramesh Sippy (Chairperson)

रमेश सिप्पी एक भारतीय फिल्म निर्देशक और निर्माता हैं। जो अपनी चर्चित और हिंदी सिनेमा के इतिहास में मील का पत्थर फिल्म शोले (1975) के लिए जाने जाते हैं। इन्होंनें और भी कई चर्चित फिल्मों का निर्देशन किया जिसमें सीता और गीता (1972), सागर (1985), शक्ति (1982) और निर्माता के तौर पर इनकी फिल्मों में ब्रह्मचारी (1968), चांदनी चौक टू चाइना (2009), दम मारो दम (2011) शामिल हैं। इन्हें भारत के प्रतिष्ठित सम्मान पदम श्री (2013) से भी नवाजा जा चुका है।

Ramesh Sippy is an Indian film director and producer, best known for directing the popular and critically acclaimed film 'Sholay' (1975). He has also directed other popular films such as 'Seeta Aur Geeta' (1972), 'Zameen' (1987), 'Saagar' (1985), 'Shakti' (1982) and also produced films including 'Brahmachari' (1968), 'Chandni Chowk to China' (2009), 'Dum Maaro Dum' (2011). He won the coveted civilian honour Padma Shri in 2013.

उदय सिंह (सदस्य) Uday Singh (Member)

उदय सिंह मोशन पिक्चर असोसिएशन के भारत में प्रबंध निदेशक हैं। भारत में हॉलीवुड स्टूडियो के व्यवसायिक और रचनात्मक कार्यो और क्षेत्रीय सिनेमाघरों में इनके प्रचार प्रसार और हितों की जिम्मेदारी इनके ही कंधो पर हैं। इस कार्यभार को संभालने से पहले उदय पीवीआर पिक्चर्स के सीईओ, कोलंबिया ट्राइस्टार मोशन पिक्चर ग्रुप के एक्जक्यूटिव वाइस प्रेसिडेंट और सोनी पिक्चर्स, इंडिया के एमडी भी रह चुके हैं। हार्वर्ड बिजनेस स्कूल के पूर्व छात्र।

Uday Singh is the Managing Director of the Motion Picture Association's India office, responsible for promoting and protecting the commercial and creative interests of the Hollywood studios in India as well as those of the local screen communities. Before taking this role, Uday was CEO of PVR Pictures; Executive Vice President for the Columbia TriStar Motion Picture Group, and also MD of Sony Pictures India. An alumnus of Harvard Business School, Singh completed an AMP in 2010.

विवेक अग्निहोत्री (सदस्य) Vivek Agnihotri (Member)

विवेक अग्निहोत्री एक भारतीय फिल्म निर्देशक, पटकथा लेखक और साहित्यकार हैं। वे केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड के पैनल के सदस्य भी हैं। इनके काम में द ताशकंत फाइल्स (2019), बुद्धा इन अ ट्रेफिक (2014), चॉकलेट–डीप डार्क सीक्रेट्स (2005), और हेट स्टोरी (2012) शामिल है।

Vivek Agnihotri is an Indian film director, screenwriter, and author. He is a member on the panel of Central Board of Film Certification. His works include 'The Tashkent Files' (2019), 'Buddha in a Traffic Jam' (2014), 'Chocolate: Deep Dark Secrets' (2005), and 'Hate Story' (2012).

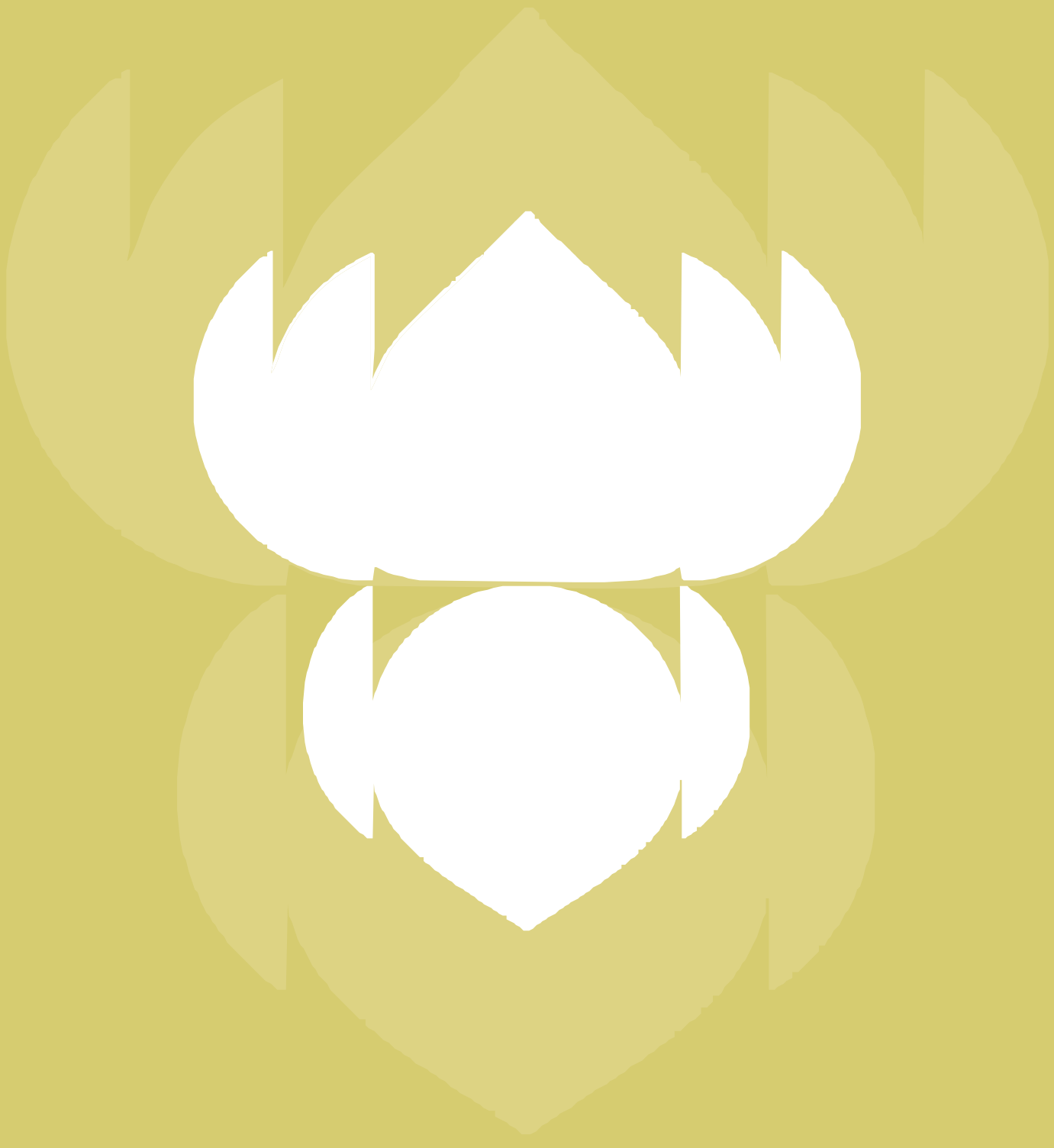

फ़ीचर फ़िल्में
FEATURE FILMS

राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार 2018

NATIONAL FILM AWARDS 2018

35 मि.मि. या बड़े गेज या डिजिटल प्रारूप में बनी किन्तु फ़िल्म प्रारूप अथवा वीडियो / डिजिटल प्रारूप में जारी किसी भी भारतीय भाषा में बनी और केन्द्रीय फ़िल्म प्रमाणन बोर्ड द्वारा फ़ीचर या फ़ीचरेट के रूप में प्रमाणीकृत फ़िल्म फ़ीचर फ़िल्म श्रेणी के लिए पात्र है।

Films made in any Indian language, shot on 35 mm or in a wider gauge or digital format but released on a film format or video/digital format and certified by the Central Board of Film Certification as a feature film or featurette are eligible for feature film section.

ANDHADHUN (Hindi)
Best Actor (Shared)
Best Hindi Film

अंधाधुन (हिन्दी)
सर्वश्रेष्ठ अभिनेता (सांझा)
सर्वश्रेष्ठ हिन्दी फिल्म

AMORI
Best Konkani Film

अमोरी
सर्वश्रेष्ठ कोंकणी फिल्म

AWE (Telugu)
Best Make-up Artist
Best Special Effects

आवे (तेलुगू)
सर्वश्रेष्ठ मेक अप कलाकार
सर्वश्रेष्ठ स्पेशल इफेक्ट

BAARAM
Best Tamil Film

बारम
सर्वश्रेष्ठ तमिल फिल्म

BADHAAI HO (Hindi)
Award for Best Popular Film Providing Wholesome Entertainment
Best Supporting Actress

बधाई हो (हिन्दी)
लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन करनेवाली सर्वश्रेष्ठ फिल्म के लिए पुरस्कार
सर्वश्रेष्ठ सह अभिनेत्री

BHONGA
Best Marathi Film

भोंगा
सर्वश्रेष्ठ मराठी फिल्म

BULBUL CAN SING
Best Assamese Film

बुलबुल केन सिंग
सर्वश्रेष्ठ असमिया फिल्म

CHI ARJUN LA SOW (Telugu)
Best Screenplay (Original)

चि अर्जुन ला सौ (तेलुगू)
सर्वश्रेष्ठ पटकथा (मौलिक)

CHUMBAK (Marathi)
Best Supporting Actor

चुम्बक (मराठी)
सर्वश्रेष्ठ सह–अभिनेता

EK JE CHHILO RAJA
Best Bengali Film

एक जे छीलो राजा
सर्वश्रेष्ठ बांग्ला फिल्म

HAMID
Best Child Artist
Best Urdu Film

हामिद
सर्वश्रेष्ठ उर्दू फिल्म
सर्वश्रेष्ठ बाल कलाकार

HARJEETA
Best Child Artist
Best Punjabi Film

हरजीता
सर्वश्रेष्ठ बाल कलाकार
सर्वश्रेष्ठ पंजाबी फिल्म

HELLARO (Gujarati)
Best Feature Film
Special Jury Award

हेल्लारो (गुजराती)
सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म
निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार

IN THE LAND OF POISON WOMEN
Best Pangchenpa Film

इन द लैंड ऑफ पोइजन वुमन
सर्वश्रेष्ठ पन्गचेन्पा फिल्म

JOSEPH (Malayalam)
Special Mention

जॉसफ
विशेष उल्लेख

KADAKH (Hindi)
Special Mention

कडख
विशेष उल्लेख

KAMMARA SAMBHAVAM (Malayalam)
Best Production Design

कम्मारा संभावम
सर्वश्रेष्ठ प्रोडक्शन डिज़ाइन

KEDARA (Bengali)
Special Jury Award

केदारा (बांग्ला)
निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार

KGF (Kannada)
Best Action Direction Award
Best Special Effects

के जी एफ (कन्नड़)
सर्वश्रेष्ठ एक्शन निर्देशन पुरस्कार
सर्वश्रेष्ठ स्पेशल इफेक्ट

MA*AMA
Best Garo Film

मा*मा
सर्वश्रेष्ठ गारो फिल्म

MAHANATI (Telugu)
Best Telugu Film

फ़ीचर फ़िल्में । एक नज़र में FEATURE FILMS | AT A GLANCE

Best Actress
Best Costume Designer

महानटी
सर्वश्रेष्ठ तेलुगु फिल्म
सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री
सर्वश्रेष्ठ वेशभूषाकार

MISHING
Best Sherdukpan Film

मिशिंग
सर्वश्रेष्ठ शेरदुकपन फिल्म

NAAL (Marathi)
Indira Gandhi Award for
Best Debut Film of a Director
Best Child Artist

नाल (मराठी)
निर्देशक की सर्वश्रेष्ठ प्रथम फिल्म के लिए
इंधिरा गाँधी पुरस्कार
सर्वश्रेष्ठ बाल कलाकार

NATHICHARAMI (Kannada)
Best Female Playback Singer
Best Lyrics
Best Editing
Best Kannada Film
Special Mention

नाथिचरामी (कन्नड़)
सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायिका
सर्वश्रेष्ठ गीत
सर्वश्रेष्ठ संपादन
सर्वश्रेष्ठ कन्नड़ फ़िल्म
विशेष उल्लेख

OLU (Malayalam)
Best Cinematography

ओलु (मलयालम)
सर्वश्रेष्ठ सिनेमैटोग्राफी

ONDALLA ERADALLA (Kannada)
Nargis Dutt Award for Best Feature Film on National Integration
Best Child Artist

ओन्डाल्ला एराडाल्ला (कन्नड)
राष्ट्रीय सद्भाव और एकता के लिए सर्वश्रेष्ठ फ़ीचर फ़िल्म का नर्गिस दत्त पुरस्कार
सर्वश्रेष्ठ बाल कलाकार

URI: THE SURGICAL STRIKE (Hindi)
Best Actor (Shared)
Best Music Direction
Best Audiography (Sound Design)

उरीः द सर्जिकल स्ट्राइक (हिन्दी)
सर्वश्रेष्ठ अभिनेता (सांझा)
सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशन
सर्वश्रेष्ठ ध्वन्यांकन (साउंड डिज़ाइन)

PAANI (Marathi)
Best Film on Environment Conservation/Preservation

पानी (मराठी)
पर्यावरण संरक्षण / परिरक्षण पर सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म

PADMAAVAT (Hindi)
Best Male Playback Singer
Best Choreography
Best Music Direction

पद्मावत (हिन्दी)
सर्वोत्तम पार्श्व गायक
सर्वोत्तम नृत्य संयोजन
सर्वोत्तम संगीत निर्देशन

PADMAN (Hindi)
Best Film on Social Issues

पैडमेन (हिन्दी)
सामाजिक मुद्दों पर सर्वश्रेष्ठ फिल्म

RANGASTHALAM (Telugu)
Best Audiography (Re-recordist of Final Mixed Track)

रंगस्थलम
सर्वश्रेष्ठ ध्वन्यांकन (फाइनल साउंड मिक्सिंग)

REVA
Best Gujarati Film

रेवा
सर्वश्रेष्ठ गुजराती फिल्म

SARKARI HIRIYA PRATHAMIKA SHALE KASARGODU (Kannada)
Best Children Film

सरकारी हिरिया प्राथमिका शाले कसरगोडु (कन्नड)
सर्वश्रेष्ठबाल फिल्म

SUDANI FROM NIGERIA
Best Malayalam Film
Special Mention

सुडानी फ्रॉम नाइजीरिया
सर्वश्रेष्ठ मलयालम फिल्म
विशेष उल्लेख

TARIKH (Bengali)
Best Screenplay (Dialogues)

तारीख (बांग्ला)
सर्वश्रेष्ठ पटकथा (संवाद)

TENDLYA (Marathi)
Best Audiography

तेंडल्या
सर्वश्रेष्ठ ध्वन्यांकन

TURTLE
Best Rajasthani Film

टर्टल
सर्वश्रेष्ठ राजस्थानी फिल्म

हेल्लारो
सर्वश्रेष्ठ फ़ीचर फ़िल्म

Hellaro | Best Feature Film

स्वर्ण कमल | SWARNA KAMAL ₹ 2,50,000/-

Gujarati | 123 Mins | Director: Abhishek Shah | **Production Company:** Saarthi Productions | **Screenplay:** Abhishek Shah & Prateek Gupta | **Editor:** Prateek Gupta | **DOP:** Tribhuvan Babu Sadineni | **Cast:** Shraddha Dangar, Jayesh More, Tejal Panchasra, Shailesh Prajapati

कथासार - 1975 में, एक युवा लड़की मंझरी की शादी कच्छ के रण मे मौजूद एक छोटे से गांव में हो जाती है। वहां वह औरतों के समूह से जुड़ जाती है जो पैतृक समाज की बेड़ियों में बंधी हुई हैं। इससे उनको बस उसी समय मुक्ति मिलती है जब वो हर सुबह दूरदराज के इलाके में मौजूद जलाशय से पानी भरने जाती है। एक दिन, जब वो पानी भरने जा रही होती हैं, उन्हें बीच रेगिस्तान में कोई मिलता है और उनकी जिंदगी हमेशा के लिए बदल जाती है।

Synopsis - In 1975, a young Manjhri is married off in a small village in the Rann of Kutch. There, she joins a group of women shackled by patriarchal mandates. Their only escape from the suppression is when they go out to fetch water every morning to a distant waterbody. One day, while on their way to fetch water, they find someone in the middle of the desert and their lives are changed forever.

परिचय

अभिषेक शाह (Abhishek Shah)

अभिषेक शाह 15 गुजराती फिल्मों के कास्टिंग डायरेक्टर रह चुके हैं। वह मुख्यधारा थियेटर में 18 सालों से बतौर लेखक, निर्देशक और अभिनेता जुड़े हुए हैं। इन्होंने टीवी कमर्शियल और प्रोमो फिल्म भी निर्देशित की है।

Abhishek Shah has been a Casting Director for 15 Gujarati films. He has also been a writer, director, and actor with mainstream theatre for over 18 years. He has also directed TV commercials and promo films.

PROFILE

सारथी प्रोडक्शन्स LLP (Saarthi Productions LLP)

सारथी प्रोडक्शन्स LLP, गुजरात में स्थित प्रोडक्शन कंपनी है। 'हैल्लारो' इनकी पहली फीचर फिल्म है।

Saarthi Productions LLP is a production company based in Gujarat. Its focus is on producing creative and engaging documentary and fiction. 'Hellaro' is its first feature film production.

प्रशस्ति – यह फिल्म पुरुष प्रधान समाज के खिलाफ महिला सशक्तिकरण का एक सशक्त सन्देश है।
Citation - The film is a strong statement on women empowerment against patriarchal Society.

नाल

निर्देशक की पहली फ़िल्म के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार

Naal | Indira Gandhi Award for Best Debut Film of a Director

स्वर्ण कमल | SWARNA KAMAL ₹ 1,25,000/-

Marathi | **117 Mins** | **Director:** Sudhakar Reddy Yakkanti | **Production Company:** Zee Studios | **Screenplay:** Sudhakar Reddy Yakkanti | **DOP:** Sudhakar Reddy Yakkanti | **Story & Dialogue:** Sudhakar Reddy Yakkanti | **Cast:** Shrinivas Pokale, Nagraj Manjule, Devika Daftardar

कथासार - महाराष्ट्र में नदी के किनारे बसे एक दूरदराज के गांव में चैतन्य नाम का एक आठ साल का शरारती लड़का रहता है। वो अपनी जमीदार पिता के लाड़ और मां के प्यार और देखरेख में पला बढ़ा है। नाल चैतन्य की भावुक दुनिया की कहानी है जो उसके अपनी मां के प्यार के एहसास के सफर को बयान करती है।

Synopsis - Chaitanya is an eight-year-old mischievous boy who lives along the banks of a river in a remote village in Maharashtra. He is fathered by a small-time landlord and pampered by a loving and caring mother. 'Naal' is about Chaitanya's emotional world and follows him on an unexpected journey of experiencing motherly love.

परिचय

सुधाकर रेड्डी यकन्ती (Ram Madhvani)

सुधाकर रेड्डी यकन्ती एक छायाकार है जो विहिर, (2008), देउल (2011), आईडी (2013), सैराट (2016) और वीरे दी वेडिंग (2018) जैसी फिल्मों के लिए जाने जाते है। नाल बतौर निर्देशक उनकी पहली फीचर फिल्म है।

Sudhakar Reddy Yakkanti is a cinematographer known for films like 'Vihir' (2008), 'Deool' (2011), 'ID' (2013), 'Sairat' (2016) and 'Veere Di Wedding' (2018). 'Naal' is his first feature-length directorial venture.

PROFILE

जी स्टूडियोज (Zee Studios)

जी स्टूडियोज, जी एंटरटेन्मेंट एंटरप्राइजेज की एक फिल्म निर्माण और वितरण कंपनी है। स्टूडियो कई भारतीय भाषाओं जैसे हिंदी, मराठी में फिल्में बनाता है। इसके अलावा अब ये अंतर्राष्ट्रीय निर्माण में भी शामिल हो चुकी है।

Zee Studios is a film production and distribution company in India owned by Zee Entertainment Enterprises. The studio makes films in various Indian languages such as Hindi and Marathi, and has also been involved in international production.

प्रशस्ति – यह फिल्म गोद लेने के आचार–विचार के बारे में, एक बच्चे के नजरिए से दिया गया एक मार्मिक सन्देश है।

Citation - The film is a poignant message about the ethics of adoption, told through a child's perspective.

बधाई हो

लोकप्रिय एवं स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने वाली सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म

Badhaai Ho | Best Popular Film Providing Wholesome Entertainment

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 2,00,000/-

Hindi | 123 Mins | Director: Amit Sharma | **Production Company:** Junglee Pictures Ltd & Chrome Pictures | **Screenplay:** Akshat Ghildial | **Writers:** Shanatanu Srivastava, Akshat Ghildial, Jyoti Kapoor | **Editor:** Dev Rao Jadhav | **DOP:** Sanu Varghese | **Cast:** Ayushmann Khurrana, Neena Gupta, Gajraj Rao, Surekha Sikri, Sanya Malhotra

कथासार - 25 साल के नकुल कौशिक की अधेड़ उम्र की मां के गर्भवती होने की खबर से पूरा कौशिक परिवार सदमे में आ जाता है। सभी अब इस परिवार के बारे में बात कर रहे हैं जिससे उन्हें एक सामाजिक शर्मिंदगी का सामना करना पड़ता है। नकुल भावुकता और नाराजगी के असमंजस में झूलता रहता है और उसके अपने माता–पिता, तेज–तर्रार दादी, छोटे भाई और मंगेतर – सहकर्मी रीनी तथा दूसरे लोगों के साथ संबंधों में उतार – चढ़ाव आते हैं। वह लोगों से मिलने वाली शर्मिंदगी और अपने परिवार, खासकर अपनी मां के प्रति प्रेम में खुद को बंटा हुआ पाता है। बाद में वह अपने माता पिता के निजी जीवन और परिवार के इस नए स्वरूप को स्वीकार कर लेता है।

Synopsis - The news of 25-year-old Nakul Kaushik's middle-aged mother's pregnancy comes as a shock to the entire Kaushik household. Everyone's gaze is now turned towards the family which has to deal with social embarrassment. What follows is a phase of resentment and emotional confusion for Nakul as he goes through ups-and-downs in his relationships with his father, mother, feisty grandmother; teenaged brother, fiancée-colleague Renee and others. Torn between public embarrassment and love for his family, especially his mother, he tries to come to terms with the idea of his parents' active sex life and the idea of family itself.

परिचय

अमित शर्मा (Amit Sharma)

अमित शर्मा एक विज्ञापन फिल्मकार और फिल्म निर्देशक हैं, इन्होंने देश के नामी ब्रांड्स के लिए 1200 से भी अधिक विज्ञापनों का निर्देशन किया है। इनके निर्देशन में बनी पहली फिल्म 'तेवर' (2015) थी।

Amit Sharma is an ad filmmaker and film director. He has directed over 1200 commercials for top brands. His directorial debut film was 'Tevar' (2015).

PROFILE

जंगली पिक्चर्स, क्रोम पिक्चर्स

जंगली पिक्चर्स एक फिल्म निर्माण और वितरण कंपनी है।

क्रोम पिक्चर्स एक मुंबई स्थित फिल्म निर्माण कंपनी है।

Junglee Pictures is a film production and distribution company.

Chrome Pictures is a film production house based in Mumbai.

प्रशस्ति – यह फिल्म अधेड़ावस्था में गर्भधारण को लेकर बनी रुढ़िवादी धारणा को एक सरल कथानक, प्रभावी चरित्रीकरण और अर्थपूर्ण संवाद के जरिये तोड़ती है।
Citation - The film breaks the stereotype of middle age pregnancy through easy narrative, effective characterization and pithy dialogues.

ओन्दल्ला इरेदल्ला

राष्ट्रीय सद्भाव और एकता के लिए सर्वश्रेष्ठ फ़ीचर फ़िल्म को नर्गिस दत्त पुरस्कार

Ondalla Eradalla | Nargis Dutt Award for Best Feature Film on National Integration

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,50,000/-

Kannada | 132 Mins | Director: D. Satya Prakash | **Production Company:** DN Cinemas | **Screenplay:** Dhananjay Ranjan, Nagendra H.S., D. Satya Prakash | **Editor:** B.S. Kemparaju | **DOP:** Lavith | **Cast:** Master P.V. Rohith, Sai Krishna Kudla, M.K. Mutt, Anand Neenasam, Prabhudeva Hosadurga Nagabhushan, Ramzaan Saab Ullaagaddi

कथासार - सात साल के समीर का पालतू जानवर बानु दुर्घटनावश खो जाता है। बानु को ढूंढने के दौरान समीर एक शहर मे पहुंच जाता है जिसका नाम है पेटे और वो वहां पूरी तरह अकेला है। उसकी मुलाकात समाज के विभिन्न वर्गों के लोगों से होती है, क्या इन स्वार्थी लोगों के बीच मासूम समीर वापस अपने पालतू जानवर से मिल पाएगा। फिल्म ने इस तथ्य पर जोर देने की कोशिश है कि एक दूसरे की मदद करना ही जिंदगी में खुशी हासिल करने का एकमात्र मंत्र है।

Synopsis - Seven-year-old boy Sameera accidentally loses his beloved pet Banu. While searching for Banu, Sameera reaches a town called 'Pete' and is all alone. He meets many people from different sections of the society. Will innocent Sameera get reunited with his pet among the selfish people? The film tries to emphasise on the fact that helping each other is mantra to be happy and content in life.

परिचय

डी. सत्या प्रकाश (D. Satya Prakash)

डी. सत्या प्रकाश एक कन्नड़ फिल्म निर्माता, पटकथा लेखक, और निर्माता है। इनका काम खास तौर पर सामाजिक मुद्दों और इंसानी रिश्तों पर केंद्रित हैं।

D. Satya Prakash is a Kannada filmmaker, screenwriter, and producer. His work stands out for its focus on social issues and human relationships.

PROFILE

डी एन सिनेमाज (DN Cinemas)

डी एन सिनेमाज एक प्रोडक्शन हाउस है जिसकी कमान स्मिथ एन के हाथ में है। ये अम्पैथी फिल्म्स की सहायक कंपनी है जो इससे पहले किच्चा सुदीप जैसे नामचीन कलाकार के साथ हेब्बुली (2017) जैसी हिट फिल्म दे चुके हैं।

DN Cinemas is a production house owned by Smith N. It is a sister concern of Umapathy Films which previously made Kiccha Sudeep-starrer hit film, 'Hebbuli' (2017).

प्रशस्ति – फिल्म राजनीतिक और धार्मिक विभाजन को एक बच्चे के नजरिए से दर्शाती है।

Citation - The film tries to break political and religious divide through the eye of a child.

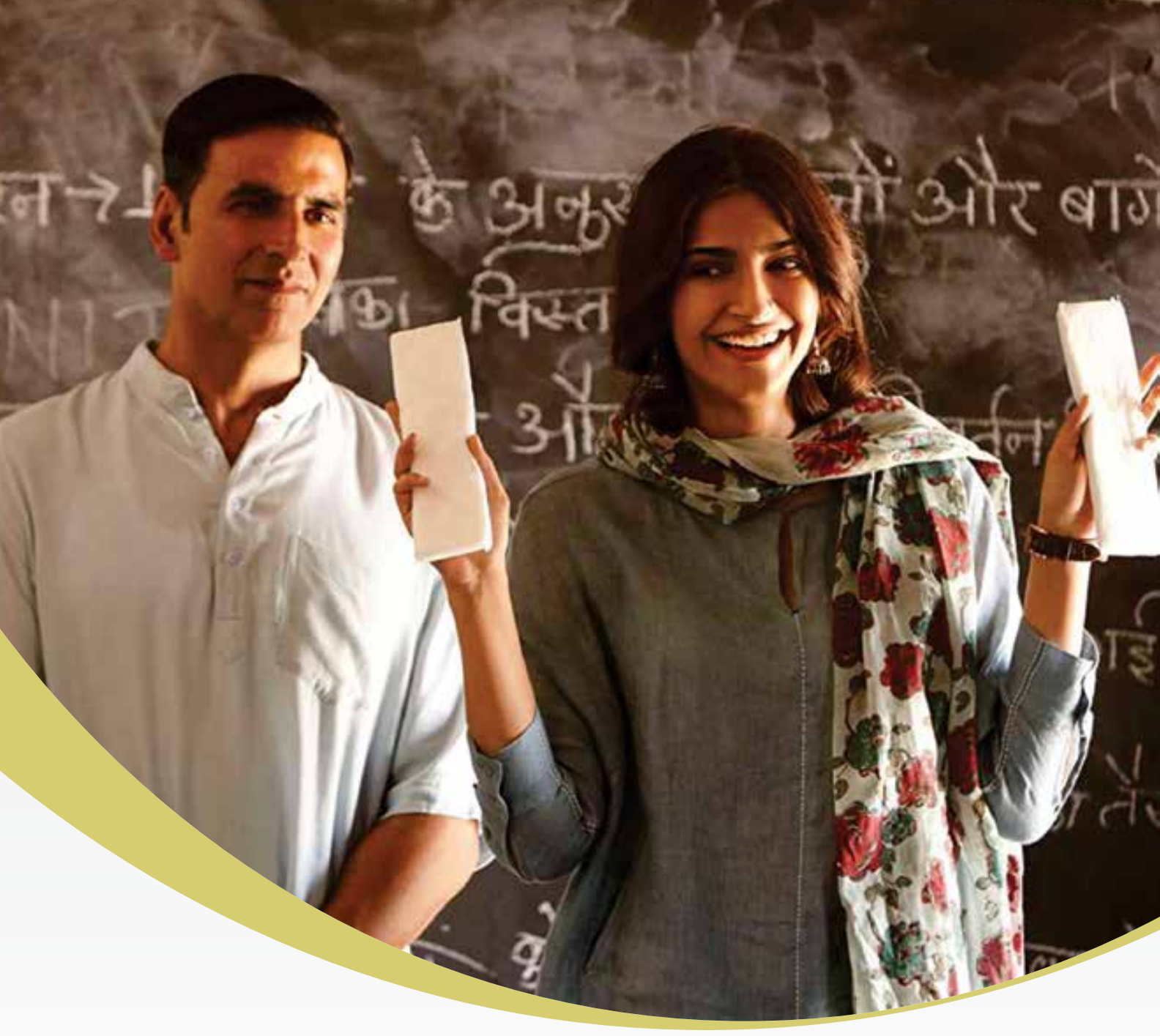

पैड मैन
सामाजिक मुद्दों पर सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म

Pad Man | Best Film on Social Issues

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,50,000/-

Hindi | 138 Mins | Director: R. Balki | **Production Company:** Hope Productions and Twinkle Khanna | **Screenplay:** R. Balki, Swanand Kirkire | **Editor:** Chandan Arora | **DOP:** P.C. Sreeram | **Cast:** Akshay Kumar, Sonam Kapoor, Radhika Apte

कथासार - लक्ष्मीकांत को ये बात बहुत परेशान करती है कि उसकी पत्नी गायत्री, पीरियड के दौरान अस्वच्छ कपड़ों का इस्तेमाल करती है। वो सैनिटरी पैड्स की एक मशीन बनाने का फैसला करता है जिससे उसके दाम कम हो सके और इस प्रक्रिया में इस मुद्दे पर जागरुकता पैदा करने में मदद करता है।

Synopsis - Laxmikant is upset when he sees wife Gayatri using an unhygienic cloth during her periods. He decides to create a machine that could make sanitary pads at an affordable price, and in the process helps creating awareness on the issue.

परिचय

आर. बालकृष्णन (R. Balakrishnan)

आर. बालकृष्णन, जो आर. बाल्की के नाम से चर्चित हैं एक फिल्मकार, पटकथा लेखक और विज्ञापन एजेंसी लोव लिंटास (भारत) के पूर्व समूह अध्यक्ष हैं। वे अपनी अनोखी और हटकर बनाई गई फिल्मों के लिए जाने जाते हैं जैसे चीनी कम (2007), पा (2009), और पैड मैन (2018)।

R. Balakrishnan, popularly known as R. Balki, is a filmmaker, screenwriter and former Group Chairman of the advertising agency Lowe Lintas (India). He is best known for directing offbeat films like 'Cheeni Kum' (2007), 'Paa' (2009) and 'Pad Man' (2018).

PROFILE

होप प्रोडक्शन्स प्राइवेट लिमिटेड एवं ट्विंकल खन्ना

(Hope Productions Pvt. Ltd. & Twinkle Khanna)

होप प्रोडक्शन्स प्राइवेट लिमिटेड प्रोडक्शन कंपनी है जिसने मिशन मंगल (2019), पैड मैन (2018), डियर जिंदगी (2016), इंग्लिश विंग्लिश (2012) जैसी फिल्में शामिल हैं।

ट्विंकल खन्ना एक भारतीय लेखक, अखबार की स्तंभकार, फ़िल्म निर्माता और पूर्व फ़िल्म अभिनेत्री हैं।

Hope Productions Pvt. Ltd. is a production company which has produced films like 'Mission Mangal' (2019), 'Pad Man' (2018), 'Dear Zindagi' (2016), 'English Vinglish' (2012).

Twinkle Khanna is an Indian author, newspaper columnist, film producer and former film actress.

प्रशस्ति – महिलाओं के निजी स्वास्थ्य से जुड़े अनकहे पहलुओं को यह फिल्म एक सम्मोहक कथानक द्वारा, सहजता से दर्शाती है।

Citation - An undiscussed social issue of women personal hygiene is narrated compellingly and with aplomb.

पानी

पर्यावरण संरक्षण / परिरक्षण पर सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म

Paani | Best Film on Environment Conservation / Preservation

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,50,000/-

Marathi | 148 Mins | Director: Addinath M. Kothare | **Production Company:** Purple Pebble Pictures | **Screenplay:** Nitin Dixit | **Editor:** Addinath M. Kothare | **DOP:** Arjun Sorte | **Cast:** Addinath M. Kothare, Subodh Bhave, Rajat Kapoor, Girish Joshi, Rucha Vaidya

कथासार - सूखाग्रस्त नागदरवाड़ी गांव में महिलाओं को रोजाना पानी लाने के लिए चार किलोमीटर पैदल चलकर जाना पड़ता है। जब सुवर्णा नागरगोस के माता–पिता को इन मुश्किल परिस्थितियों का आभास होता है, वो वो उसकी सगाई इस गांव के लड़के हनुमंत केंद्रे से तोड़ देते हैं। हनुमंत को सुवर्णा से प्यार है और वो वादा करता है वो उससे तब तक शादी नहीं करेगा जब तक उसके गांव के हर घर में पानी पहुंच नहीं जाता। सच्ची कहानी पर आधारित पानी एक प्यार में पड़े आम आदमी की कहानी है जो अपने आसपास की दुनिया को बदलने के संघर्ष को बयान करती है।

Synopsis - In drought-hit Nagdarwadi village, women have to walk four kms to fetch water every day. When Suvarna Nagargose's parents discover this hardship, they call of her engagement with village boy Hanumant Kendre. Hanumant, already in love with Suvarna, resolves to marry her only but after bringing water at every doorstep in his village. Based on a true story, 'Paani' (Water) is about a common man's struggle to change the world around him, driven by love.

परिचय

आदिनाथ एम कोथारे (Addinath M. Kothare)

आदिनाथ एम कोथारे एक मराठी फिल्म अभिनेता और निर्माता है। उन्होंने अपने निर्देशन की शुरूआत पानी फिल्म से की जिसमें उन्होंनें नायक का किरदार भी निभाया है। इन्होंने करीब 15 फीचर फिल्मों मे अभिनय किया है।

Addinath M. Kothare is a Marathi film actor and producer. He made his directorial debut with 'Paani' in which he also played the protagonist. He has a acted in over 15 feature films.

PROFILE

पर्पल पेबल पिक्चर्च (Purple Pebble Pictures)

पर्पल पेबल पिक्चर्च एक फिल्म निर्माण कंपनी है जिसकी स्थापना अभिनेत्री और निर्माता प्रियंका चौपड़ा ने की थी। इसने कई फिल्मों का निर्माण किया है जिसमें तीन राष्ट्रीय अवार्ड विजेता वेंटिलेटर (2016), वेब सीरीज और टेलीविजन सीरयल्स शामिल हैं।

Purple Pebble Pictures is a film production company established by actress and producer Priyanka Chopra. It has produced several films – including three - National Award-winning 'Ventilator' (2016), web series and television serials.

प्रशस्ति – यह फिल्म सूखे से जूझते एक गाँव की कहानी है, जहाँ गाँववासी एकजुट होकर सबसे महत्वपूर्ण संसाधन पानी को लाने का समाधान ढूंढते हैं।

Citation - The film traces the story of a dry and parched village that comes together to generate their most valuable resource – Water.

सरकारी ही प्रा शाले, कसारागोडु
सर्वश्रेष्ठ बाल फ़िल्म

Sarkari Hi. Pra. Shaale, Kasaragodu | Best Children's Film

स्वर्ण कमल | SWARNA KAMAL ₹ 1,50,000/-

Kannada | 149.16 Mins | Director: Rishab Shetty | **Production Company:** Rishab Shetty Films | **DOP:** Venkatesh Anguraj | **Cast:** Anant Nag, Ranjan, Sampath, Pramod Shetty, Saptha, Prakash Thuminad

कथासार - फिल्म की कहानी केरल के कसारागोडु में एक कन्नड़ भाषी स्कूल के बच्चों की जिंदगी के इर्दगिर्द बुनी हुई है। वहां के बच्चों की खुशियों और शरारतों से भरी जिंदगी पर तब रोक लग जाती है जब कुछ लालची सरकारी अधिकारी स्कूल को बंद कर देते हैं। फिल्म बच्चों के उन साहसिक कारनामों से भरी हुई है जिसके जरिये वो स्कूल को बचाते हैं।

Synopsis - The film revolves around the lives of children of a Kannada-medium school in Kasaragodu, Kerala in India. The joyous and mischief-filled lives of the kids are brought to a halt when some greedy government officials try to shut down the school. The film captures an adventure-filled endeavour of the children to save their school.

परिचय

रिशभ शेट्टी (Rishabh Shetty)

रिशभ शेट्टी एक निर्देशक और अभिनेता हैं इन्होंनें मुख्यतौर पर कन्नड़ सिनेमा के लिए काम किया है। इससे पहले ये दो फिल्मों का निर्देशन कर चुके हैं। रिकी और कार्तिक पार्टी जिसने निर्देशक को कई अवार्ड दिलवाए जिसमें फिल्म फेयर अवार्ड भी शामिल है। सरकारी ही.प्रा. शाले, कसारागोडु इनकी तीसरी फिल्म है।

Rishabh Shetty is a director and actor who primarily works in the Kannada cinema. He has earlier directed two films, 'Ricky', and 'Kirik Party' which won many awards for the director including the Filmfare award. 'Sarkari Hi. Pra. Shaale, Kasaragodu' (SHPSK) is his third film.

PROFILE

रिशभ शेट्टी फिल्म्स (Rishabh Shetty Films)

रिशभ शेट्टी फिल्म्स एक प्रोडक्शन हाउस है जो मुख्यतौर पर कन्नड़ फिल्म उद्योग के लिए काम करता है। इसकी स्थापना 2016 में हुई थी और सरकारी.ही.प्रा. शाले, कसारागोडु इनकी पहली फिल्म है।

Rishabh Shetty Films is a production house predominantly working in Kannada film industry. It was established in the year 2016 and 'Sarkari Hi. Pra. Shaale, Kasaragodu' (SHPSK) is its first film production.

प्रशस्ति – यह फिल्म बच्चों द्वारा राजकीय सीमाओं पर स्थित स्कूलों में भाषा के ऊपर होती राजनीति पर किया गया एक सकारात्मक प्रहार है।

Citation - The film effectively portrays the positive action of children to tackle the issue of language politics in schools located on State borders.

रेवा
सर्वश्रेष्ठ गुजराती फ़िल्म

Reva | Best Gujarati Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

Gujarati | **158 Mins** | **Director:** Rahul Bhole, Vinit Kanojia | **Production Company:** Brainbox Studios, Baroda Talkies | **Screenplay:** Rahul Bhole, Vinit Kanojia | **Editor:** Rahul Bhole, Vinit Kanojia | **DOP:** Suraj C Kurade | **Based on:** 'Tatvamasi' by Dhruv Bhatt | **Cast:** Chetan Dhanani, Monal Gajjar, Prashant Barot, Yatin Karyekar, Muni Jha, Daya Shankar Pandey, Abhinay Banker

कथासार - 25 साल के अप्रवासी भारतीय करण के दादा गुजरने से पहले अपनी सारी दौलत और वसीयत गुजरात में नर्मदा के किनारे बसे एक आश्रम को दान कर देते हैं। अपनी पैतृक संपत्ति हासिल करने का करण के पास अब एक ही जरिया है, उसे आश्रम के लोगो को अनापत्ति पत्र (नो ओब्जेक्शन सर्टिफिकेट) पर दस्तखत करने के लिए मनाना होगा। करण भारत आता है और दूरदराज में मौजूद आश्रम के सफर पर निकलता है, जहां उसका सामना नदी किनारे रहने वाले स्थानीय लोगों, भक्तों, संतो से होता है। वो संस्कृति, रिवाज, आस्था को समझने की कोशिश करता है, जो उस जगह से बिल्कुल ही अलग है जहां पर वो पला बढ़ा है। हालांकि वो अपने स्वार्थ को पूरा करने में सफल हो जाता है लेकिन इसे खुद को लेकर एक कड़वी सच्चाई का भी अहसास होता है और उसके अंदर मौजूद सारा अहंकार और लालच धुल जाता है।

Synopsis - Twenty-five years old NRI Karan's grandfather passes away, giving away all his wealth in his will for charity to an Ashram located on the banks of Narmada river in Gujarat. Now, the only way Karan could redeem his ancestral wealth was by convincing the Ashram to sign a No Objection Certificate. Karan comes back to India and embarks on a journey to the remote Ashram. There, he comes in touch with locals living on the river bank, devotees and saints. He tries to understand the culture, customs and beliefs which are different from where he was brought up. Though he succeeds in his 'selfish work', he also comes to know of a bitter truth of his existence and he loses all his ego and greed.

परिचय

विनीत कनोजिया, राहुल भोले (Rahul Bhole, Vinit Kanojia)

राहुल भोले 15 से अधिक लघु फिल्में, वृत्तचित्र, विज्ञापन फिल्में और कॉरपोरेट फिल्में का निर्देशन कर चुके हैं। इन्होंने एक गुजराती टीवी शो के करीब 400 एपिसोड लिखे हैं।

विनीत कनोजिया एक पुरस्कार विजेता स्वतंत्र फिल्म और वृत्तचित्र निर्माता है।

Rahul Bhole has directed over 15 short films, documentaries, ad films and corporate films. He has written more than 400 episodes for a Gujarati TV show.

Vinit Kanojia is an award-winning independent film and documentary maker.

PROFILE

ब्रेनबॉक्स स्टूडियोज (Brainbox Studios)

ब्रेनबॉक्स स्टूडियोज गुजरात स्थित एक प्रोडक्शन कंपनी है जिसकी स्थापना परेश वोरा ने की थी। रेवा इनकी पहली फीचर फिल्म है।

Brainbox Studios is a Gujarat-based film production company founded by Paresh Vora. Its first feature film production is 'Reva'.

प्रशस्ति – फिल्म एक विदेश में बसे भारतीय का सांसारिक से आध्यात्मिक होने का सफर दर्शाती है।
Citation - The film depicts the transformation from material to spiritual journey of an NRI.

हरजीता
सर्वश्रेष्ठ पंजाबी फ़िल्म

Harjeeta | Best Punjabi Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

Punjabi | 129 Mins | Director: Vijay Kumar Arora | **Production Company:** Sizzlen Productions | **Screenplay:** Jagdeep Sidhu | **Editor:** Bunty Nagi | **DOP:** Rajeev Shrivastava | **Cast:** Ammy Virk, Sawan Rupowali, Sameep Ranaut, Pankaj Tripathi

कथासार - हरजीता, एक उपेक्षित लड़के की सच्ची कहानी है जो कई विषम परीस्थितियों से गुजरते हुए सफलता हासिल करता है। हरजीत सिंह, एक ट्रक ड्राइवर का बेटा है जो बेहद गरीबी से निकलकर एक पेशेवर भारतीय हॉकी प्लेयर बना। आगे चलकर वो 2016 के पुरुष जूनियर हॉकी वर्ल्ड कप का कप्तान बना, जहां भारत ने 15 साल बाद गोल्ड मेडल हासिल किया।

Synopsis - 'Harjeeta' is based on the remarkable true story of an underdog who fights against all odds to come out as a winner. Harjeet Singh, son of a truck driver, overcame acute poverty to become a professional Indian hockey player. He went on to captain the Indian squad at the 2016 Men's Hockey Junior World Cup where India eventually won a Gold medal after 15 years.

परिचय

विजय कुमार अरोरा (Vijay Kumar Arora)

विजय कुमार अरोरा (विजय अरोरा) एक सिनेमेटोग्राफर हैं। इन्होंने रोंदे सारे व्याह पिच्छो (2013) से निर्देशन की कमान संभाली, और आगे चलकर हरजीता (2018) और गुड्डियां पटोले (2019) का निर्देशन किया। बतौर सिनेमेटोग्राफर इनके नाम पर चालीस फिल्में हैं।

Vijay Kumar Arora, aka Vijay Arora, is a cinematographer. He turned director with 'Ronde Sare Vyah Picho' (2013), followed by 'Harjeeta' (2018) and 'Guddiyan Patole' (2019). He has to his credit as a cinematographer over forty films.

PROFILE

सिज्लेन प्रोडक्शन्स (Sizzlen Pproductions)

सिज्लेन प्रोडक्शन्स एक फिल्म प्रोडक्शन हाउस है जिसकी कमान मुनीश साहनी के हाथों में है। वे पंजाबी फिल्म जैसे हरजीता, अश्के, गोलक बुगनी बैंक ते बटुआ, दिल दिया गल्लां जैसी फिल्मों के निर्माता और सह–निर्माता रह चुके हैं।

Sizzlen Productions is a film production house owned by Munish Sahni. He has produced and co-produced Punjabi movies such as 'Harjeeta', 'Ashke', 'Golak Bugni Bank Te Batua', 'Dil Diyan Gallan'.

प्रशस्ति – एक हॉकी के खिलाड़ी की जीवनी जो अपने रूढ़िवादी परिवेश और गरीबी से ऊपर उठता है और अपने खेल में उच्चतम स्थान प्राप्त करता है।
Citation - A biopic of a Hockey player, who struggles through his rural background and poverty to rise to the top of his game.

बुलबुल कैन सिंग
सर्वश्रेष्ठ असमिया फ़िल्म

Bulbul Can Sing | Best Assamese Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

Assamese | **95 Mins** | **Director:** Rima Das | **Production Company:** Flying River Films | **Story, Screenplay, Dialogue:** Rima Das | **Editor:** Rima Das | **DOP:** Rima Das | **Cast:** Arnali Das, Manoranjan Das, Banita Thakuria, Manabendra Das, Deepjyoti Kalita

कथासार - सूर्योदय और सूर्यास्त की रोशनी में डूबी यह फिल्म तीन ऐसे दोस्तों की कहानी है जो युवावस्था की दहलीज पर है। कहानी की प्रमुख किरदार है एक बुलबुल जो लोगों के सामने आते ही गा नहीं पाती। बोनी और सुमन को असफलता के डर और खुद पर अविश्वास ने घेर रखा है क्योंकि वह पुरुष की पारंपरिक छवि पर खरे नहीं उतरते. पहले प्यार के अनुभव ने इन तीनों को उम्मीदों और नैतिकता के दबाव में डाल दिया है। प्यार और दर्द से गुजरती बुलबुल खुद को करीब से जान पाती है और गाना शुरू करती है।

Synopsis - In the atmospheric light of dusk and dawn, the film portrays the lives of three friends on the threshold of adulthood. The story's protagonist is Bulbul, the nightingale, whose voice fails her when she has to sing in front of people. Fear of failure and self-doubt also plague the fragile Bonny, and Suman, who does not fulfil the traditional male image. The experience of first love puts the three teenagers under the pressure of high expectations and strict moral codes. Going through love and sufferings, Bulbul figures out who she is and begins to sing.

परिचय

रीमा दास (Rima Das)

स्वशिक्षित फिल्मकार, **रीमा दास** एक पटकथा लेखक, निर्माता, निर्देशक, सिनेमेटोग्राफर और एडिटर हैं। इनकी फिल्म 'विलेज रॉकस्टार' (2017) करीब 80 से अधिक फिल्म महोत्सवों में प्रदर्शित की गई और 2018 के सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म के राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार सहित करीब 50 से अधिक पुरस्कारों से नवाज़ी गई। ये भारत की तरफ से 2018 ऑस्कर की आधिकारिक प्रविष्टि भी रही।

A self-taught filmmaker, **Rima Das** is a screenwriter, producer, director, cinematographer and editor for her films. Her film 'Village Rockstars' (2017) was screened at over 80 film festivals and bagged over 50 Awards including the National Film Awards as the Best Feature Film and was India's Official Entry to the Oscars in 2018.

PROFILE

फ्लाइंग रिवर फिल्म्स (Flying River Films)

Flying River Films

फ्लाइंग रिवर फिल्म्स असम और मुंबई स्थित एक प्रोडक्शन हाउस है जो खासतौर पर रचनात्मक स्वतंत्र फिल्मकारों और ठेठ देसी विषयों पर काम करता है। इसी प्रयास की बदौलत कई बेहतरीन फिल्में सामने आ पाई हैं।

Flying River Films is a production house based in Assam and Mumbai in India. Focusing on tapping indigenous and creative independent filmmakers, Flying River Films endeavours to bring beautiful films to the forefront.

प्रशस्ति – असम की पृष्ठभूमि में नौजवानों के एक गुट की कठिनाइयां, मेहनत और उम्मीदों को बखूबी दर्शाने के लिए।

Citation - For capturing the trials, tribulations and aspirations of a group of teenagers in a rural Assamese backdrop.

अमोरी
सर्वश्रेष्ठ कोंकणी फ़िल्म

Amori | Best Konkani Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

Konkani | 107 Mins. | Director: Dinesh P. Bhonsle | **Production Company:** Opus Ga La | **Cast:** Salil Naik, Sobita Kudtarkar, Mayur Mayekar, Prashanti Talpankar, Tanmay Kharpe, Shaina Mirashi

कथासार - शिरीष केलेकर 25 साल पहले गोवा छोड़कर लंदन में बस चुका है। एक दिन उसका बीता हुआ कल उसे वापस अपने घर के रास्ते पर जाने को मजबूर कर देता है। अब, उसे अपने घर के साथ टूटे हुए रिश्तों, एक ताकतवर राजनीति और सबसे अहम गांव के संसाधनों से जुड़े कड़वे सच का सामना करना है। क्या वो अपने लोगों को उन बातों के लिए जागरुक कर पाएगा जो काफी वक्त से नजरअंदाज की जा रही थी? फिल्म दिखाती है कि किस तरह जो लोग समाज की बेहतरी के लिए कुछ करना चाहते हैं वो अक्सर कदम कदम पर पारिस्थितिकी तंत्र की उपेक्षा के साथ साथ लोगों के विरोध का सामना करते हैं।

Synopsis - Shirish Kelekar left Goa and got settled in London 25 years ago. One day, his past comes back to haunt him, taking him all the way back to his native place. Now, he must deal with broken family ties, a powerful politician and most importantly, the harsh reality of the village resources. Can he make the community aware of something it has ignored for so long? The film shows how people working for the betterment of society often face resistance from various quarters along with the negligence of the ecosystems.

परिचय

दिनेश भोंसले (Dinesh P. Bhonsle)

दिनेश भोंसले मराठी फिल्मों के निर्देशक, निर्माता और पटकथा लेखक हैं। वे एक ऑडियो–विजुअल आर्टिस्ट हैं जिनकी शिक्षा–दीक्षा थियेटर में हुई है। इन्हें अपनी फिल्म एनिमी? (2015) के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ था।

Dinesh Bhonsle is a director, producer and screenplay writer in the Marathi film Industry. He is an audio-visual artist with an academic background in theatre. He won a National Film Award for his film 'Enemy?' (2015).

PROFILE

ओपस गा ला (Opus gala)

ओपस गा ला कला और संस्कृति को बढ़ावा देने वाला एक संस्थान है जो संस्थाओं की स्थापना और कार्यक्रमों का आयोजन करके इस काम को आगे बढ़ा रहा है।

Opus Gala is an association formed to Promote Art & Culture by imparting knowledge through the establishment of institutions and organising events.

प्रशस्ति – एक व्यक्ति के प्रयास और मेहनत की कहानी जहां वह अपने पिछले कर्मों को सही कर उनसे उबरने की कोशिश करता है।
Citation - An individual's effort and struggle to correct and overcome a past event.

नाथिचरामी
सर्वश्रेष्ठ कन्नड़ फ़िल्म

Nathicharami | Best Kannada Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

Kannada | **126 Mins** | **Director:** Mansore | **Production Company:** Tejaswini Enterprises | **Screenplay:** Mansore | **Editor:** Nagendra K. Ujjani | **DOP:** Guruprasad Narnad | **Cast:** Sruthi Hariharan, Sanchari Vijay, Sharanya

कथासार - ये फिल्म एक ऐसी नायिका की निजी जिंदगी पर आधारित है जिसका जीवन और बाकी सब कुछ शारीरिक जरूरत से जुड़ी सामाजिक वर्जनाओं में फंसा हुआ है। गौरी एक आधुनिक, पढ़ी लिखी, आत्मनिर्भर विधवा है जो आई टी सेक्टर में काम करती है. वहीं सुरेश अपनी शादीशुदा जिंदगी से नाखुश है और प्यार की तलाश में है। क्या होता है जब गौरी और सुरेश मिलते हैं। और किस तरह से वो एक दूसरे को समझ पाते हैं, इसी में छुपा है नाथिचरामी का सार।

Synopsis - This film is woven around the female protagonist whose personal life and her overall being is stuck within the social taboos related to carnal desires. Gowri is a modern, well-educated, independent widow, working in the IT sector; while Suresh leads an unhappy married life who is on a quest to find the love of his life. What happens when Gowri and Suresh meet; and how do they come to terms with each other mark the essence of 'Nathicharami'.

परिचय

मंसोरे (Mansore)

मंजूनाथ सोमेक्ष रेड्डी उर्फ **मंसोरे**, कन्नड़ सिनेमा में एक विजुअल आर्टिस्ट से फिल्म निर्माता बनें। इनकी पहली फिल्म हरिवु (2014) ने 2015 में सर्वश्रेष्ठ क्षेत्रीय भाषा का राष्ट्रीय अवार्ड जीता था। नाथिचरामी ने पांच राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार और तमाम तरह की सराहना हासिल की है।

Mansore, aka Manjunatha Somakesha Reddy, is a visual artist-turned-filmmaker in Kannada cinema. His debut film 'Harivu' (2014) won the National Awards for best regional film in 2015. 'Nathicharami' has won five National Film Awards and other accolades.

PROFILE

तेजस्विनी एंटरप्राइजेज (Tejaswini Enterprises)

Tejaswini Enterprises

तेजस्विनी एंटरप्राइजेज की कमान रमेश रेड्डी के हाथों में है और ये एक स्वतंत्र फिल्म प्रोडक्शन हाउस है जो खासतौर पर कन्नड़ में समानांतर सिनेमा पर केंद्रित है। ये कन्नड़ फिल्म उद्योग के उन चंद प्रोडक्शन स्टूडियोज में से है जिनके पास फिल्म निर्माण का संपूर्ण सेटअप मौजूद है।

Tejaswini Enterprises, headed by Ramesh Reddy, is an independent film production house focused primarily on the parallel wave of Kannada cinema. It is one of the main production studios in Kannada film industry with complete set up of filmmaking.

प्रशस्ति – एक आधुनिक महिला का तय मानक और नैतिक विचारों से जूझना, जिसे संयम और संवेदना से दर्शाया गया है।
Citation - Poignantly and sensitively capturing a modern day women's conflict with set norms, mores and values.

महानटी
सर्वश्रेष्ठ तेलुगू फ़िल्म

Mahanati | Best Telugu Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

Telugu | 177 Mins | Director: Nag Ashwin Reddy | **Production Company:** Vyjayanthi Movies, Swapna Cinema | **Screenplay:** Nag Ashwin Reddy | **Editor:** Kotagiri Venkateswara Rao | **DOP:** Dani Sanchez-Lopez | **Cast:** Keerthy Suresh, Dulquer Salmaan, Samantha Akkineni, Vijay Devarakonda

कथासार - महानटी, दक्षिण की महान अभिनेत्री सावित्री का वृतांत जीवन बयान करती है जिन्होंने 50 और 60 के दशक में फिल्म उद्योग में तूफ़ान ला दिया था। फिल्म की कहानी उनकी जिंदगी के कई बुरे दौर के जरिये आगे बढती है और बताती है कि किस तरह तमाम विषम परिस्थितियों का सामना करते हुए अंत में उन्होंने जिंदगी को अपनी तरह से जिया।

Synopsis - 'Mahanati' chronicles the life of legendary southern actor Savitri who took the film industry by storm in the late 50s and 60s. The film goes through various tragic incidents in her personal life, and how she stood up against all odds and the result of her choices in life.

परिचय

नाग अश्विन रेड्डी (Nag Ashwin Reddy)

नाग अश्विन रेड्डी एक भारतीय फिल्म निर्देशक और पटकथा लेखक हैं जो तेलुगु सिनेमा में किए अपने काम के लिए जाने जाते हैं। इन्होने अपने निर्देशन की शुरूआत आधुनिक पीढ़ी के फलसफे पर आधारित ड्रामा येवादे सुब्रमन्यम के साथ की। महानटी इनकी दूसरी फीचर फिल्म है।

Nag Ashwin Reddy is an Indian film director and screenwriter known for his works in Telugu cinema. He made is directorial debut in 2015 with the coming-of-age philosophical drama 'Yevade Subramanyam'. 'Mahanati' is his second feature film.

PROFILE

स्वपना सिनेमा (Swapna Cinema)

स्वपना सिनेमा एक मनोरंजन कपंनी हैं जिसकी स्थापना स्वपना दत्त और प्रियंका दत्त ने वैजयंती फिल्म के साथ मिलकर की।

Swapna Cinema is an entertainment company founded by Swapna Dutt and Priyanka Dutt in association with Vyjayanthi Films.

प्रशस्ति – एक महान तेलुगू अभिनेत्री की जीवनी बखूबी दर्शायी गई है।
Citation - Biopic of a great Telugu actress effectively told.

सुडानी फ्रॉम नाइजीरिया
सर्वश्रेष्ठ मलयालम फ़िल्म

Sudani From Nigeria | Best Malayalam Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

Malayalam | 124 Mins | Director: Zakariya Mohammed | **Production Company:** Happy Hours Entertainments | **Screenplay:** Zakariya Mohammed, Muhsin Parari | **Editor:** Naufal Abdullah | **DOP:** Shyju Khalid | **Cast:** Soubin Shahir, Samuel Abiola Robinson

कथासार - माजिद केरल के मल्लापुरम में रहने वाला एक फुटबॉल प्रेमी है। वो स्थानीय प्रतियोगिताओं के लिए विदेशी खिलाड़ियों के नियुक्ति एजेंट के तौर पर काम करता है। सेम्युअल नाम के एक नाइजीरियन खिलाड़ी को वो टीम में रखता है लेकिन उसकी पीठ बुरी तरह से चोटिल हो जाती है और उसे दो महीने के आराम की सलाह दी जाती है जिसके बाद माजिद उसे अपने घर ले जाता है। एक विदेशी फुटबॉल खिलाड़ी की मेजबानी करना और दोनों के फुटबॉल के प्रति लगाव से माजिद के पड़ोसी और रिश्तेदार भी सेम्युअल को बहुत अच्छे से रखते हैं। लेकिन जल्दी ही इस खूबसूरत दोस्ती पर कानून के नाम पर सरकारी अधिकारी संकट खड़ा कर देते हैं।

Synopsis - Majid, a typical football lover from Malappuram in Kerala, works as a recruitment agent of foreign players for local tournaments. When Samuel, a Nigerian footballer hired by him, suffers a severe back injury and is advised two months' bed rest, Majid is obliged to take him home. Ecstatic to host a foreign footballer and common love for football, Majid's relatives and neighbourhood shower their love on Samuel. But soon the beautiful story of friendship is disrupted by the state officials in the name of law.

परिचय

जकारिया मोहम्मद (Zakariya Mohammed)

जकारिया मोहम्मद एक फिल्म निर्देशक, लेखक और अभिनेता हैं जिन्होंने मलयालम फिल्म उद्योग के लिए काम किया है। जकारिया ने तीन लघु फिल्में और एक वृत्तचित्र का निर्देशन किया है जिसे विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सवों में प्रदर्शित किया गया है। 'सुडानी फ्रॉम नाइजीरिया' उनके निर्देशन में बनी पहली फीचर फिल्म है।

Zakariya Mohammed is an Indian film director, writer and actor who works in Malayalam Films. He is from Valanchery, Malappuram. Zakariya is best known for his directorial debut 'Sudani from Nigeria'.

PROFILE

हेप्पी आर्स एंटरटेनमेंट (Happy Hours Entertainments)

हेप्पी आर्स एंटरटेनमेंट एक फिल्म प्रोडक्शन कंपनी है जो मलयालम फिल्म उद्योग से जुड़ी हुई है। इसकी स्थापना विख्यात सिनेमेटोग्राफर समीर ताहिर और शायजु खालिद ने की है। इनकी पहली फिल्म नीलाक्षम पचाकदल छुवन्ना भूमि 2013 में आई थी।

Happy Hours Entertainments is a film production company associated with the Malayalam film industry. It was established by acclaimed cinematographers Sameer Thahir and Shyju Khalid, and its first film 'Neelakasham Pachakadal Chuvanna Bhoomi' released in 2013.

प्रशस्ति – यह फ़िल्म खेलों के परिदृश्य में माँ बेटे के रिश्ते की भावनाओं की जटिलता की पड़ताल करती है।
Citation - With a backdrop of sports, the film explores the complexity of emotions in a mother-son's relationships.

एक जे छिलो राजा
सर्वश्रेष्ठ बांग्ला फ़िल्म

Ek Je Chhilo Raja | Best Bengali Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

Bengali | 147 Mins. | Director: Srijit Mukherji | **Production Company:** SVF Entertainment Pvt. Ltd. | **Screenplay:** Srijit Mukherji | **Editor:** Pronoy Das Gupta | **DOP:** Gairik Sarkar | **Cast:** Jisshu U. Sengupta, Jaya Ahsan, Anjan Dutt, Aparna Sen, Rudranil Ghosh, Anirban Bhattacharya, Rajnandini Paul

कथासार - 'एक जे छिलो राजा' बेहद हल्के फुल्के अंदाज में बताती है कि क्या होता है जब सामंती भारत और आध्यात्मिक भारत मिलते हैं। 1909 में, ब्रिटिश इंडिया में सांमतवाद का जोर पूरे चरम पर था और राष्ट्रवाद पनप रहा था। ऐसे हालात में एक सामंती को एक साजिश के तहत जहर दे दिया जाता है लेकिन कोमा से बाहर आते ही वह दाह संस्कार से भाग निकलता है। 12 साल बाद एक संन्यासी जिसके नैन नक्श विचित्र रूप से सामंती राजा से मिलते हैं, अपने साम्राज्य पर दावा करने लौट आता है और ब्रिटिश सरकार को ब्रिटिश अदालत में ले जाता है जहां उनका पक्ष एक राष्ट्रवादी भारतीय वकील रखता है। आगे की कहानी भारतीय न्यायिक इतिहास की लाजवाब गाथा को बयान करती है।

Synopsis - 'Ek Je Chhilo Raja' is a subtle take on what happens when Feudal India meets Spiritual India. In 1909, British India was a heady concoction of feudalism and early nationalism. In this backdrop, a feudal lord is poisoned in a conspiracy, but escapes cremation by slipping out of coma. Twelve years later, an ascetic with uncanny physical similarities returns to claim his kingdom and takes on the British in a British court defended by a nationalistic Indian lawyer. What follows is an incredible saga from the annals of Indian judicial history.

परिचय

श्रीजित मुखर्जी (Srijit Mukherji)

श्रीजित मुखर्जी एक फिल्मकार, पटकथा लेखक और गीतकार है, जिन्हें 'ऑटोग्राफ' (2010), 'बायेशे श्रबन' (2011)। 'जातिश्वर' (2014) के लिए जाना जाता है, जिसने 2014 में चार राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार जीते थे। इनकी 'राजकहिनी' और 'उमा' इफ्फी के लिए चुनी गई थी।

Srijit Mukherji is a filmmaker, screenwriter and lyricist. His 'Jaatishwar' won four National Film Awards in 2014, while 'Chotuskone' won two in 2015. His 'Rajkahini' and 'Uma' were selected for IFFI.

PROFILE

एसवीएफ एंटरटेन्मेंट (SVF Entertainment)

एसवीएफ एंटरटेन्मेंट पूर्वी भारत की एंटरटेन्मेंट कंपनी है, जो 135 से ज्यादा फिल्मों का निर्माण कर चुकी है जिसमें राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता 'चोखेर बाली' 'रेनकोट' शामिल है।

SVF Entertainment is Eastern India's largest entertainment company. It has produced over 135 films including National Award-winning 'Chokher Bali' and 'Raincoat'.

प्रशस्ति – सत्य कहानी पर आधारित, यह फिल्म एक राजा की अपनी पहचान बनाने के सफर को दिखाती है।

Citation - xBased on a true story, the film traces the journey of a Maharaja through his quest for identity.

हामिद
सर्वश्रेष्ठ उर्दु फ़िल्म

Hamid | Best Urdu Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

Urdu | 108 Mins | Director: Aijaz Khan | **Production Company:** Saregama Films, Yoodlee Films | **Screenplay:** Ravinder Randhawa | **Editor:** Afzal Shaikh | **DOP:** John Wilmor | **Cast:** Rasika Dugal, Vikas Kumar, Talha Arshad Reshi

कथासार - 786 नंबर को लेकर 8 साल का हामिद हमेशा असमंजस में रहता है। एक दिन उसे एक शिक्षक बताते हैं कि ये ऊपर वाले का नंबर होता है। अपने पिता के खोए हुए पुराने फोन में वो अलग अलग नंबर लगाता है और आखिरकार उसका फोन एक आदमी को लग जाता है जो उसे लगता है कि वो अल्लाह है। दूसरी तरफ अभय नाम का एक सीआरपीएफ का जवान होता है जो पहले तो इन सबमें दिलचस्पी नहीं दिखाता लेकिन बाद में उसे हामिद से बात करने में मजा आने लगता है। इस तरह दो अंजान लोग अंजाने में, एक दूसरे की दुनिया में बेहतर बदलाव लाते हैं।

Synopsis - The number 786 always bewildered eight-year-old Hamid. One day a teacher tells him that this is God's number. Trying different combinations on his missing father's old mobile phone, he gets connected to a person he believes is God. On the other side is Abhay, a CRPF jawan who is disinterested initially but ends up entertaining Hamid. These two, unknowingly and unintentionally, change each other's world for the better.

परिचय

ऐजाज खान (Aijaz Khan)

फिल्म निर्देशक **ऐजाज खान** की पहली फिल्म द व्हाइट एलिफेंट (2009) भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव (इफ्फी) में प्रीमियर की गई थी। ये फिल्म 10 से भी ज्यादा फिल्म महोत्सवों में प्रदर्शित की गई। ऐजाज 2010 में राष्ट्रीय फिल्म अवार्ड्स के निर्णायक मंडल में भी थे। ऐजाज 2015 में 'बांके की क्रेजी बारात' फीचर फिल्म का निर्देशन भी कर चुके हैं।

Film director **Aijaz Khan's** debut film 'The White Elephant' (2009) premiered at the International Film Festival of India (IFFI). It traveled to more than 10 film festivals. He was also part of the National Film Awards jury in 2010. He also directed feature film 'Baankey Ki Crazy Baraat' in 2015.

PROFILE

सिद्धार्थ आनंद कुमार (Siddharth Anand Kumar)

सिद्धार्थ आनंद कुमार निर्देशक, एडिटर, सिनेमेटोग्राफर और लेखक के तौर पर फिल्म और टीवी जगत में पिछले 15 सालों से अपना योगदान दे रहे हैं। वर्तमान में सारेगामा इंडिया लिमिटेड के लिए फिल्म और टीवी की कमान संभाल रहे हैं।

Siddharth Anand Kumar studied filmmaking at Hampshire college and has worked as a director, editor, cinematographer and writer over a career spanning 15 years in film and TV. He currently heads film and TV for Saregama India Ltd.

प्रशस्ति – धर्म और जिन्दगी के बारे में एक बच्चे का नजरिया जो अपने खोए पिता को ढूंढ रहा है।
Citation - A child's perspective of religion and life, as he searches for his lost father.

अंधाधुन
सर्वश्रेष्ठ हिन्दी फ़िल्म

Andhadhun | Best Hindi Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

Hindi | **150 Mins** | **Director:** Sriram Raghavan | **Production Company:** Viacom18 Motion Pictures | **Screenplay:** Sriram Raghavan, Arijit Biswas, Yogesh Chandekar, Hemanth Rao, Pooja Ladha Surti | **Editor:** Pooja Ladha Surti | **DOP:** K.U. Mohanan | **Cast:** Tabu, Ayushman Khurrana, Radhika Apte

कथासार - आकार एक नेत्रहीन प्यानों प्लेयर हैं जो लंदन म्यूजिक कंसर्ट के लिए तैयारी कर रहा है। अचानक हुई एक मुलाकात के बाद, सोफी और आकाश दोस्त बन जाते हैं, उसके प्यानो बजाने के हुनर को पहचानते हुए, सोफी उसे अपने पिता के रेस्टोरेंट में ले जाती है जहां उसे नौकरी मिल जाती है। इसी रेस्टोरेंट में आकाश की मुलाकात एक गुजरे जमाने के एक अभिनेता प्रमोद सिन्हा से होतीी है, जो उससे अपनी पत्नी सिमी के लिए निजी तौर पर प्यानो बजाने का आग्रह करता है। वो अपनी पत्नी को एक सरप्राइज देना चाहता है। सिन्हा के घर पर, आकाश जो शायद ये दर्शाता है कि वो नेत्रहीन है, ना चाहते हुए पूर्व अभिनेता के कत्ल का गवाह बन जाता है और जाने ना अंजाने कई समस्याओं में घिरता जाता है।

Synopsis - Akash, a blind piano player, is preparing for a London music concert. After an accidental encounter, Sophie and Akaksh become friends. Recognising his talent as a pianist, Sophie takes him to her father's restaurant where he lands up a job. At the restaurant, Akash meets a yesteryears' actor Pramod Sinha who asks him to do a private piano session for his wife Simi, as a surprise present to her. At Sinha's house, the murder of the former film actor takes place as Akash plays the piano. Akash, who may be pretending to be visually-impaired, unwittingly becomes entangled in a number of problems soonafter.

परिचय

श्रीराम राघवन (Sriram Raghavan)

श्रीराम राघवन एक भारतीय फिल्म निर्देशक और पटकथा लेखक हैं। इन्होंने भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, पुणे से स्नातक किया है। इनकी डिप्लोमा फिल्म 'दि एट कॉलम अफेयर' ने 1987 में सर्वश्रेष्ठ लघु फिल्म के लिए राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार हासिल किया था।

Sriram Raghavan is an Indian film director and screen writer. He is a graduate of Film and Television Institute of India (FTII), Pune. His diploma Film 'The Eight Column Affair', won National Film Award for Best Short Fiction Film in 1987.

PROFILE

वायाकॉम 18 स्टूडियोज (Viacom18 Studios)

वायाकॉम 18 स्टूडियोज, मुबंई स्थित वायाकॉम 18 की एक सहायक कंपनी है जो भारत की पहली स्टूडियो मॉडल पर आधारित मोशन पिक्चर और कंटेट निर्माण करने वाली कंपनियों में से एक है।

Viacom18 Studios, a subsidiary of the Mumbai-based Viacom 18, is one of the first studio model-based motion picture and content production business in India.

प्रशस्ति – फिल्म षड़यंत्र और सृजनात्मकता का एक दिलचस्प समागम है।
Citation - The film is a judicious mix of intrigue and creativity.

बारम
सर्वश्रेष्ठ तमिल फ़िल्म

Baaram | Best Tamil Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

Tamil | 92 Mins | Director, Screenplay & Editor: Priya Krishnaswamy | **Production Company:** Reckless Roses | **DOP:** Jayanth Mathavan | **Cast:** R. Raju, Sugumar Shanmugam, SuPa Muthukumarm, Jayalakshmi, Stella Gobi

कथासार - करुप्पासमी, एक विधुर है जो चौकीदारी का काम करता है, वो अपनी बहन और तीन भाजें भांजियों – वीरा, मणि, और मुरुगन के साथ तमिलनाडु के एक छोटे से शहर मे रहता है. एक सुबह जब वो अपनी शिफ्ट करके लौट रहा होता है तब दुर्घटना में उसके कुल्हे में चोट लग जाती है। इसके भांजे चाहते हैं कि उसका इलाज शहर में करवाया जाए, वहीं उसका बेटा सेंथिल उसे परंपरागत तरीकों से इलाज करवाने के लिए अपने पैतृक गांव के वैद्य के पास ले जाता है। आठ दिनों के बाद करुप्पासमी मर जाता है। उसके अंतिम संस्कार के दौरान वीरा को कुछ ऐसा सुनाई पड़ता है जिससे उसे गहरा धक्का लगता है, आखिर करुप्पासमी की मौत कैसे हुई?

Synopsis - Karuppasamy, a widowed night watchman, lived with his sister and three nephews – Veera, Mani and Murugan – at a small town in Tamil Nadu. While returning from his shift one morning, he breaks his hip in an accident. While his nephews want him to be treated in town, his son Senthil takes him to his ancestral village for a treatment by a traditional healer. After eight days, Karuppasamy dies. At his funeral, Veera hears something that makes his blood run cold. How did Karuppasamy die…?

परिचय

प्रिया कृष्णास्वामी (Priya Krishnaswamy)

प्रिया कृष्णास्वामी एफटीआईआई, पुणे से ताल्लुक रखती हैं और एक राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार विजेता हैं। इन्होंने ओम दर ब दर (1988), पर्सी (1989), काफिला (1990), बॉम्बे बॉयज (1998), भोपाल एक्सप्रेस (1999) जैसी फिल्मो की एडिटिंग की है। गंगूबाई के बाद, बारम इनके निर्देशन में बनी दूसरी फिल्म है।

Priya Krishnaswamy is a National Award-winning filmmaker from the FTII, Pune. She has edited films like 'Om Dar-b-Dar' (1988), 'Percy' (1989), 'Kaafila' (1990), 'Bombay Boys' (1998), 'Bhopal Express' (1999), etc. After 'Gangoobai', 'Baaram' is her second film as director.

PROFILE

रेकलेस रोजेज (Reckless Roses)

Reckless Roses

रेकलेस रोजेज एक फिल्म प्रोडक्शन हाउस है जो अपनी फिल्म बारम (2018) के लिए जानी जाती है।

Reckless Roses is a production house known for producing 'Baaram' (2018).

प्रशस्ति – एक तमिल गाँव में इच्छामृत्यु की प्राचीन व्यवस्था को उजागर करने की एक आदमी की लड़ाई।
Citation - A man's fight to expose the traditional practice of euthanasia in a Tamil village.

भोंगा
सर्वश्रेष्ठ मराठी फ़िल्म

Bhoangaa | Best Marathi Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

Marathi | 93.52 Mins | Director: Shivaji Lotan Patil | **Production Company:** Nalinee Productions | **Screenplay:** Nishant Dhapase, Shivaji Lotan Patil | **Cast:** Dipti Dhotre, Amol Kagne, Kapil Kamble Gudsurkar

कथासार - एक गांव में, लाउडस्पीकर पर अजान की घोषणा होने के दौरान, एक नौ महीने का बच्चा सो नहीं पाता है और लगातार रोता रहता है। उसके परिवार को अहसास होता है कि बच्चा लाउडस्पीकर के शोर की वजह से परेशान हो रहा है। वह मस्जिद के मुअज़्जिन से प्रार्थना करते हैं कि वह बगैर लाउडस्पीकर के अजान की घोषणा कर दें या उसकी जगह बदल दें, लेकिन वो इससे साफ इंकार कर देता है। एक दिन बच्चा मर जाता है, इससे पूरा गांव हैरान हो जाता है। उसका पिता मुअज़्जिन पर इल्जाम लगाता है और उसे बच्चे के अंतिम संस्कार से दूर रहने को बोलता है। मुअज़्जिन को पछतावा होता है और वो अजान बगैर लाउडस्पीकर के देना शुरू कर देता है।

Synopsis - In a village, during Azaan announcements on a loudspeaker, a nine-month-old child is unable to sleep and crises incessantly. His family realises that the child is suffering due to the loudspeaker's noise. They request the Mosque's muezzin to call Azaan without the loudspeaker or shift it, but he declines. One day the child dies, leaving the villagers shocked. His father blames the muezzin and asks him to stay away from the child's funeral. Remorseful, the muezzin begins to give Azaan without a loudspeaker.

परिचय

शिवाजी लोटन पाटिल (Shivaji Lotan Patil)

शिवाजी लोटन पाटिल एक हिंदी और मराठी फिल्म निर्देशक हैं। उनके निर्देशन की शुरूआत मराठी फिल्म 'ववतल' और हिंदी में 'के–5' से हुई। उनकी अगली फिल्म 'धाग' (2014) ने तीन राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार जीते।

Shivaji Lotan Patil is a Marathi and Hindi film director. He made his directorial debut with 'Vavtal' in Marathi and 'K-5' in Hindi. His next film 'Dhag' 2014 won three National Film Awards.

PROFILE

नलिनी प्रोडक्शन्स (Nalinee Productions)

नलिनी प्रोडक्शन्स मुंबई स्थित प्रोडक्शन हाउस है।

Nalinee Productions is a Mumbai-based film production company.

प्रशस्ति – यह फिल्म आध्यात्म और बिना सोचे–समझे किये जाने वाले धार्मिक रिवाजों के बीच की विषमता को दर्शाती है।

Citation - The film contrast spirituality with mindless ritualism.

मा. अमा
सर्वश्रेष्ठ गारो फ़िल्म

Ma.Ama | Best Garo Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

Garo | **123 Mins** | **Director:** Dominic Megam Sangma | **Production Company:** Anna Films | **Screenplay:** Dominic Megam Sangma | **Editor:** Hira Das | **DOP:** Acharya Venu | **Cast:** Phillip Okske Sangma, Brilliant Marak, Lusika M Sangma, Fr. Anthony Abong B. Marak, Hailin M Sangma, Parimal Deb.

कथासार - अपनी पत्नी के गुजर जाने के 30 साल बाद भी 85 साल का फिलिप हर दिन इस उम्मीद मे जीता है कि जिंदगी खत्म होने के बाद एक दिन वो फिर से अपनी पत्नी से मिलेगा। लेकिन उसकी चाहत को एक सपना खतरे में डाल देता है जहां वो एक वीरान इलाके में औरतों के झुंड में अपनी पत्नी को तलाशता रहता है। जहां लाख कोशिशों के बावजूद भी वो भीड़ में अपनी पत्नी के चेहरे को पहचान नहीं पाता। शंकाओं से घिरा हुआ, वो सोचता है कि क्या मौत हमारे रूप–रंग को बदल देती है। वो अभी भी जिंदगी के बाद अपनी पत्नी से मिलन के लिए सारे जतन करता है।

Synopsis - For 30 years since the death of his wife, Philip, 85, had lived every day in hope to be reunited with her in the afterlife. But his yearning is jeopardized by a dream in which he searches for his wife among the crowd of women in a barren landscape. Despite putting in a lot of efforts, he is not able to recognise his wife's face in the crowd. Tormented by the doubt, he wonders if death will change their appearance with time. He still puts in all his effort to ensure a reunion with his wife in the afterlife.

परिचय

डोमिनिक मेगम संगमा (Dominic Megam Sangma)

डोमिनिक मेगम संगमा सत्यजित रे फिल्म एंड टेलीविजन संस्थान (एसआरएफटीआई) कोलकाता, पश्चिम बंगाल से स्नातक हैं। अपनी प्रोडक्शन कंपनी अन्ना फिल्म्स शुरू करने से पहले इन्होंने दो साल तक राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम (एनएफडीसी) के साथ काम किया।

Dominic Megam Sangma is a graduate from Satyajit Ray Film and Television Institute (SRFTI), Kolkata, West Bengal. He worked with the National Film and Development Corporation (NFDC) for two years, before he started his own production company called Anna Films.

PROFILE

अन्ना फिल्म्स (ANNA Films)

ANNA Films

अन्ना फिल्म्स शिलॉन्ग स्थित एक प्रोडक्शन हाउस है जिसकी स्थापना डोमिनिक संगमा ने 2017 में की थी। इस बैनर के तले बनने वाली पहली फिल्म मा.अमा है जिसके सह–निर्माता एक चीनी निर्माता यू इयानशैंग हैं।

ANNA Films is a production house based in Shillong, India, founded by Dominic Sangma in 2017. The first film produced under this banner is 'Ma.Ama', which is co-produced by Chinese producer Xu Jianshang.

प्रशस्ति – एक वृद्ध की निरंतर कोशिश पर बनी फिल्म, जहाँ वो अपनी मृत पत्नी से लगातार मिलने की कोशिश करता रहता है।
Citation - The film follows an old man relentless quest for a reunion with his dead wife.

मिशिंग
सर्वश्रेष्ठ शेरडुकपेन फ़िल्म

Mishing | Best Sherdukpen Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

Sherdukpen | **75 Mins** | **Direction:** Bobby Sarma Baruah | **Production Company:** Sulakhyana Baruah | **Screenplay:** Bobby Sarma Baruah | **DOP:** Sonu | **Editor:** Ratul Deka | **Story:** Based on a Novel 'Mishing' written by Sahitya Akademi-Awardee Yeshe Dorjee Thongchi | **Cast:** Rajib Kro, Tsering Dorjee Khrimey, Prem Dorjee Monoji, Mala Goswami

कथासार - गतोगबे महाजन, अरुणाचल प्रदेश के शेरडुकपेन समुदाय का एक प्रमुख सदस्य है। असम में एक पुरानी गाड़ी को खरीदते हुए उसकी मुलाकात ड्राइवर राधा बिनोद सिंह से होती है। जल्द ही सिंह, महाजन के परिवार का हिस्सा बन जाता है। एक दिन, कई साल बाद तोगबे के बेटे अबू से एक अधेड़ उम्र कोई मिलने आता है जो खुद को सिंह बताता है। वह अबू से कहता है कि वो गुवाहाटी आकर उस अनमोल तोहफे को ले जाए जो तोगबे उसके पास छोड़कर गया था. फिर वह बिना बताए गायब हो जाता है। अबू गुवाहाटी पहुंचता है जहां उसकी मुलाकात सिंह के बेटे से होती है। अबू को वह तोहफा तो मिल ही जाता है लेकिन उसे पता चलता है कि सिंह तो कई महीनों से दक्षिण के वेल्लोर में भर्ती है। तो फिर वो कौन था जो अबू से मिलने आया था?

Synopsis - Togbe Mahajan, a leading member of the Sherdukpen community of Arunachal Pradesh, meets a driver Radha Binode Singh after buying a used vehicle in Assam. Soon, Singh becomes a part of Togbe's family. One day, Singh sees himself dead at the wheels of his own car. Alarmed and baffled, he flees. Many years later, Togbe's son Abu receives a middle-aged visitor claiming to be Singh. He asks Abu to visit him in Guwahati and collect a precious object that Togbe left in his custody. He then disappears without a trace. Abu heads to Guwahati. There, he meets Singh's son. The latter hands over Togbe's possession to the visitor. Abu learns that Singh has been in a hospital in Vellore, southern India, for several months. Who, then, was the man who visited Abu?

परिचय

बॉबी शर्मा बरुआ (Bobby Sarma Baruah)

बॉबी शर्मा बरुआ एक फिल्मकार, शोधकर्ता, निर्माता और पटकथा लेखक हैं। इनकी पहली फीचर फिल्म अदोम्या (इन्डोमिटेबल) एवं दूसरी फिल्म सोनार बारन पाखी (दि गोल्डन विंग) थी। मिशिंग इनकी तीसरी फिल्म है जिसे 66वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार में रजत कमल पुरस्कार से नवाजा गया है।

Bobby Sarma Baruah is a filmmaker, researcher, producer and screenwriter. Her debut feature was 'Adomya' (Indomitable), followed by 'Sonar Baran Pakhi' (The Golden Wing). 'Mishing' is her third film, which own her the Silver Lotus Award in the 66th National Film Award.

PROFILE

बीबी एंटरटेनमेंट ट्रेड प्राइवेट लिमिटेड

BB Entertainment Trade Private Limited

(BB Entertainment Trade Private Limited)

बीबी एंटरटेनमेंट ट्रेड प्राइवेट लिमिटेड, असम के कमरुप स्थित एक फिल्म निर्माण कंपनी है, जिसके कर्ताधर्ता फिल्मकार बॉबी शर्मा बरुआ हैं।

BB Entertainment Trade Pvt. Ltd is a film production company based in Kamrup, Assam owned by filmmaker Bobby Sarma Baruah.

प्रशस्ति – फिल्म अरुणाचल प्रदेश के एक अंदरूनी गाँव की दूसरी पहचान बताती है।
Citation - The film explores the alternative reality of a remote village in Arunachal Pradesh.

इन दि लैंड ऑफ पॉयजन वुमेन
सर्वश्रेष्ठ पन्गचेन्पा फ़िल्म

In the Land of Poison Women | Best Pangchenpa Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

Pangchenpa | 105 Mins. | Direction & Screenplay: Manju Borah | **Production Company:** Aaas Productions | **DOP:** Sudheer Palsane | **Editor:** A Sreekar Prasad | **Story:** Yeshe Dorjee Thongchi | **Cast:** Kesang Wangda, Lobsang Drema, Kendan Tashi, Dondup Drema, Dorjee Wangdi, Tenzin Phontso (Kokti), Sangey Drema, Dorjee Nima

कथासार - पहाड़ी पर सबसे अलग, एक बुजुर्ग जोड़ा सांगरा और ल्युसांग रहता है। उनके दो बच्चे और चार अन्य लोग देसी शराब पीकर मर गए हैं जिसे ल्यूसांग ने बनाया था। उसे इस अंधविश्वास के बल पर समुदाय से बाहर निकाल दिया जाता है कि वह एक दोउमोह यानि एक विषकन्या है। थुपतेन एक इंटेलिजेंस अधिकारी और तासी युदान एक सर्किल अधिकारी है। दोनों ही इसी समुदाय से ताल्लुक रखते हैं और वह इस जोड़े से मिलते है। ल्यूसांग अपनी मृत्युशैया पर लेटी है, सांगरा, सभी लोगों की उपस्थिति में लंबे समय से छुपाए एक राज का खुलासा करता है जो दोउमोह के आरोप से ल्यूसांग को मुक्त करता है और वो शांतिपूर्वक मर जाती है।

Synopsis - In an isolated dwelling on a hillock, lived an old couple Sangra and Lusang, whose two children and four others had died after consuming a local wine prepared by Lusang. She is ostracised by her community over their superstitious belief of her being a doumoh, a poison woman. Thupten, an intelligence officer and Tasi Yudan, a circle officer – both from the same tribe – visit the couple. As Lusang lies in her deathbed, Sangra, in the presence of everybody, reveals a long-hidden secret which vindicates 'doumoh' Lusang, and she dies peacefully.

परिचय

मंजू बोराह (Manju Borah)

मंजू बोराह की फिल्म उत्तर पूर्व की संस्कृति की पड़ताल करती हैं। इनकी पहली फिल्म 'बाइभाब' (1999) ने राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार जीता था। इनकी दूसरी राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार विजेता फिल्म में 'आकाशितोरार कोथारे' (2003), 'ऐई कोत नाई' (2008), 'दाउ हुदुनी मेथाई' (2015) शामिल हैं।

Manju Borah made her directorial debut feature 'Baibhab' in 1999, which won a National Film Award. Her other NFA winning films include 'Aakashitorar Kothare' (2003) and 'Dau Huduni Methai' (2015).

PROFILE

आस प्रोडक्शन्स प्राइवेट लिमिटेड

(Aaas Productions)

Aaas Productions

आस प्रोडक्शन्स प्राइवेट लिमिटेड मोशन पिक्चर, रेडियो और टेलीविजन के लिए निर्माण करता रहा है। इसकी बागडोर मंजु बोराह, राजेन बोरा, अनन्या बोराह, और जिबान दावका के हाथों में है।

Aaas Productions makes content for motion pictures, radio, television, etc. It is helmed by Manju Borah, Rajen Bora, Ananya Borah and Jiban Dawka.

प्रशस्ति – गफिल्म अरुणाचल प्रदेश के अंदरूनी इलाकों में प्रचलित 'जहरीली महिला' के असत्य को तोड़ने की कोशिश में लगे एक व्यक्ति की कहानी है।

Citation - The file is a depiction of an individual's effort to break the myth of "poison women" of remote parts of Arunachal Pradesh.

टर्टल
सर्वश्रेष्ठ राजस्थानी फ़िल्म

Turtle | Best Rajasthani Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

Rajasthani | 71.30 Min. | Director: Dinesh S. Yadav | **Production Company:** Shivazza Films & Entertainment | **Writer:** Dinesh S. Yadav | **Cast:** Sanjay Mishra

कथासार - एक लोक कथामें एक कछुआ पानी तक पहुंचने के लिए जमीन खो देता है। फिल्म इस कछुए का रूपक रुपान्तरण है। राजस्थान के एक सूखा ग्रस्त इलाके में रामकरन चौधरी एक सूखी जमीन से पानी निकालने की कोशिश कर रहा है। लोक कथा में एक रस्साकशी भी हो रही है जिसके जरिये लोग प्यास बुझाने की कोशिश कर रहे हैं। गांव वालों के लिए पानी लाकर रामकरन कहीं न कहीं ये भी साबित करना चाहता है कि उसका पोता बदकिस्मत नहीं है क्योंकि ज्यादातर गांव वालों को लगता है कि उसके पोते के जन्म के साथ ही कुआं सूख गया था।

Synopsis - In a folktale, a turtle digs the earth to reach the water. The film is a metaphorical depiction of the turtle. In a drought-struck village of Rajasthan, Ramkaran Chowdhary is churning the parched, sun-baked earth, to extract water. Desperate to quench their thirst, the common folk there also indulged in a tug of war, rotating on his shell. By bring water for the villagers, Ramkaran also wants to prove that his grandson was not unlucky for the village as many thought that the village wells dried up soon after the birth of his grandchild.

परिचय

दिनेश यादव (Dinesh S. Yadav)

दिनेश यादव एक फिल्म संपादक और निर्देशक हैं। वह एफटीआईआई से स्नातक हैं। टर्टल (2018) उनकी पहली फीचर फिल्म है। फिल्म निर्माण में औपचारिक पढ़ाई से पहले भी उन्होंने कुछ म्यूजिक वीडियो, एनिमेशन वीडियो और लघु फिल्में बनाई हैं। उनकी दो फिल्में आसाढ़ और ऊमस ने अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में सम्मान भी हासिल किया।

Dinesh S. Yadav is a film editor and director. He is a graduate in Film Editing from FTII, Pune. 'Turtle' (2018) is his debut feature film. Two of his shots, 'Aashad' (monsoon) and 'Umas' (stifle or suffocation), have won critical acclaim.

PROFILE

शिवाजा फिल्म्स एंड एंटरनेटमेंट

(Shivazza Films & Entertainment)

शिवाजा फिल्म्स एंड एंटरनेटमेंट के संस्थापक अशोक चौधरी हैं। इस प्रोडक्शन हाउज ने तीन फिल्में बनाई हैं – आय एम ए गर्ल, वाह जिदंगी और टर्टल. इसका उद्देश्य भारत का ऐसा प्रोडक्शन हाउज बनना है जो फिल्म निर्माण के हर आयाम–फिर वो फिल्म निर्माण हो या वितरण – के व्यावसायिक जरूरतों को पूरा करसके।

Shivazza Films & Entertainment is founded by Ashok Choudhary. The production house has so far produced three films: 'I'm a girl', 'Wah Zindagi' and 'Turtle'.

प्रशस्ति – एक प्रचलित राजस्थानी लोककथा पर आधारित यह फिल्म पानी की कमी के विषय को सामने लाती है।
Citation - Based on a popular Rajasthani folk tale, the film deals with an issue of water crises.

उरीः द सर्जिकल स्ट्राइक
सर्वश्रेष्ठ निर्देशन

Uri: The Surgical Strike | Best Direction

स्वर्ण कमल | SWARNA KAMAL ₹ 2,50,000/-

Hindi | **138 Mins** | **Director:** Aditya Dhar | **Production Company:** Unilazer | **Editor:** Shivkumar Panicker | **DOP:** Mitesh Mirchandani | **Cast:** Vicky Kaushal, Paresh Rawal, Yami Gautam

आदित्य धर

आदित्य धर ने बतौर गीतकार, लेखक और सह निर्देशक 'काबुल एक्सप्रेस' (2006) 'आक्रोश' (2010) और 'तेज' (2012) में काम किया। इन्होंने 'उरीः द सर्जिकल स्ट्राइक' से अपने निर्देशन की शुरुआत की है। इनकी बतौर पटकथा और संवाद लेखक लिखी गई फिल्म बूंद (2009) भी राष्ट्रीय फिल्म अवार्ड जीत चुकी है।

Aditya Dhar has been a lyricist, writer, and assistant director and worked in films like 'Kabul Express' (2006), 'Aakrosh' (2010), and 'Tezz' (2012). He made his directorial debut with 'Uri: The Surgical Strike'. His short film as a screenplay and dialogue writer named 'Boond' (2009) had also won a National Film Award.

प्रशस्ति – एक सच्ची सैन्य कार्यवाही को वास्तविक रूप से दर्शाना और उसके सहज और प्रभावकारी होने को सुनिश्चित करना एक कठिन चुनौती होती है, जिसे इस फिल्म में बखूबी निभाया गया है।

Citation - The challenge of telling a true story of military action in a realistic manner is dealt with utmost clarity and effectiveness.

Synopsis of the film on page no. 136

अंधाधुन
सर्वश्रेष्ठ अभिनेता (साझा)

Andhadhun | Best Actor (Shared)

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Hindi | **150 Mins** | **Director:** Sriram Raghavan | **Production Company:** Viacom18 Motion Pictures | **Screenplay:** Sriram Raghavan, Arijit Biswas, Yogesh Chandekar, Hemanth Rao, Pooja Ladha Surti | **Editor:** Pooja Ladha Surti | **DOP:** K.U. Mohanan | **Cast:** Tabu, Ayushman Khurrana, Radhika Apte

आयुष्मान खुराना

आयुष्मान खुराना एक जानेमाने भारतीय अभिनेता, गायक और मॉडल हैं। उनकी कुछ चर्चित फिल्मों में 'विकी डोनर' (2012), 'दम लगा के हइशा' (2015), ' बरेली की बर्फी' (2017), और 'बधाई हो' (2017) शामिल है।

Ayushmann Khurrana is a renowned Indian film actor, singer and model. Some of his most well-known movies include 'Vicky Donor' (2012), 'Dum Laga Ke Haisha' (2015), 'Bareilly Ki Barfi' (2017), and 'Badhaai Ho' (2018).

प्रशस्ति – एक जटिल किरदार जो "अभी अँधा है, अभी नही" के सशक्त अभिनय के लिए।

Citation - For powerful execution of a complex role of 'now blind & now not blind' character.

Synopsis of the film on page no. 132

उरी: द सर्जिकल स्ट्राइक
सर्वश्रेष्ठ अभिनेता (साझा)

Uri: The Surgical Strike | Best Actor (Shared)

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Hindi | **138 Mins** | **Director:** Aditya Dhar | **Production Company:** Unilazer | **Editor:** Shivkumar Panicker | **DOP:** Mitesh Mirchandani | **Cast:** Vicky Kaushal, Paresh Rawal, Yami Gautam

विकी कौशल

विकी कौशल एक हिन्दी फिल्म अभिनेता हैं जो राजी (2018), संजू (2018), मनमर्जियां (2018) और उरी: द सर्जिकल स्ट्राइक (2019) के लिए जाने जाते हैं। इन्हें उरी के लिए राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार मिल चुका है और संजू के लिए फिल्म फेयर पुरस्कार। एक्शन निर्देशक शाम कौशल के बेटे विकी, अनुराग कश्यप को गैंग्स ऑफ वासेपुर (2012) में सहायक थे जिसके बाद उन्हें मसान (2015) में अपना पहला बड़ा रोल मिला था।

Vicky Kaushal is a Hindi film actor known for his films like 'Raazi' (2018), 'Sanju' (2018), 'Manmarziyaan' (2018), and 'Uri: The Surgical Strike' (2019). He won a National Film Award for 'Uri' and a Filmfare Award for 'Sanju'. Born to the action director Sham Kaushal, he assisted Anurag Kashyap in his crime drama 'Gangs of Wasseypur' (2012) before bagging his first leading role in the film 'Masaan' (2015).

प्रशस्ति – एक आर्मी अफसर के किरदार को वास्तविक रूप से पर्दे पर लाने के लिए।

Citation - For effectively conveying a realistic character of an army officer.

Synopsis of the film on page no. 136

महानटी
सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री

Mahanati | Best Actress

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Telugu | **177 Mins** | **Director:** Nag Ashwin | **Production Company:** Vyjayanthi Movies, Swapna Cinema | **Screenplay:** Nag Ashwin | **Editor:** Kotagiri Venkateswara Rao | **DOP:** Dani Sanchez-Lopez | **Cast:** Keerthy Suresh, Dulquer Salmaan, Samantha Akkineni, Vijay Devarakonda

कीर्थि सुरेश

कीर्थि सुरेश एक फिल्म अभिनेत्री हैं जो तमिल, मलयालम और तेलुगू फिल्मों में अभिनय कर चुकी हैं। उन्होंने अभिनय की शुरूआत 2000 में बतौर बाल कलाकार की थी, 2013 में मलयालम फिल्म गीतांजलि में इन्होंने पहली बार मुख्य अभिनेत्री के तौर पर अभिनय किया। इस फिल्म ने कई स्टेट अवार्ड जीते।

Keerthy Suresh is a film actress who has appeared in Tamil, Malayalam and Telugu films. She began acting as a child artist in the early 2000s and played had her first lead role in the 2013 Malayalam film 'Geethaanjali' for which she won several state awards.

प्रशस्ति – एक लम्बी समय सीमा में अनेकानेक भावनाओं को उकेरने के लिए।
Citation - For a range of emotions across vast span of time.

Synopsis of the film on page no. 134

चुंबक
सर्वश्रेष्ठ सह अभिनेता

Chumbak | Best Supporting Actor

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Marathi | 118 Mins | Director: Sandeep Modi | **Production Company:** Cape of Good Films | **Screenplay:** Saurabh Bhave, Sandeep Modi | **Editor:** Chandrashekhar Prajapati | **DOP:** Rangarajan Ramabadran | **Cast:** Swanand Kirkire, Sahil Jadhav, Sangram Desai

स्वानंद किरकिरे

स्वानंद किरकिरे एक गीतकार, गायक, लेखक, सहायक निर्देशक, अभिनेता और संवाद लेखक हैं। इन्होंने फिल्म और टेलीविजन दोनो में योगदान दिया है। इन्हें सर्वश्रेष्ठ गीतकार के लिए दो बार नेशनल अवार्ड (2006–लगे रहो मुन्ना भाई, 2009–3 इडियट्स) से नवाजा जा चुका है।

Swanand Kirkire is a lyricist, playback singer, writer, assistant director, actor and dialogue writer, both in television and Hindi films. He has twice won the National Film Award for Best Lyrics in 2006 ('Lage Raho Munna Bhai') and 2009 ('3 Idiots').

प्रशस्ति – दर्शकों में सहानुभूति जाग्रत करने की योग्यता के लिए।
Citation - For the ability to invoke empathy in the audience.

Synopsis of the film on page no. 132

बधाई हो
सर्वश्रेष्ठ सह अभिनेत्री

Badhaai Ho | Best Supporting Actress

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Hindi | **123 Mins** | **Director:** Amit Ravindrenath Sharma | **Production Company:** Junglee Pictures Ltd | **Editor:** Akiv Ali | **DOP:** Sanu Varghese | **Writers:** Shanatanu Srivastava, Akshat Ghildial, Jyoti Kapoor | **Screenplay:** Akshat Ghildial | **Cast:** Ayushmann Khurrana, Neena Gupta, Gajraj Rao, Surekha Sikri, Sanya Malhotra

सुरेखा सीकरी

सुरेखा सीकरी एक भारतीय थियेटर, फिल्म और टेलीविजन अभिनेत्री हैं। अनुभवी हिंदी थियेटर अभिनेत्री सुरेखा सीकरी ने अपने फिल्मी सफर की शुरूआत 1978 में राजनीतिक ड्रामा फिल्म किस्सा कुर्सी का से की। और आगे चलकर इन्होंने कई हिंदी और मलयालम फिल्मों में सहायक अभिनय किया। साथ में इन्होंने भारतीय टेलीविजन में कई सोप ओपेरा में भी अहम भूमिका निभाई है।

Surekha Sikri is an Indian theatre, film and television actress. A veteran of Hindi theatre, she made her debut in the 1978 political drama film 'Kissa Kursi Ka' and went on to play supporting roles in numerous Hindi and Malayalam films, as well as in Indian soap operas.

प्रशस्ति – आधुनिक विचारों वाली घर की महिला–प्रमुख के किरदार का सम्मोहक चरित्रीकरण।
Citation - For a compelling performance as a matriarch with a modern attitude.

Synopsis of the film on page no. 132

ओन्दल्ला इरेदल्ला
सर्वश्रेष्ठ बाल कलाकार

Ondalla Eradalla | Best Child Artist

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Kannada | 132 Mins | Director: D. Satya Prakash | **Production Company:** DN Cinemas | **Screenplay:** Dhananjay Ranjan, Nagendra H.S., D. Satya Prakash | **Editor:** B.S. Kemparaju | **DOP:** Lavith | **Cast:** Master P.V. Rohith, Sai Krishna Kudla, M.K. Mutt, Anand Neenasam, Prabhudeva Hosadurga Nagabhushan, Ramzaan Saab Ullaagaddi

पी.वी रोहित

मास्टर **पी.वी रोहित** एक बाल कलाकार है। इन्हें 2018 में बनी कन्नड़ फिल्म ओन्देल्ला इरादेल्ला में अपने अभिनय के लिए राष्ट्रीय फिल्म अवार्ड से नवाजा जा चुका है।

Master **P.V. Rohith** is a child actor who won a National Film Award for his performance in the 2018 Kannada movie 'Ondalla Eradalla'.

प्रशस्ति – फिल्म की कहानी के घटनाक्रम को किरदार में रहते हुए एक शरारती ढंग से निभाने के लिए।

Citation - For impishly manoeuvring through a series of events, while staying focused on his character.

Synopsis of the film on page no. 135

हरजीता
सर्वश्रेष्ठ बाल कलाकार

Harjeeta | Best Child Artist

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Punjabi | **129 Mins** | **Director:** Vijay Kumar Arora | **Production Company:** Sizzlen Productions | **Screenplay:** Jagdeep Sidhu | **Editor:** Bunty Nagi | **DOP:** Rajeev Shrivastava | **Cast:** Ammy Virk, Sawan Rupowali, Sameep Ranaut, Pankaj Tripathi

समीप रानाउत

समीप रानाउत एक बाल कलाकार है, जिन्होंने अपने अभिनय की शुरूआत हरजीता से की जिसमें इन्होंने हरजीत सिंह के बचपन का किरदार निभाया है। इनके दूसरे अहम किरदारों में उडा आइदा (2019) के गगन का किरदार है।

Sameep Ranaut is a child actor who made his acting debut with 'Harjeeta' where he played young Harjeet Singh. His other important roles include as Gagan in 'Uda Aida' (2019).

प्रशस्ति – हॉकी के खिलाड़ी की दिल छू देने वाली जीवनी जो दिखाती है कि कैसे वह अपनी रूढ़िवादी जड़ों से निकल पाता है।
Citation - A heart touching biopic of a hockey player showing his struggle to rise from his rural roots.

Synopsis of the film on page no. 133

हामिद
सर्वश्रेष्ठ बाल कलाकार

Hamid | Best Child Artist

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Urdu | **108 Mins** | **Director:** Aijaz Khan | **Production Company:** Saregama Films, Yoodlee Films | **Screenplay:** Ravinder Randhawa | **Editor:** Afzal Shaikh | **DOP:** John Wilmor | **Cast:** Rasika Dugal, Vikas Kumar, Talha Arshad Reshi

तल्हा अरशद रेशी

तल्हा अरशद रेशी एक बाल कलाकार हैं, हामिद बतौर अभिनेता उनकी पहली फिल्म है।

Talha Arshad Reshi is a child artist. 'Hamid' is his debut film as an actor.

प्रशस्ति – किरदार की कई भावनाओं को सूक्ष्मता और संतुलन से निभाने के लिए।

Citation - For the poise in the character depicting a range of emotions.

Synopsis of the film on page no. 133

नाल
सर्वश्रेष्ठ बाल कलाकार

Naal | Best Child Artist

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Marathi | **117 Mins** | **Director:** Sudhakar Reddy Yakkanti | **Production Company:** Zee Studios | **Screenplay:** Sudhakar Reddy Yakkanti | **Story & Dialogue:** Sudhakar Reddy Yakkanti | **DOP:** Sudhakar Reddy Yakkanti | **Cast:** Shrinivas Pokale, Nagraj Manjule, Devika Daftardar

श्रीनिवास पोकाले

श्रीनिवास पोकाले एक बाल कलाकार है इन्होंने अपने अभिनय की शुरूआत 2018 में मराठी फिल्म नाल से की है।

Shrinivas Pokale is a child actor who made his acting debut with the 2018 Marathi movie 'Naal'.

प्रशस्ति – जटिल भावनाओं को सरलता से निभाने के लिए।
Citation - For performing effortlessly through complicated emotions.

Synopsis of the film on page no. 134

पद्मावत
सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायक

Padmaavat | Best Male Playback Singer

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Hindi | 163 Mins | **Director:** Sanjay Leela Bhansali | **Production Company:** Viacom18 Motion Pictures | **Screenplay:** Sanjay Leela Bhansali, Prakash Kapadia | **Editor:** Jayant Jadhar, Sanjay Leela Bhansali, Akiv Ali | **DOP:** Sudeep Chatterjee | **Cast:** Deepika Padukone, Shahid Kapoor, Ranveer Singh, Aditi Rao Hydari

अरीजित सिंह

अरीजित सिंह एक गायक, संगीत निर्माता, रिकॉर्डिस्ट और म्यूजिक कंपोजर हैं। इन्होंने मुख्यतौर पर हिंदी और बांग्ला में गायन किया है। लेकिन वो अन्य कई भारतीय भाषाओं में भी प्रस्तुति दे चुके हैं।

Arijit Singh is a singer, music producer, recordist and music programmer. He sings predominantly in Hindi and Bengali, but has also performed in various other Indian languages.

प्रशस्ति – आवाज की अनूठी गुणवत्ता के लिए जिसमे भाव और तकनीक का उत्तम मेल है।

Citation - For unique tonal quality of voice with perfect blend of emotion and technique.

Synopsis of the film on page no. 135

नाथिचरामी
सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायिका

Nathicharami | Best Female Playback Singer

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Kannada | **126 Mins** | **Director:** Mansore | **Production Company:** Tejaswini Enterprises | **Screenplay:** Mansore | **Editor:** Nagendra K. Ujjani | **DOP:** Guruprasad Narnad | **Cast:** Sruthi Hariharan, Sanchari Vijay, Sharanya

बिंधु मालिनी नारायणस्वामी

बिंधु मालिनी नारायणस्वामी जो कर्नाटक और हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की प्रशिक्षित गायिका हैं और एक संगीतकार और डिजाइनर भी है। इन्होंने दो अलग विषयों में स्नातक की डिग्री हासिल की है–एक बीएफए (ड्रॉईंग और पेंटिंग) और दूसरी कर्नाटक संगीत। एनआईडी से ग्राफिक डिजाइनर की शिक्षा भी हासिल कर चुकी है और इन्होंने चौन्नई और मपुनिती बैंगलूरू में सत्यम मल्टीप्लेक्स के लिए इन–हाउस डिजाइनर के तौर पर भी काम किया है।

Bindhu Malini Narayanswamy is a singer trained in Carnatic and Hindustani classical music and also a musician and designer. She holds two graduation degrees – one in BFA (Drawing and Painting) and another in Carnatic Music. A graphic designer from NID, she also worked as the in-house designer for Satyam Multiplex, Chennai and Mapunity, Bangalore.

प्रशस्ति – दिल को छू देने वाले ऐसे गीत के लिए जो नायिका के मन की आवाज प्रतीत होती है।

Citation - For rendering a haunting melody that appears to be the voice of the conscience of the protagonist.

Synopsis of the film on page no. 134

ओलु
सर्वश्रेष्ठ छायांकन

Olu | Best Cinematography

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Malayalam | 109 Mins | Director: Shaji N. Karun | **Producer:** A.V. Anoop | **Screenplay:** T.D. Ramakrishnan | **Editor:** A. Sreekar Prasad | **DOP:** M.J. Radhakrishnan | **Cast:** Shane Nigam, Maya Menon, Indrans, Esther, Kani Kusruti, Sreekumar, Radhika, Punnassery Kanchana

एम.जे. राधाकृष्णन

एम.जे. राधाकृष्णन एक अनुभवी सिनेमेटोग्राफर हैं जिन्होंने मुख्यतौर पर मलयालम फिल्मों के लिए काम किया है। इन्हें सर्वश्रेष्ठ सिनेमेटोग्राफी के लिए सात बार केरल स्टेट अवार्ड मिल चुका है।

M.J. Radhakrishnan was a veteran cinematographer who worked mainly in Malayalam films. He won the Kerala State Award for Best Cinematography as many as seven times.

प्रशस्ति – अलग–अलग परिदृश्य, मूल अंश और बनावट एक साथ मिलकर सजीव हो जाते हैं और एक खूबसूरती और आकर्षण ले आते हैं।

Citation - Different landscapes, elements and texture come alive to bring a sense of beauty and grace.

Synopsis of the film on page no. 135

चि अर्जुन ला सो
सर्वश्रेष्ठ पटकथा (मौलिक)

Chi Arjun La Sow | Best Screenplay (Original)

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Telugu | **155 Mins** | **Director:** Rahul Ravindran | **Production Company:** Siruni Cine Corporation, Annapurna Studios | **Screenplay:** Rahul Ravindran | **Editor:** Chota K. Prasad | **DOP:** M. Sukumar | **Cast:** Sushanth, Ruhani Sharma

राहुल रविन्द्रन

राहुल रविन्द्रन एक फिल्म निर्देशक और अभिनेता है जो तेलुगू, तमिल और अंग्रेजी फिल्मों में अभिनय कर चुके हैं। विनमींगल (2012) और सूर्या नागरम (2012) में मुख्य भूमिका निभाने से पहले, इन्होंने अपने फिल्मी सफर की शुरूआत तमिल फिल्म मोस्कोविन कावेरी (2010) से की। बतौर अभिनेता इनकी अन्य फिल्मों में वणंकम चौन्नई (2013), अला इला (2014), श्रींमंथुडु (2015) और हैदरबाद लव स्टोरी (2018) शामिल है।

Rahul Ravindran is a film director and actor who has appeared in Telugu, Tamil and English language films. He made his debut in the Tamil film 'Moscowin Kavery' (2010), before playing leading roles in 'Vinmeengal' (2012) and 'Soorya Nagaram' (2012). His other films as an actor include 'Vanakkam Chennai' (2013), 'Ala Ela' (2014), 'Srimanthudu'(2015) and 'Hyderabad love story' (2018).

प्रशस्ति – यह पटकथा माता–पिता द्वारा विवाह तय किये जाने के पारंपरिक चलन पर एक आधुनिक विचार प्रस्तुत करती है।

Citation - The screenplay is modern take on the traditional custom of arranged marriage.

Synopsis of the film on page no. 132

अंधाधुन
सर्वश्रेष्ठ पटकथा (रूपांतरित)

Andhadhun | Best Screenplay (Adapted)

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Hindi | **150 Mins** | **Director:** Sriram Raghavan | **Production Company:** Viacom 18 Motion Pictures | **Screenplay:** Sriram Raghavan, Arijit Biswas, Yogesh Chandekar, Hemanth Rao, Pooja Ladha Surti | **DOP:** K. U. Mohanan | **Editor:** Pooja Ladha Surti | **Cast:** Tabu, Ayushman Khurrana, Radhika Apte

श्रीराम राघवन, अरीजित बिस्वास, योगेश चांदेकर, हेमन्थ एम.राव, पूजा लोधा सुर्ति

श्रीराम राघवन एक भारतीय फिल्म निर्देशक और पटकथा लेखक हैं। **अरीजित बिस्वास** मुंबई स्थित एक पटकथा लेखक और निर्देशक हैं। **योगेश चांदेकर** एक लेखक और पटकथा लेखक हैं। ये फिल्म अंधाधुन के लिए जाने जाते हैं। **हेमन्थ एम.राव** एक भारतीय निर्देशक और पटकथा लेखक हैं। इन्होंने मुख्यतौर पर कन्नड़ सिनेमा के लिए काम किया है। **पूजा लोधा सुर्ति** एक पटकथा लेखक और एडिटर हैं। इन्हें एक हसीना थी (2004), बदलापुर (2015), और अंधाधुन के लिए जाना जाता है।

Sriram Raghavan is an Indian film director and screen writer. **Arijit Biswas** is a screen writer & director based in Mumbai. **Yogesh Chandekar** is an author and screenwriter. **Hemanth M. Rao** is an Indian film director and screenwriter who works in Kannada cinema. **Pooja Ladha Surti** is a screenwriter and editor known for 'Badlapur' (2015), 'Ek Hasina Thi' (2004).

प्रशस्ति – एक मजबूत और दिलचस्प कहानी जो लोगों को बांधे रखने में सक्षम है।

Citation - Crisp and intriguing story that keeps the audiences on tenterhooks.

Synopsis of the film on page no. 132

तारीख
सर्वश्रेष्ठ पटकथा (संवाद)

Tareekh | Best Screenplay (Dialogue)

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Bengali | **116 Mins** | **Director:** Churni Ganguly | **Production Company:** Opera Studios | **Screenplay & Dialogues:** Churni Ganguly | **Editor:** Subhajit Singha | **DOP:** Goopi Bhagat | **Cast:** Ritwick Chakraborty, Rudrangshu, Saswata Chatterjee, Anirban, Raima Sen, Ira

चुरनी गांगुली

चुरनी गांगुली एक बंगाली फिल्म और टेलीविजन अभिनेत्री और निर्देशक हैं, जिन्हें तारिख (2019), निर्भशितो (2014) और आरती प्रेमेर गोलपो (2010) के लिए जाना जाता है।

Churni Ganguly is a Bengali film and television actress and director. She is an actress and writer, known for films like 'Tarikh' (2019), 'Nirbashito' (2014) and 'Aarekti Premer Golpo' (2010).

प्रशस्ति – गहरे विचारशील संवाद जो निजी रिश्तों की पराकाष्ठा तलाशते है।

Citation - Fordeep meaningful conversations that explore interpersonal relationships.

Synopsis of the film on page no. 135

तेंडल्या
सर्वश्रेष्ठ ध्वन्यांकन (लोकेशन सांउड)

Tendlya | Best Audiography (Location Sound)

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Marathi | **112 Mins** | **Director:** Sachin Jadhav | **Production Company:** Ashwamedh Motion Pictures | **Editor:** Nachiket Waikar | **DOP:** Balu sandilyasa | **Cast:** Firoj Shaikh, Adwaita Jadhav, Mahendra Walunj, Vikram Patil, Sujay Madane, Aaksh Tikoti

गौरव वर्मा

गौरव वर्मा साउंड विभाग में काम करते हैं। वह बतौर अभिनेता भी प्रस्तुति दे चुके हैं, इनकी फिल्मों में च्यूइंग गम (2013), येति (2014), और टेंडल्या (2018) शामिल है।

Gaurav Verma works in the sound department. He also performs as an actor and is known for his work in films like 'Chewing Gum' (2013), 'Yeti' (2014), and 'Tendlya' (2018).

प्रशस्ति – छोटे शहर का रूप–रंग इस अनूठी और कर्णप्रिय ध्वनि के प्रारूप में बेहतरीन ढंग से उभर कर आया है।
Citation - The flavour and mood of the small town is vastly enhanced by the ambient aural quality.

Synopsis of the film on page no. 136

उरी: द सर्जिकल स्ट्राइक
सर्वश्रेष्ठ ध्वन्यांकन (साउंड डिज़ाइन)

Uri: The Surgical Strike | Best Audiography (Sound Design)

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Hindi | **138 Mins** | **Director:** Aditya Dhar | **Production Company:** Unilazer | **Editor:** Shivkumar Panicker | **DOP:** Mitesh Mirchandani | **Cast:** Vicky Kaushal, Paresh Rawal, Yami Gautam

बिस्वदीप दीपक चटर्जी

बिस्वदीप दीपक चटर्जी एक दिग्गज साउंड डिजाइन रहैं जिन्होंने राष्ट्रीय पुरस्कार जीता है। उनकी लोकप्रिय फिल्मों में परिणिता (2005), लगे रहो मुन्ना भाई (2006), एकलव्य (2007), मद्रास कैफे (2013), पीकू (2015) और अक्टूबर (2018) शामिल हैं।

Bishwadeep Dipak Chatterjee is a National Award-winning veteran sound designer. Some of his popular films include 'Parineeta' (2005), 'Lage Raho Munna Bhai' (2006), 'Eklavya' (2007), 'Madras Cafe' (2013), 'Piku' (2015) and 'October' (2018).

प्रशस्ति – तान के विभिन्न दृष्टिकोणों में बनाये गए संगीत के लिए।

Citation - An orchestra of created as well as rendered aural dimensions.

Synopsis of the film on page no. 136

रंगस्थलम
सर्वश्रेष्ठ ध्वन्यांकन

Rangasthalam | Best Audiography

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Telugu | 174 Mins | Director: Sukumar | **Production Company:** Mythri Movie Makers | **Screenplay:** Sukumar | **Editor:** Naveen Nooli | **DOP:** R. Rathnavelu | **Cast:** Ram Charan, Samantha Akkineni, Jagapati Babu, Aadhi Pinisetty, Prakash Raj

मेदायिल राधाकृष्णन राजा कृष्णन

मेदायिल राधाकृष्णन राजा कृष्णन भारतीय सिनेमा में एक ऑडियोग्राफर हैं। इन्होंने तमिल, हिंदी, तेलुगू, मराठी और मलयालम फीचर फिल्मों के लिए काम किया है।

Medayil Radhakrishnan Raja Krishnan is an audiographer for Indian films. He has worked in Tamil, Hindi, Telugu, Marathi and Malayalam feature films.

प्रशस्ति – खामोशी की तान की खूबसूरती और मिजाज को पिरोने के लिए।
Citation - For playing with beauty and essence of the tonal quality of the silence.

Synopsis of the film on page no. 135

नाथिचरामी
सर्वश्रेष्ठ सम्पादन

Nathicharami | Best Editing

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Kannada | **126 Mins** | **Director:** Mansore | **Production Company:** Tejaswini Enterprises | **Screenplay:** Mansore | **Editor:** Nagendra K. Ujjani | **DOP:** Guruprasad Narnad | **Cast:** Sruthi Hariharan, Sanchari Vijay, Sharanya

नागेन्द्र के. उज्जैनी

नागेन्द्र के. उज्जैनी कन्नड़ सिनेमा उद्योग में एक फिल्म एडिटर हैं। इन्होंने कई फिल्मों के लिए काम किया जिसमें राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता फिल्म, नानू अवनाल्ला अवालु (2015) शामिल है।

Nagendra K. Ujjani is a film editor in the Kannada cinema industry. He has worked in several films including the National Film Award-winning film, 'Nanu Avanalla Avalu' (2015).

प्रशस्ति – विभिन्न किरदारों के बीच सहजता और सरलता के साथ किया गया परिवर्तन एक बानगी प्रस्तुत करता है।

Citation - Crisp and smooth transition between different characters is a hallmark.

Synopsis of the film on page no. 134

कम्मारा संभावम
सर्वश्रेष्ठ प्रोडक्शन डिज़ाइन

Kammara Sambhavam | Best Production Design

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Malayalam | 182 Mins | Director: Rathish Ambat | **Production Company:** Sree Gokulam Movies | **Screenplay:** Murali Gopy | **Editor:** Suresh Urs | **DOP:** Sunil K.S. | **Cast:** Dileep, Siddharth, Murali Gopy, Namitha Pramod, Bobby Simha, Shweta Menon, Simarjeet Singh Nagra

विनीश बंगालन

विनीश बंगालन एक कला निर्देशक और प्रोडक्शन डिजाइनर है। इन्हें कम्मारा संभावम फिल्म के लिए ही केरल राज्य फिल्म पुरस्कार भी जीत चुके हैं।

Vinnesh Banglan is an art director and production designer. He has won the Kerala State Film award for the film 'Kammara Sambhavam'.

प्रशस्ति – विभिन्न कालों और संस्कृतियों से सम्बन्धित प्रासंगिक इलाके और सेट तैयार करने के लिए।
Citation - For preparing relevant terrains and sets of different periods and cultures.

Synopsis of the film on page no. 134

महानटी
सर्वश्रेष्ठ वेशभूषा डिज़ाईनर

Mahanati | Best Costume Designer

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Telugu | 177 Mins | Director: Nag Ashwin Reddy | **Production Company:** Vyjayanthi Movies, Swapna Cinema | **Screenplay:** Nag Ashwin Reddy | **Editor:** Kotagiri Venkateswara Rao | **DOP:** Dani Sanchez-Lopez | **Cast:** Keerthy Suresh, Dulquer Salmaan, Samantha Akkineni, Vijay Devarakonda

इंद्राक्षी पटनायक, गौरांग शाह, अर्चना राव

इंद्राक्षी पटनायक उडीसा के एक फ्रीलांस फैशन स्टाइलिस्ट और कॉस्ट्यूम डिजाइनर हैं। **गौरांग शाह** एक टेक्सटाइल डिजाइनर हैं जिन्हें इंडियन हैंडलूम में महारथ हासिल है। **अर्चना राव** एक फैशन डिजाइनर और एनआइएफटी की पूर्व छात्रा हैं। इन्होंने न्यूयॉर्क के पारसन्स स्कूल ऑफ डिजाइन से ए ए एस की डिग्री भी हासिल की है।

Indrakshi Pattanaik is a freelance fashion stylist and costume designer from Odisha. **Gaurang Shah** is a textile designer who specialises in using Indian handlooms. **Archana Rao** is a fashion designer and NIFT alumnus. She also pursued an AAS degree from Parsons School of Design, New York.

प्रशस्ति – तेलुगू फिल्म जगत में श्वेत–श्याम फिल्मों के दौर से लेकर आधुनिक समय तक की पोशाकों के विकास और बदलाव के बखूबी प्रदर्शन के लिए।
Citation - Evolution of costumes in the Telugu film industry from Black & White era to modern times.

Synopsis of the film on page no. 134

आवे
सर्वश्रेष्ठ रूपसज्जा कलाकार

Awe | Best Make-up Artist

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Telugu | 110 Mins | Director: Prasanth Varma | **Production Company:** Wall Poster Cinema | **Screenplay:** Prasanth Varma | **Editor:** Goutham Nerusu | **DOP:** Karthik Ghattamaneni | **Cast:** Kajal Aggarwal, Nithya Menon, Regina Cassandra, Eesha Rebba, Priyadarshi Pullikonda, Srinivas Avasarala, Murali Sharma

रंजिथ

रंजिथ जिन्हें यू. गिरिधर के नाम से भी जाना जाता है जो कि एक मेक–अप आर्टिस्ट हैं और पिछले 16 सालों से तेलुगू फिल्मों में काम कर रहे हैं।

Ranjith, also known as U. Giridhar, is a make-up artist who has been working in Telugu cinema for 16 years.

प्रशस्ति – हर चेहरे को निखार कर उसे हर किरदार के अनुरूप बनाने के लिए।

Citation - For bringing out the texture of each face and giving personality to every character.

Synopsis of the film on page no. 132

पद्मावत
सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशन (गीत)

Padmaavat | Best Music Direction (Songs)

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Hindi | 163 Mins | Director: Sanjay Leela Bhansali | **Production Company:** Viacom18 Motion Pictures | **Screenplay:** Sanjay Leela Bhansali, Prakash Kapadia | **Editor:** Jayant Jadhar, Sanjay Leela Bhansali, Akiv Ali | **DOP:** Sudeep Chatterjee | **Cast:** Deepika Padukone, Shahid Kapoor, Ranveer Singh, Aditi Rao Hydari

संजय लीला भंसाली

संजय लीला भंसाली एक बॉलीवुड निर्देशक, निर्माता, पटकथा लेखक और संगीतकार हैं। भंसाली कई अवार्ड से नवाजे जा चुके हैं जिसमें पांच राष्ट्रीय पुरस्कार, 11 फिल्मफेयर अवार्ड और एक बाफ्टा नामांकन शामिल है।

Sanjay Leela Bhansali is a Bollywood director, producer, screenwriter, and music director. Bhansali is the recipient of several awards, including five National Film Awards, 11 Filmfare Awards and a BAFTA nomination.

प्रशस्ति – फिल्म के हर गीत कहानी में निखार ले आता है और कथानक को एक नई दिशा देता है।

Citation - All the songs lift the mood of the film and give a different dimension to the narrative.

Synopsis of the film on page no. 135

उरी: द सर्जिकल स्ट्राइक
सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशन (पार्श्व संगीत)

Uri: The Surgical Strike | Best Music Direction (Background Music)

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Hindi | **138 Mins** | **Director:** Aditya Dhar | **Production Company:** Unilazer | **Editor:** Shivkumar Panicker | **DOP:** Mitesh Mirchandani | **Cast:** Vicky Kaushal, Paresh Rawal, Yami Gautam

शाश्वत सचदेव

शाश्वत सचदेव एक फिल्म संगीत निर्देशक–गायक हैं। इन्होने मुख्यतौर पर बॉलीवुड के लिए काम किया है। इनकी कुछ चर्चित फिल्मों में 'उरीः दि सर्जिकल स्ट्राइक', वीरे दी वेडिंग (2018), और फिल्लौरी (2017) शामिल है।

Shashwat Sachdev is a film music director/singer who has worked predominantly in Bollywood. Some of his popular movies include 'Uri: The Surgical Strike', 'Veere Di Wedding' (2018) and 'Phillauri' (2017).

प्रशस्ति – फिल्म का पार्श्व संगीत फिल्म को बखूबी सही वातावरण प्रदान करता है।

Citation - The background score excels in providing the right atmosphere for the film.

Synopsis of the film on page no. 136

नाथिचरामी
सर्वश्रेष्ठ गीत

Nathicharami | Best Lyrics

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Kannada | 126 Mins | Director: Mansore | **Production Company:** Tejaswini Enterprises | **Screenplay:** Mansore | **Editor:** Nagendra K. Ujjani | **DOP:** Guruprasad Narnad | **Cast:** Sruthi Hariharan, Sanchari Vijay, Sharanya

मंसोरे

मंजूनाथ सोमेक्ष रेड्डी उर्फ **मंसोरे**, कन्नड़ सिनेमा में एक विजुअल आर्टिस्ट से फिल्म निर्माता बनें। इनकी पहली फिल्म हरिवु (2014) ने 2015 में सर्वश्रेष्ठ क्षेत्रीय भाषा का राष्ट्रीय अवार्ड जीता था। नाथिचरामी ने पांच राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार और तमाम तरह की सराहना हासिल की है।

Mansore, aka **Manjunatha Somakesha Reddy**, is a visual artist-turned-filmmaker in Kannada cinema. His debut film 'Harivu' (2014) won the National Awards for best regional film in 2015. 'Nathicharami' has won five National Film Awards and other accolades.

प्रशस्ति – एक नवयुवती के समाज की बेड़ियों के खिलाफ उपजते क्रांतिकारी ख्याल जो उसकी मनोदशा बताने के लिए बखूबी पिरोये गए हैं।

Citation - Revolutionary thoughts strung together to convey the innermost feelings of a young woman ready to break societal shackles.

Synopsis of the film on page no. 134

हेल्लारो
सर्वश्रेष्ठ निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार

Hellaro | Special Jury Award

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 2,00,000/-

Gujarati | 121 Mins | Director: Abhishek Shah | **Production Company:** Saarthi Productions LLP | **Screenplay:** Abhishek Shah, Prateek Gupta, Saumya Joshi (Dialogues & Lyrics) | **Editor:** Prateek Gupta | **DOP:** Tribhuvan Babu Sadineni | **Cast:** Jayesh More, Shraddha Dangar, Brinda Trivedi Nayak, Shachi Joshi, Neelam Panchal, Tejal Panchasara, Kausambi Bhatt

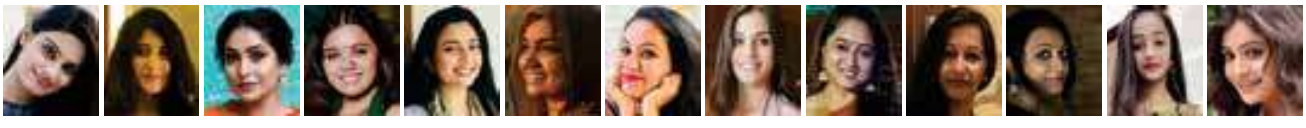

शाची जोशी, डेनिशा घुमरा, नीलम पठानिया, तरजानी भादला, बृंदा त्रिवेदी, तेजल पंचसारा, कौशांबी भट्ट, एकता बछवानी, कामिनी पंचाल, जागृति ठाकोर, रिद्धि यादव, प्राप्ति मेहता, श्रद्धा डांगर सभी हैलारो फ़िल्म की अभिनेत्री है।

Shachi Joshi, Denisha Ghumra, Niilam Paanchal, Tarjani Bhadla, Brinda Trivedi, Tejal Panchasara, Kaushambi Bhatt, Ekta Bachwani, Kamini Panchal, Jagruti Thakore, Riddhi Yadav, Prapti Mehta, Shraddha dangar are all actresses in 'Hellaro'.

प्रशस्ति – ग्रामीण महिलाओं के किरदार को बखूबी निभाने के लिए जो एक सामाजिक बदलाव लाने की बात करती हैं, और साथ ही दर्शकों के लिए एक मार्मिक दृश्य पैदा करती हैं।

Citation - For the ability of a group of rural women characters, acting as a unit, to bring about social transformation while taking the audience through an emotional catharsis.

Synopsis of the film on page no. 133

केदारा
सर्वश्रेष्ठ निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार

Kedara | Special Jury Award

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Bengali | **112 Mins** | **Director:** Indraadip Dasgupta | **Production Company:** Kaleidoscope | **Editor:** Sujay Dutta Roy | **DOP:** Shubhankar bhar | **Production Design:** Ranajit garai | **Cast:** Kaushik Ganguly , Rudranil ghosh, Joydeep Kundu , Moushumi Sanyal dasgupta, Indranil Roy

इंद्रदीप दासगुप्ता

इंद्रदीप दासगुप्ता बंगाली फिल्म उद्योग के निर्देशक और संगीत निर्देशक हैं। इन्होंने अपने काम की शुरुआत 2003 में बतौर संगीत निर्देशक/कंपोजर के तौर पर की थी। इन्होंने 39 से अधिक फिल्मों के लिए संगीत दिया और इन्हें कई पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। इनकी फिल्मी सफर में बॉर असबे एखुनी, ले चक्का, 22 श्रबोन, और चौप्लिन जैसी फिल्में शामिल हैं। इनके चर्चित एल्बम में मोन फकीरा और पारबोन अमी चारते टोके शुमार है।

Indraadip Dasgupta is a director and music director/composer in the Bengali film industry. Starting his career as a music director/composer in 2003, he has directed and composed music in over 39 films, and is a multiple award nominee and winner. His filmography included films like 'Bor Asbe Ekhuni', 'Le Chakka', '22 Shrabon', and 'Chaplin'. His popular albums include 'Mon Fakira' and 'Parbona Ami Chartey Tokey'.

प्रशस्ति – नियमित समय में केवल प्रमुख किरदार के अन्वेषण में कई प्रकार की सिनेमाई तकनीकें और क्रियाप्रणाली के इस्तेमाल के लिए।

Citation - For using a range of cinematic techniques and methodology to explore one single main character in a limited space.

Synopsis of the film on page no. 134

आवे
सर्वश्रेष्ठ स्पेशल इफैक्ट

Awe | Best Special Effect

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Telugu | 110 Mins | Director: Prasanth Varma | **Production Company:** Wall Poster Cinema | **Screenplay:** Prasanth Varma | **Editor:** Goutham Nerusu | **DOP:** Karthik Ghattamaneni | **Cast:** Kajal Aggarwal, Nithya Menon, Regina Cassandra, Eesha Rebba, Priyadarshi Pullikonda, Srinivas Avasarala, Murali Sharma

स्रुष्टि क्रियेटिव स्टूडियो

स्रुष्टि क्रियेटिव स्टूडियो की स्थापना 2013 में फिल्मों के लिए विजुअल इफेक्ट्स निर्माण और गेम्स को ध्यान में रखकर हुई थी। फिर खुद का विस्तार करते हुए ये ए आर (ऑगमेंटेड रिएलिटी), वी आर (वर्चुअल रिएलिटी) , प्रोजेक्शन मैपिंग और होलोग्राफिक प्रोजेक्शन जैसे कामों में शामिल हो गए हैं।

Srushti Creative Studio was founded in 2013, with a focus on Visual Effects for movies and games. It then expanded into offering immersive solutions like AR (augmented reality), VR (virtual reality), Projection Mapping and Holographic Projection.

प्रशस्ति – कई कहानियों और किरदारों को दिलचस्प रूप देने के लिए और आपसी सामंजस्य को निपुणता से पेश करने के लिए।

Citation - For the dexterity and finesse in bring to a cohesive conclusion, multiple stories and characters in a visually effective manner.

Synopsis of the film on page no. 132

के.जी.एफ.
सर्वश्रेष्ठ स्पेशल इफैक्ट

K.G.F | Best Special Effect

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Hindi, Telugu | 170 Mins | Director: Prasanth Neel | **Producer:** Vijay Kiragandur | **Screenplay:** Prasanth Neel | **Editor:** Srikanth | **DOP:** Bhuvan gowda | **Stunts:** Vikram Mor and Anbu arvu | **Special Effects:** Unifi Media | **Cast:** Yash, Srinidhi shetty, Ananth Nag, Vasista N simha, Archana Jois, T.S.Nagabarana, Achyuth kumar

यूनिफाई मीडिया

यूनिफाई मीडिया एक पोस्ट प्रोडक्शन स्टूडियो हैं जहां डिजिटल कलर ग्रेडिंग (डीआई), वीएफएक्स, डिजिटल सेट एक्सटेन्शन, डिजिटल मैट पेंटिंग, हाइएंड एनिमेशन, क्लीन–अप (पैंट), मोशन ट्रैकिंग, फाइनल कंपोजिटिंग और डिजिटल सिनेमा मास्टरिंग (डीसीपी) जैसी विस्तृत डिजिटल सेवा प्रदान करता है।

Unifi Media is the fastest growing post production studio offering a wide range of sophisticated digital services like Digital Colour Grading (DI), VFX, Digital Set Extension, Digital Matte Painting, High-end Animation, Clean-up (Paint), Motion Tracking, Final Compositing and Digital Cinema Mastering (DCP).

प्रशस्ति – 80 के दशक के मुश्किल दौर को बखूबी और वास्तविक रूप में सजीव करने के लिए।

Citation - The film successfully and convincingly creates an era of a rough neighborhood, during the 80s.

Synopsis of the film on page no. 134

पद्मावत
सर्वश्रेष्ठ नृत्य संयोजन

Padmaavat | Best Choreography

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Hindi | 163 Mins | Director: Sanjay Leela Bhansali | **Production Company:** Viacom18 Motion Pictures | **Screenplay:** Sanjay Leela Bhansali, Prakash Kapadia | **Editor:** Jayant Jadhar, Sanjay Leela Bhansali, Akiv Ali | **DOP:** Sudeep Chatterjee | **Cast:** Deepika Padukone, Shahid Kapoor, Ranveer Singh, Aditi Rao Hydari

कृति महेश मद्या, ज्याति डी तोमर

कृति महेश मद्या ने पद्मावत में स्वतंत्र रूप से नृत्य निर्देशन करने से पहले कई फिल्मों में रेमो डिसूजा की सहायक के तौर पर काम किया। इन्होंने नई दिल्ली के गंधर्व महाविद्यालय से भरतनाट्यम में स्नातक किया है। **ज्याति डी तोमर** एक प्रशिक्षित कत्थक नृत्यांगना, नृत्य निर्देशक और फेशन डिजाइनर हैं। वे 1985 से मुंबई दूरदर्शन में प्रस्तुतकर्ता का काम कर रही हैं और इन्होनें कई टीवी सीरियल में अभिनय भी किया है।

Kruti Mahesh Madya assisted Remo Dsouza for several films before becoming an independent choreographer with 'Padmaavat'. She did her graduation in Bharatha Natyam from Gandharva Mahavidyalaya, New Delhi. **Jyothi D Tommaar** is a trained Kathak dancer and found her forte in dancing at a tender age of four. She has been a regular compere on Mumbai Doordarshan since 1985 and now acts in TV serials.

प्रशस्ति – कई नाजुक पल का संयोजन एक लुभावने अंदाज में पेश किया गया है।

Citation - Exquisite delicate moments synchronised beautifully creating a visual treat.

Synopsis of the film on page no. 135

के.जी.एफ.
सर्वश्रेष्ठ एक्शन निर्देशन

K.G.F. | Best Action Direction

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Hindi, Telugu | 170 Mins | Director: Prasanth Neel | **Producer:** Vijay Kiragandur | **Screenplay:** Prasanth Neel | **Editor:** Srikanth | **DOP:** Bhuvan gowda | **Stunts:** Vikram Mor and Anbu Arvu | **Special Effects:** Unifi Media | **Cast:** Yash, Srinidhi shetty, Ananth Nag, Vasista N simha, Archana Jois, T.S.Nagabarana, Achyuth kumar

विक्रम मोर, अनबरिव

विक्रम मोर एक स्टंट आर्टिस्ट हैं जो मुख्य स्टंट मास्टर के तौर पर 90 कन्नड़ फिल्मों में काम कर चुके हैं और 68 फिल्मों में इन्होंने सहायक स्टंट मास्टर की भूमिका निभाई है। वे ऑल कर्नाटक सिने स्टंट आर्टिस्ट एंड स्टंट मास्टर असोसियेशन के सदस्य हैं। वे अब तक करीब 550 कन्नड़ फिल्मों से जुड़े रह चुके हैं। **अन्बु अरवू** स्टंट निर्देशक जोड़ी है जो तमिल, तेलुगू, मलयामल और हिन्दी फिल्मों में काम कर चुकी है। इस जोड़ी ने 75 से ज्यादा फिल्में की हैं।

Vikram Mor is a stunt artist who has worked as a lead stunt master in 90 Kannada films and as an assistant stunt master for 68 movies. A member of All Karnataka Cine Stunt Artists and Stunt Masters Association, he has so far been involved in about 550 Kannada movies.

Anbariv are action choreographers and stunt coordinators who works in Tamil, Telugu, Malayalam and Hindi film industries. The duo has worked is over 75 movies.

प्रशस्ति – सत्ता के संघर्ष के एकवर्गी चित्रण के लिए।

Citation - A mono chromatic and visceral display of power struggle.

Synopsis of the film on page no. 134

नाथिचरामी
विशेष उल्लेख

Nathicharami | Special Mention
प्रशस्ति पत्र | CERTIFICATE

Kannada | 126 Mins | Director: Mansore | **Production Company:** Tejaswini Enterprises | **Screenplay:** Mansore | **Editor:** Nagendra K. Ujjani | **DOP:** Guruprasad Narnad | **Cast:** Sruthi Hariharan, Sanchari Vijay, Sharanya

श्रुति हरिहरन

श्रुति हरिहरन एक फिल्म अभिनेत्री और निर्माता है जो मुख्यतौर पर कन्नड़ फिल्मों में ही काम करती हैं। इनकी अन्य फिल्मों में लूसिया (2013), गोधी बन्ना साधारना मायकट्टू (2016), उर्वी (2017), ब्यूटीफुल मनासुगालु (2017) शामिल है।

Sruthi Hariharan is a film actress and producer working primarily in Kannada films. Her other films include 'Lucia' (2013), 'Godhi Banna Sadharana Mykattu' (2016), 'Urvi' (2017), 'Beautiful Manasugalu' (2017), etc.

प्रशस्ति – आधुनिक समय की एक नवयुवती की उलझनों का एक जटिल और बारीकी से किया गया वर्णन।
Citation - For the complex and nuanced portrayal of a new age Indian woman.

Synopsis of the film on page no. 134

कड़क
विशेष उल्लेख
Kadakh | Special Mention
प्रशस्ति पत्र | CERTIFICATE

Hindi | 100 Mins | Writter & Director: Rajat Kapoor | **Editor:** Suresh Pai | **DOP:** Rafey Mahmood | **Cast:** Ranvir Shorey, Shruti Seth, Rajat Kapoor, Kalki Koechlin, Chandrachoor Rai.

चंद्रचूड़ राय

चंद्रचूड़ राय हिंदी फिल्म और टीवी सीरीज के अभिनेता है, इन्हें आंखो देखी, (2013), दम लगा के हइशा (2015) और मेरठिया गैंगस्टर (2015) जैसी फिल्मों के लिए जाना जाता है। वे भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान (एफटीआईआई), पुणे से स्नातक हैं। इनकी हाल ही की फिल्मों में कड़क और अपस्टार्स (2019) शामिल है।

Chandrachoor Rai is an Hindi film and TV series actor known for acting movies like 'Aankhon Dekhi' (2013), 'Dum Laga Ke Haisha' (2015) and 'Meeruthiya Gangsters' (2015). He is a graduate from Film and Television Institute of India (FTII), Pune. His recent films include 'Kadakh' and 'Upstarts' (2019).

प्रशस्ति – एक गुस्सैल पति के मनोभावों का सजीव चित्रांकन।
Citation - Effective depiction of the emotions of an agitated husband.

Synopsis of the film on page no. 133

जोसफ
विशेष उल्लेख
Joseph | Special Mention
प्रशस्ति पत्र | CERTIFICATE

Malayalam | **138 Mins** | **Director:** M. Padmakumar | **Production Company:** Joju George | **Editor:** Kiran Das | **DOP:** Manesh Madhavan | **Writter:** Shahi Kabir | **Music by:** Anil Johnson, Ranjin Raj | **Production Company:** Appu Pathu Pappu Production | **Cast:** Joju George, Dileesh Pothan, Aathmiya Rajan, Malavika Menon, Madhuri Braganza |

जोजू जॉर्ज

जोजू जॉर्ज एक फिल्म अभिनेता और निर्माता हैं जो मलयालम फिल्मों के लिए काम करते हैं। इन्होंने अपने अभिनय का सफर मलयालम फिल्म माझाविलकोडरम (1995) से बतौर जूनियर आर्टिस्ट शुरू किया। आगे वे सहायक अभिनय करने लगे। इन्हें 2018 में चोला और जोसफ के लिए सर्वश्रेष्ठ चरित्र अभिनेता का केरल स्टेट अवार्ड मिल चुका है। ये 2015 में आई फिल्म चार्ली के भी सह–निर्माता थे।

Joju George is a film actor and producer who works in Malayalam films. He began his acting career as a junior artist in the Malayalam film 'Mazhavilkoodaram' (1995) and later began appearing in supporting roles. He went on to win the 2018 Kerala State Film Award for Best Character Actor for his performances in 'Chola' and 'Joseph'. He also co-produced the 2015 film 'Charlie'.

प्रशस्ति – एक सजग व्यक्ति का विश्वसनीय निरूपण जो मानव अंगों के गोरखधंधे को सामने लाता है।
Citation - For convincing portrayal of a vigilante, who busts "Human organ" racket.

Synopsis of the film on page no. 133

सुडानी फ्रॉम नाइजीरिया
विशेष उल्लेख

Sudani From Nigeria | Special Mention
प्रशस्ति पत्र | CERTIFICATE

Malayalam | **124 Mins** | **Director:** Zakariya Mohammed | **Production Company:** Happy Hours Entertainments | **Screenplay:** Zakariya Mohammed, Muhsin Parari | **Editor:** Naufal Abdullah | **DOP:** Shyju Khalid | **Cast:** Soubin Shahir, Samuel Abiola Robinson

सावित्री श्रीधरन

सावित्री श्रीधरन एक भारतीय थिएटर और फिल्म अभिनेत्री हैं। वह चालीस से अधिक वर्षों से कई कालीकट–आधारित थिएटर समूहों का हिस्सा रही हैं और उन्होंने 2018 में नाइजीरिया से फिल्म सुदानी में अपनी शुरुआत की। उनकी अन्य प्रमुख फिल्में वायरस (2019) और डाकिनी (2018) हैं।

Savithri Sreedharan is an Indian theatre and film actress. She has been a part of several Calicut-based theatre groups for over forty years and made her film debut in 2018 in the film 'Sudani from Nigeria'. Her other major films are 'Virus' (2019) and 'Dakini' (2018).

प्रशस्ति – गएक माँ की भावनाओं को बखूबी पेश करने के लिए।

Citation - With a backdrop of sports, the film explores the complexity of emotions in a mother-son's relationships.

Synopsis of the film on page no. 135

कथासार | Synopsis

अंधाधुन (Andhadhun)

आकार एक नेत्रहीन प्यानों प्लेयर हैं जो लंदन म्यूजिक कंसर्ट के लिए तैयारी कर रहा है। अचानक हुई एक मुलाकात के बाद, सोफी और आकाश दोस्त बन जाते हैं, उसके प्यानो बजाने के हुनर को पहचानते हुए, सोफी उसे अपने पिता के रेस्टोरेंट में ले जाती है जहां उसे नौकरी मिल जाती है। इसी रेस्टोरेंट में आकाश की मुलाकात एक गुजरे जमाने के एक अभिनेता प्रमोद सिन्हा से होतीी है, जो उससे अपनी पत्नी सिमी के लिए निजी तौर पर प्यानो बजाने का आग्रह करता है। वो अपनी पत्नी को एक सरप्राइज देना चाहता है। सिन्हा के घर पर, आकाश जो शायद ये दर्शाता है कि वो नेत्रहीन है, ना चाहते हुए पूर्व अभिनेता के कत्ल का गवाह बन जाता है और जाने ना अंजाने कई समस्याओं में घिरता जाता है।

Akash, a blind piano player, is preparing for a London music concert. After an accidental encounter, Sophie and Akaksh become friends. Recognising his talent as a pianist, Sophie takes him to her father's restaurant where he lands up a job. At the restaurant, Akash meets a yesteryears' actor Pramod Sinha who asks him to do a private piano session for his wife Simi, as a surprise present to her. At Sinha's house, Akash, who may be pretending to be visually-impaired, unwittingly becomes entangled in a number of problems as the murder of the former film actor takes place as he plays the piano.

ऑ (Awe)

राधा अपने प्रेमी कृष्णनवेनी के माता–पिता की अपेक्षाओं पर खरी उतरना चाहती है लेकिन वो उसे देखते ही नकार देते हैं। नाला खाना पकाना नहीं जानता लेकिन एक शेफ की नौकरी के लिए इंटरव्यू देने जाता है। एक मछली की डिश उसकी इज्जत बचा लेती है। आठ साल का मोक्ष एक अंहकारी जादूगर–योगी के कब्जे में है। लेकिन कुछ घटना, उसके अंहकार को चकनाचूर कर देती हैं। शिवा, एक ऐसा इंसान जो विज्ञान में दिलचस्पी रखता है, उसका सामना अपने भविष्य से होता है। मीरा, एक नशे की लत में पड़ी वेटर, अपने प्रेमी के साथ मिलकर अपने काम वाली जगह को लूटने की साजिश रचती है। लेकिन एक दुर्घटना उसे एक भयानक अनुभव के साथ छोड़ती है। वहीं एक परेशान लड़की काली जो 15–16 साल की है, आत्महत्या की कोशिश करती है। ये सभी कहानियां किस तरह एक साथ जुड़कर एक बड़ी कहानी बनाती है यही ऑ की जटिलता है।

Radha impresses parents listing qualities of her lover, Krishnaveni. But they disapprove the minute she walks in. Nala arrives for a job interview of a chef not knowing how to cook. A fish becomes his saving grace. Eight-year-old Moksha is overpowered by an egoistic magician-yogi. But upcoming events squash his ego. Shiva, a man interested in science, is confronted with his apparent future. Mira, a drug-addict waitress, conspires to loot her workplace with her boyfriend. But an accident leaves her with a haunting experience. Meanwhile, a troubled Kali, in her mid-20s, tries to commit suicide. How these stories blend in and form a bigger story forms the crux of 'Awe'.

बधाई हो (Baddhai Ho)

25 साल के नकुल कौशिक की अधेड़ उम्र की मां के गर्भवती होने की खबर से पूरा कौशिक परिवार सदमे में आ जाता है। सब लोग अब इस परिवार के बारे में बात कर रहे हैं जिससे उन्हें एक सामाजिक शर्मिंदगी का सामना करना पड़ता है। नकुल भावुकता और नाराजगी के असमंजस में झूलता रहता है और उसके अपने माता–पिता, तेज–तर्रार दादी, छोटे भाई गुल्लर और मंगेतर–सहकर्मी रीनी तथा दूसरे लोगों के साथ संबंधों में उतार–चढ़ाव आते हैं। वह लोगों से मिलने वाली शर्मिंदगी और अपने परिवार, खासकर अपनी मां के प्रति प्रेम में खुद को बंटा हुआ पाता है। बाद में वह अपने माता पिता के निजी जीवन और परिवार के इस नए स्वरूप को स्वीकार कर लेता है।

The news of 25-year-old Nakul Kaushik's middle-aged mother's pregnancy comes as a shock to the entire Kaushik household. Everyone's gaze is now turned towards the family which has to deal with the social embarrassment. What follows is a phase of resentment and emotional confusion for Nakul as he goes through ups-and-downs in his relationships – with father, mother, feisty grandmother; teenaged brother Gullar, fiancée-colleague Renee – and friends, relatives, and neighbours. Torn between public embarrassment and love for his family, especially his mother, he tries to come to terms with the idea of his parents' active sex life and the idea of family itself.

चि अर्जुन ला सौ (Chi Arjun La Sow)

वैसे तो अर्जुन का शादी करने का कोई इरादा नहीं है। फिर भी उसके माता–पिता उसकी एक लड़की के साथ एक मुलाकात तय करवाते हैं। वो लड़की को नहीं जानता लेकिन फिर जिस लड़की से वो मिलने वाला है उसे पंसद करने लगता है। लेकिन जल्दी ही हालात कुछ ऐसे बनते हैं कि उसका शादी को लेकर इरादा बदल जाता है।

Even though Arjun has no intentions of getting married, his parents set up a blind date for him at his place. Arjun falls for the girl he's about to meet, but soon, circumstances make him change his mind regarding marriage.

चुंबक (Chumbak)

बालू एक 15 साल का वेटर जो शहर की आपाधापी भरी जिंदगी को छोड़कर अपने गांव के बस स्टैंड के पास गन्ने के जूस का स्टॉल लगाने का सपना देखता है। पैसे से बदहाल और उतावला बालू अपने दोस्त धनंजय उर्फ डिस्को के साथ मिलकर चर्चित 'नाइजीरिया एसएमएस स्कैम' करके जल्दी पैसा बनाने की योजना बनाता है। लेकिन हजारों लोगों को भेजे गए इस टेक्स्ट मैसेज के फंदे में फंसता भी है तो कौन। एक सादा, गरीब, हालात को थोड़ा धीमे समझने वाला गांववाला प्रसन्ना। ऐसे आदमी को फांसने के अपराधबोध और अपने छोटे से सपने को पूरा करने के लालच के बीच बालू अब झूल रहा है।

Baalu, a 15-year-old waiter, dreams of escaping this wretched life in city and starting a small business of a sugarcane juice stall near his village's bus-stand. A desperate and broke Baalu, along with friend Dhananjay aka Disco, plans to earn some quick buck through the infamous 'Nigerian SMS Scam'. But, of the hundreds they expected to respond to his text messages, just one man falls for it – a simple,

कथासार | Synopsis

poor, mentally-slow villager called Prasanna. Caught between his guilt of fleecing such a man and the greed to fulfil his little ambitions, Baalu will now have to make a choice.

हामिद (Hamid)

786 नंबर को लेकर 8 साल का हामिद हमेशा असमंजस में रहता है। एक दिन उसे एक शिक्षक बताते हैं कि ये ऊपर वाले का नंबर होता है। अपने पिता के खोए हुए पुराने फोन में वो अलग अलग नंबर लगाता है और आखिरकार उसका फोन एक आदमी को लग जाता है जो उसे लगता है कि वो अल्लाह है। दूसरी तरफ अभय नाम का एक सीआरपीएफ का जवान होता है जो पहले तो इन सबमें दिलचस्पी नहीं दिखाता लेकिन बाद में उसे हामिद से बात करने में मजा आने लगता है। इस तरह दो अंजान लोग अंजाने में, एक दूसरे की दुनिया में बेहतर बदलाव लाते हैं।

The number 786 always bewildered eight-year-old Hamid. One day a teacher tells him that this is God's number. Trying different combinations on his missing father's old mobile phone, he gets connected to a person he believes is God. On the other side is Abhay, an CRPF jawan who is disinterested initially but ends up entertaining Hamid. These two, unknowingly and unintentionally, change each other's world for the better.

हरजीता (Harjeeta)

हरजीता, एक उपेक्षित लड़के की सच्ची कहानी है जो कई विषम परीस्थितियों से गुजरते हुए सफलता हासिल करता है। हरजीत सिंह, एक ट्रक ड्राइवर का बेटा है जो बेहद गरीबी से निकलकर एक पेशेवर भारतीय हॉकी प्लेयर बना। आगे चलकर वो 2016 के पुरुष जूनियर हॉकी वर्ल्ड कप का कप्तान बना, जहां भारत ने 15 साल बाद गोल्ड मेडल हासिल किया।

'Harjeeta' is based on the remarkable true story of an underdog who fights against all odds to come out as a winner. Harjeet Singh, son of a truck driver, overcame acute poverty to become a professional Indian hockey player. He went on to captain the Indian squad at the 2016 Men's Hockey Junior World Cup where India eventually won a Gold medal after 15 years.

हेल्लारो (Hellaro)

1975 में, एक युवा लड़की मंझरी की शादी कच्छ के रण मे स्थित एक छोटे से गांव में हो जाती है। वहां वह औरतों के समूह से जुड़ जाती है जो पैतृक समाज की बेड़ियों में बंधी हुई हैं। इससे उनको बस उसी समय मुक्ति मिलती है जब वो हर सुबह दूरदराज के इलाके में मौजूद जलाशय से पानी भरने जाती है। एक दिन, जब वो पानी भरने जा रही होती हैं, उन्हें बीच रेगिस्तान में कोई मिलता है और उनकी जिंदगी हमेशा के लिए बदल जाती है।

Circa 1975. Young Manjhri is married off in a small village in the Rann of Kutch. There, she joins a group of women shackled by patriarchal mandates. Their only escape to the suppression is when they go out to fetch water every morning to a distant waterbody. One day, while on their war to fetch water, they find someone in the middle of the desert and their lives are changed forever.

जॉसफ (Joseph)

अपनी पत्नी की मौत के बाद, एक सेवानिवृत्त पुलिस अधिकारी, जो अपनी खोजी प्रवृत्ति के लिए जाना जाता है, अप्रत्याशित रूप से एक आपराधिक मामले में खींच लिया जाता है।

Following the death of his wife, a retired police officer who is known for his investigative prowess, unexpectedly gets pulled into a criminal case.

कड़ख (Kadakh)

सुनील घर में अकेला होता है तभी उसके दरवाजे की घंटी बजती है, दरवाजें पर एक अजनबी खड़ा होता है जो खुद का राघव बताता है। बाद में पता चलता है कि वो छाया का पति है जिससे सुनील का रिश्ता है। सुनील हैरान रह जाता है लेकिन राघव उसे शांत रखता है, और सुनील से बोलता है कि वो बस उत्सुकतावश आ गया। लेकिन जल्दी ही राघव के सवाल दखलअंदाजी करने वाले हो जाते हैं। वह सुनील और छाया के रिश्ते की हर बात जानना चाहता है। यहां तक कि वो पल भी जो किसी के साथ साझा नहीं किए जा सकते और फिर अचानक वो अपने बैग से एक बंदूक निकालता है और खुद के सिर पर गोली मार लेता है। थोड़ी देर में सुनील की पत्नी मालती वापस घर लौटती है। सुनील अपनी पत्नी को बताता है कि इस आदमी को कुछ दिन पहले उसने नौकरी से निकाल दिया था। दोनो मिलकर लाश को छिपाने का काम करते है लेकिन फिर दीवाली की पार्टी के मौके पर इनके घर में ऐसे राज बाहर निकलते हैं जो सब कुछ उथल पुथल करके रख देते हैं।

Sunil is home alone when the doorbell rings. The stranger at the door introduces himself as Raghav. Turns out he is the husband of Chhaya, a woman that Sunil is having an affair with. Sunil is shocked but Raghav manages to put him at ease, says he just came to see him out of curiosity. But soon, Raghav's questioning becomes painfully intrusive. He wants to know all the details of Sunil's affair with Chhaya, even the awkward, uncomfortable ones. And then he produces a gun from his bag- and shoots himself in the head. In a few minutes his wife Malti comes back home. Sunil tells her this was a man he had fired from his office last week. Together they manage to hide the body. Later, the Diwali party at their place turns into a night of revelations as dark secrets keep tumbling out.

कथासार | Synopsis

कम्मार संभावम (Kammara Sambhavam)

फिल्म कम्मारन नाम्बियार के इर्द गिर्द बुनी हुई है जो एक निरुद्देश्य और बोझिल जिंदगी जी रहा है जहां वो उन्ही का विरोध करता है जो उसकी मदद करते हैं। लेकिन उसकी जिंदगी तब बदल जाती है जब वो नेताजी सुभाष चंद्र बोस से मिलता है और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में शामिल हो जाता है।

The film revolves around Kammaran Nambiar who lives an aimless and immoral life as he betrays those who have helped him. But his life changes for the better when he meets Netaji Subhash Chandra Bose and joins the Indian freedom struggle.

केदारा (Kedara)

नरसिंहा तरह तरह की आवाज निकालने का हुनर रखता है। इस कला की लोकप्रियता कम होने से नरसिंहा की रोजी रोटी पर भी असर पड़ता है। अपनी यादों के सहारे जिंदगी जीने वाला नरसिंहा, कबाड़ बेचने वाले केश्टो के साथ रहता है। नरसिंहा की जिंदगी में अब अतीत की तस्वीरों और आवाजों का ही सहारा है जब एक दिन केश्टो उसे एक आरामकुर्सी तोहफे में देता है जिसे वो काफी वक्त से लेना चाह रहा था। इस लकड़ी की कुर्सी ने नरसिंहा के व्यक्तित्व में आमूल चूल परिवर्तन किए। इसने नरसिंहा में एक आत्मविश्वास जगाया और हिम्मत दी। लेकिन इस बदलाव ने उसकी समझदारी पर असर छोड़ा जिसकी वजह से कई मुसीबतें और उतार चढ़ाव आए।

Narasingha is a ventriloquist. When the relevance of his art started to fade away, so did his livelihood. Resigned to life under the shadow of his memories, he breaks bread with a junk-dealer, Keshto. Narasingha's loneliness becomes a painted picture, replete with images and voices borrowed from the past. The story takes a turn when Keshto presents him with an armchair, something he had always coveted to possess. The wooden armchair brings about a transformation in his personality. It restores his confidence and adds bravado to his essence. But this transformation comes at the cost of his sanity, leading to a series of misfortunes and unexpected turns.

के.जी.एफ. (KGF)

इस कहानी की शुरूआत 1951 से होती है जब कर्नाटक के कोलार जिले में सोने की खोज होती है। उसी दिन एक बच्चा बेहद गरीबी में जन्म लेता है। बच्चे का नाम रखा जाता है राजा कृष्णाप्पा बैरया जो बढ़ा होकर बन जाता है रॉकी। वो 1960 में बॉम्बे (अब मुंबई) में पैसा और ताकत कमाने के लिए पहुंचता है क्योंकि उसकी मरती हुई मां की आखिरी इच्छा थी कि वो दुनिया का सबसे ताकतवर और पैसे वाला आदमी बने। अपनी मां को किए वादे को पूरा करने के लिए वो वहां सोने के माफिया गैंग में शामिल हो जाता है। बाद में उसे गरुड़ को मारने के लिए बोला जाता है जो एक क्रूर और कोलार गोल्ड फील्ड (के.जी.एफ) का होने वाला उत्तराधिकारी है। बाद में रॉकी को न सिर्फ वहां ताकत और पैसा नजर आता है बल्कि एक और और बात समझ में आती है जो पैसे से कहीं बढ़कर है। वो है सम्मान—क्या वो डॉन बन पाएगा—क्या वो अपने लोगों को सालों से चली आ रही गुलामी के चंगुल से बचा पाएगा। यही सवाल कहानी को आगे बढ़ाते हैं।

The story begins in 1951 when gold is discovered in the Kolar district in Karnataka. The same day a boy named Raja Krishnappa Bairya 'Rocky' is born who grows up in poverty. He arrives in Bombay (now Mumbai) in the 1960s to seek power and wealth as desired by his dying mother. He fulfils his promise made to his mother as he gets successfully involved with the gold mafia there. Later, he is recruited to kill Garuda, the oppressive heir-in-waiting, in Kolar Gold Fields (K.G.F.). He finds not only wealth and power but also something more meaningful, respect. Will he be able to become a Don? Will he set his people free from the age old slavery?

महानटी (Mahanati)

महानटी, दक्षिण की महान अभिनेत्री सावित्री का वृतांत जीवन बयान करती है जिन्होंने 50 और 60 के दशक में फिल्म उद्योग में तूफान ला दिया था। फिल्म की कहानी उनकी जिंदगी के कई बुरे दौर के जरिये आगे बढती है और बताती है कि किस तरह तमाम विषम परिस्थितियों का सामना करते हुए अंत में उन्होंने जिंदगी को अपनी तरह से जिया।

Mahanati chronicles the life of legendary southern actor Savitri who took the film industry by storm in the late 50s and 60s. The film goes through various tragic incidents in her personal life, and how she stood up against all odds and the result of her choices in life.

नाल (Naal)

महाराष्ट्र में नदी के किनारे बसे एक दूरदराज के गांव में चैतन्य नाम का एक आठ साल का शरारती लड़का रहता है। वो अपनी जमीदार पिता के लाड़ और मां के प्यार और देखरेख में पला बढ़ा है। नाल चैतन्य की भावुक दुनिया की कहानी है जो उसके अपनी मां के प्यार के एहसास के सफर को बयान करती है।

Chaitanya is an eight-year-old mischievous boy who lives in a remote village in Maharashtra, along the banks of a river. He is fathered by a small-time landlord and pampered by a loving and caring mother. 'Naal' is about Chaitanya's emotional world and follows him on an unexpected journey of experiencing motherly love.

नाथिचिरामी (Nathicharami)

ये फिल्म एक ऐसी नायिका की निजी जिंदगी पर आधारित है जिसका जीवन और बाकी सब कुछ शारीरिक जरूरत से जुड़ी सामाजिक वर्जनाओं में फंसा हुआ है। गौरी एक आधुनिक, पढ़ी लिखी, आत्मनिर्भर विधवा है जो आई टी सेक्टर में काम करती है। वहीं सुरेश अपनी शादीशुदा जिंदगी से नाखुश है और प्यार की तलाश में है। क्या होता है जब गौरी और सुरेश मिलते हैं। और किस तरह से वो एक दूसरे को समझ पाते हैं, इसी में छुपा है नाथिचरामी का सार।

This film is woven around the female protagonist whose personal life and her overall being is stuck within the social taboos related to carnal desires. Gowri is a modern, well-educated, independent widow, working in the IT sector, while Suresh leads an unhappy married life who is on a quest to find the love of his life. What happens when Gowri and Suresh meet; and how do they come to terms with each other mark the essence of 'Nathicharami'.

कथासार | Synopsis

ओलू (Olu)

ओलु एक खानाबदोश लड़की की कहानी है जो रहस्यमयी तरीके से केरल के बैकवॉटर में बची रह जाती है जहां उसके बलात्कारियों ने उसे डुबो दिया था। केवल पूर्णिमा (पूरे चांद की रात) के दौरान, वो पानी के ऊपर की दुनिया देख सकती है। ऐसी ही एक रात को उसकी मुलाकात वासु, एक युवा अकुशल पेंटर से होती है जो वहां बोट की सवारी कर रहा होता है। प्यार में पड़कर वो वासु को ऐसी पेटिंग बनाने के लिए प्रेरित करती है जो उसका जीवन बदल देगी। लेकिन प्यार को लेकर उनके अंदरूनी विचार बहुत अलग हैं जिसकी खाई कभी नहीं मिट पाती।

'Olu' (She) is the tale of a Gypsy girl who mysteriously survives under the Kerala backwaters where she has been sunk by her rapists. Only during full moon nights, can she see the world above water. It is on such a night that she happens to 'meet' Vasu, a young untalented painter, rowing his boat. Out of love, she empowers him to create paintings that will change his life. But their contrasting inner visions of love may remain unbridgeable.

ओन्डाला एराडाल्ला (Ondalla Eradalla)

सात साल के समीर का पालतू जानवर बानु दुर्घटनावश खो जाता है। बानु को ढूंढने के दौरान समीर एक शहर मे पहुंच जाता है जिसका नाम है पेटे और वो वहां पूरी तरह अकेला है। उसकी मुलाकात समाज के विभिन्न वर्गों के लोगों से होती है, क्या इन स्वार्थी लोगों के बीच मासूम समीर वापस अपने पालतू जानवर से मिल पाएगा। फिल्म ने इस तथ्य पर जोर देने की कोशिश है कि एक दूसरे की मदद करना ही जिंदगी में खुशी हासिल करने का एकमात्र मंत्र है।

Seven-year-old boy Sameera accidentally loses his beloved pet Banu. While searching for Banu, Sameera reaches a town called 'Pete' and is all alone. He meets many people from different sections of the society. Will innocent Sameera get reunited with his pet among the selfish people? The film tries to emphasize on the fact that helping each other is mantra to be happy and content in life.

पद्मावत (Padmaavat)

चित्तौड़ की रानी पद्मावती बेइंतहा खूबसूरत है। जब उसकी सुंदरता की कहानी दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी के कानों तक पहुंचती हैं तो वह किसी भी कीमत पर उसे पाना चाहता है। वो अपनी क्रूर सेना के साथ चित्तौड़ पर हमला बोल देता है। खिलजी और चित्तौड़ के राजा महारावल रतन सिंह के बीच खूनी जंग छिड़ जाती है और अपने साम्राज्य और रानी की रक्षा में राजा की जान चली जाती है। खिलजी किले की दीवारों को तोड़ कर अंदर घुसने की तैयारी करता है, लेकिन सब व्यर्थ हो जाता है क्योंकि रानी अपनी मर्यादा और साम्राज्य के सम्मान की खातिर जौहर करना स्वीकार कर लेती है।

Queen Padmavati of Chittor is blessed with exceptional beauty. When the tales of her matchless beauty reaches Delhi's Sultan Alauddin Khilji, he wants to possess her at any cost. He attacks Chittor with brutal force. A bloody battle ensues between Khilji and Chittor's King Maharawal Ratan Singh who dies defending his kingdom and his queen. Khilji then manages to breach the fortress, but in vain as the Queen commits 'johar' to protect her dignity and honor of her kingdom.

रंगस्थलम (Rangasthalam)

एक युवा जो सुन नहीं सकता है और उसका छोटा भाई मिलकर रंगस्थलम गांव के मुखिया के 30 साल से चल रहे दमनकारी नियमों के खात्मे का फैसला लेते हैं।

A young man with hearing impairment and his elder brother decide to end the 30 years of tyrannical rule of Phanindra, the president of Rangasthalam village.

सुडानी फ्रॉम नाइजिरिया (Sudani From Nigeria)

माजिद केरल के मल्लापुरम में रहने वाला एक फुटबॉल प्रेमी है। वो स्थानीय प्रतियोगिताओं के लिए विदेशी खिलाड़ियों के नियुक्ति एजेंट के तौर पर काम करता है। सेम्युअल नाम के एक नाइजीरियन खिलाड़ी को वो टीम में रखता है लेकिन उसकी पीठ बुरी तरह से चोटिल हो जाती है और उसे दो महीने के आराम की सलाह दी जाती है जिसके बाद माजिद उसे अपने घर ले जाता है। एक विदेशी फुटबॉल खिलाड़ी की मेजबानी करना और दोनों के फुटबॉल के प्रति लगाव से माजिद के पड़ोसी और रिश्तेदार भी सेम्युअल को बहुत अच्छे से रखते हैं। लेकिन जल्दी ही इस खूबसूरत दोस्ती पर कानून के नाम पर सरकारी अधिकारी संकट खड़ा कर देते हैं।

Majid, a typical football lover from Malappuram in Kerala, works as a recruitment agent of foreign players for local tournaments. When Samuel, a Nigerian footballer hired by him, suffers a severe back injury and is advised two months' bed rest, Majid is obliged to take him home. Ecstatic to host a foreign footballer and common love for football, Majid's relatives and neighbourhood shower their love on Samuel. But soon the beautiful story of friendship is disrupted by the state officials in the name of law.

तारीख (Taarekh)

कथानक दो बेटों के बीच संघर्ष के इर्द–गिर्द घूमता है, जिनके जीवन अचानक दुर्घटना में उनके पिता के निधन के बाद अलग हो गए। एक आवेशपूर्ण मेकअप कलाकार ने अपने जीवन को उलट दिया है जब एक मनोरोगी 'धारावाहिक वकील' उसके काम में रुचि लेता है। और उसके नैतिक मूल्यों का परीक्षण होता है।

The plot revolves around the conflict between two sons whose lives are poles apart after their father demised in a sudden accident. A passionate make-up artist has his life turned upside down when a psychopathic "serial lawyer" takes an interest in his work - and has his moral compass put to test.

कथासार | Synopsis

तेंडल्या (Tendlya)

ये फिल्म 23 साल के ड्राइवर गज्या के बारे में है जो खुद के पैसों से एक रंगीन टीवी लेने का फैसला लेता है ताकि वो तेंदुलकर को क्रिकेट खेलते हुए देख पाए। वहीं एक 13 साल का स्कूल जाने वाला लड़का है तेंडल्या जो तेंदुलकर की तरह खेलना चाहता है। तेंडल्या 1990 के दौर को दिखाती है जब भारतीय समाज बदलाव के दौर से गुजर रहा था और टेलीविजन सेट ने लोगों की जिंदगी को प्रभावित करने में अहम रोल निभाया था।

The film is about 23-year-old driver Gajya, who decides to buy a colour TV set of his own to watch cricketing legend Sachin Tendulkar's Game. At the same time a 13-year-old schoolboy, Tendlya, wants to play cricket like Tendulkar. 'Tendlya' is set in the 1990s when Indian society was going through marked transition and a television (TV) set was still a major aspiration for people.

उरीः द सर्जिकल स्ट्राइक (Uri: The Surgical Strike)

पांच अध्याय में बंटी फिल्म, 2016 में पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में छिपे हुए संदिग्ध आतंकियों पर किए गए भारतीय सेने के हमले को दर्शाती है। फिल्म उथल पुथल से भरी 11 घटनाओं को दिखाती है जिससे गुजरते हुये भारतीय सेना की एक स्पेशल फोर्स ने आतंकी समूह से अपने सैनिकों की शहादत का बदला लेने के लिए इसी साल उरी में स्ट्राइक को अंजाम दिया।

Divided over five chapters, the film depicts the surgical strike conducted by the Indian military against suspected militants in Pakistan-occupied Kashmir in 2016. The film features 11 tumultuous events over which the strike was carried out by the Indian Army's Special Forces to avenge the killing of fellow army men by a terrorist group in Uri the same year.

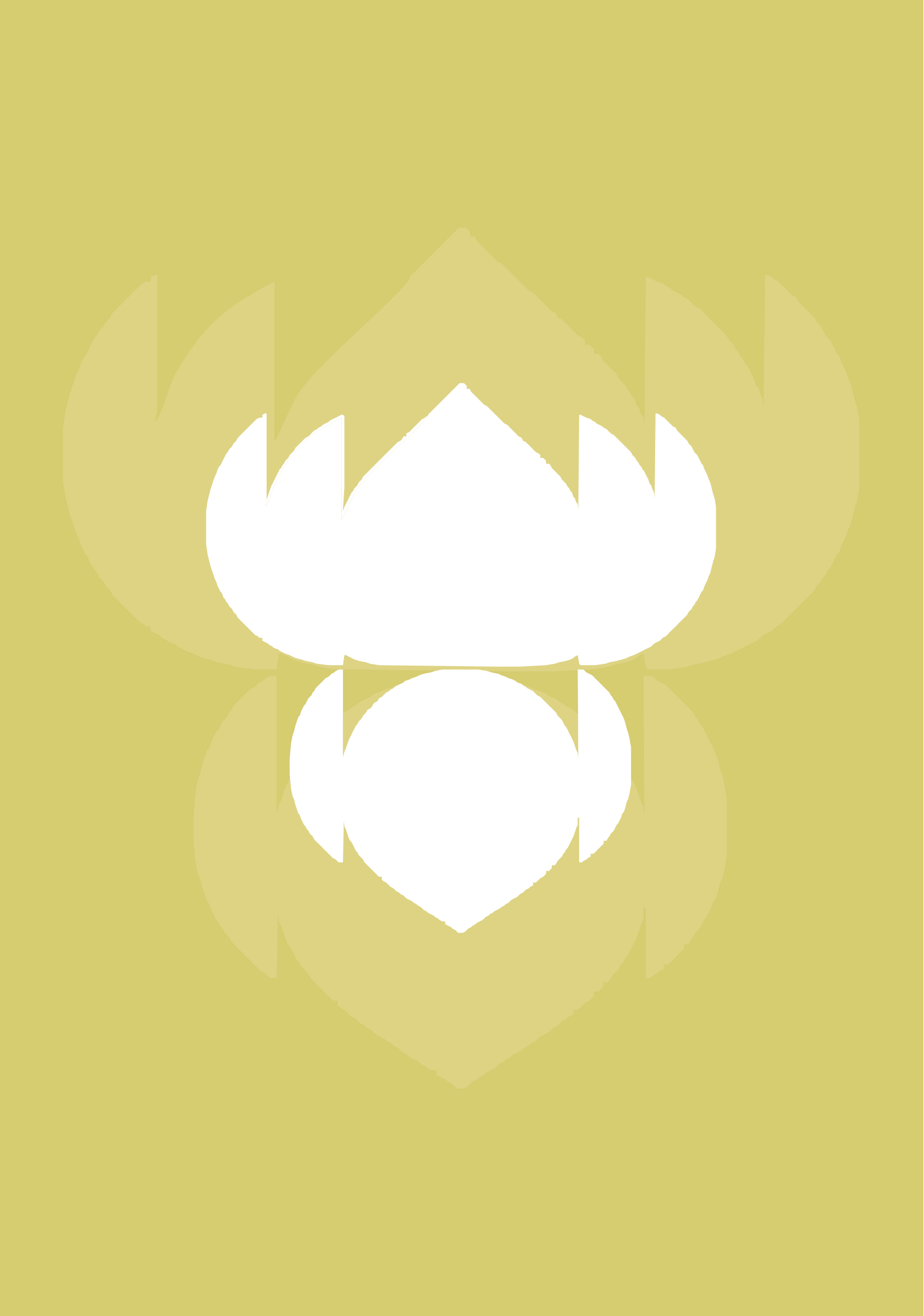

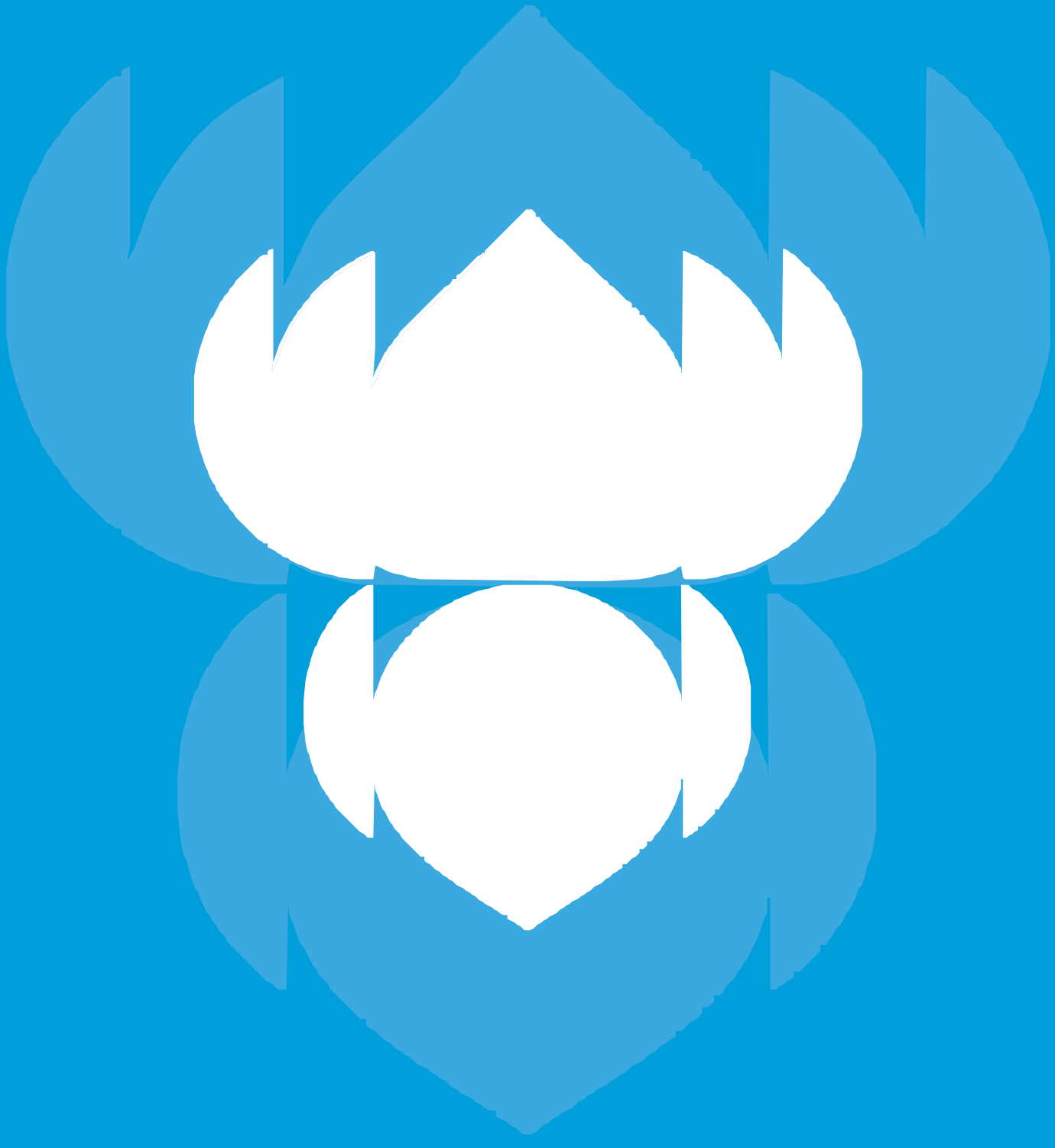

गैर फ़ीचर फ़िल्में
NON-FEATURE FILMS

66 राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार 2018

NATIONAL FILM AWARDS 2018

35 मि.मि. या बड़े गेज या डिजिटल प्रारूप में बनी किन्तु फ़िल्म प्रारूप अथवा वीडियो/डिज़िटल प्रारूप में जारी किसी भी भारतीय भाषा में बनी और केन्द्रीय फ़िल्म प्रमाणन बोर्ड द्वारा वृत्त–चित्र/न्यूजरील/ गैर–कथाचित्र/लधु कल्पित के रूप में प्रमाणीकृत फ़िल्म ग़ैर फ़ीचर फ़िल्म वर्ग के लिए पात्र है।

Films made in any Indian language, shot on 35 mm or in a wider gauge or digital format but released on either film format or Video/Digital format and certified by the Central Board of Film Certification as a Documentary/Newsreel/Non-Fiction/Short Fiction are eligible for non-feature film section.

AAI SHAPPATH (Marathi)
Best Direction
आई शपथ (मराठी)
सर्वश्रेष्ठ निर्देशन

AMOLI (Konkani)
Best Investigative Film
अमोली (कोंकणी)
सर्वश्रेष्ठ खोजी फिल्म

BUNKAR: THE LAST OF THE VARANASI WEAVERS (English, Hindi)
Best Arts & Cultural Film
बुनकरः द लास्ट ऑफ द वाराणसी वीवर्स
सर्वश्रेष्ठ कला एवं सांस्कृतिक फिल्म

CHALO JEETE HAIN (Hindi)
Best Film On Family Values
चलो जीते हैं (हिन्दी)
पारिवारिक मूल्यों पर सर्वश्रेष्ठ फिल्म

CHILDREN OF THE SOIL (Hindi)
Best Audiography
चिल्ड्रन ऑफ द सोइल (हिन्दी)
सर्वश्रेष्ठ ध्वनि आलेखन

EKAANT (Hindi)
Special Jury Award
एकांत (हिन्दी)
निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार

FELUDA: 50 YEARS OF RAY'S DETECTIVE (English)
Best Debut Non Feature Film of A Director
फेलूदाः 50 इयर्स ऑफ रेज डिटेक्टिव (अंग्रेजी)
निर्देशक की सर्वश्रेष्ठ प्रथम गैर–फीचर फिल्म

G D NAIDU: THE EDISON OF INDIA (English)
Best Science & Technology Film
जी डी नायडूः द एडिसन ऑफ इंडिया (अंग्रेजी)
सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक एवं तकनीकी फिल्म

GLOW WORM IN A JUNGLE (Marathi)
Special Mention
ग्लो वॉर्म इन ए जंगल (मराठी)
विशेष उल्लेख

JYOTI (Marathi)
Best Music Direction
ज्योती (मराठी)
सर्वश्रेष्ठ संगीत निर्देशन

KHARVAS (Marathi)
Best Short Fiction Film
खरवस (मराठी)
सर्वश्रेष्ठ लघु कल्पित फिल्म

गैर–फ़ीचर फ़िल्में । एक नज़र में NON-FEATURE FILMS | AT A GLANCE

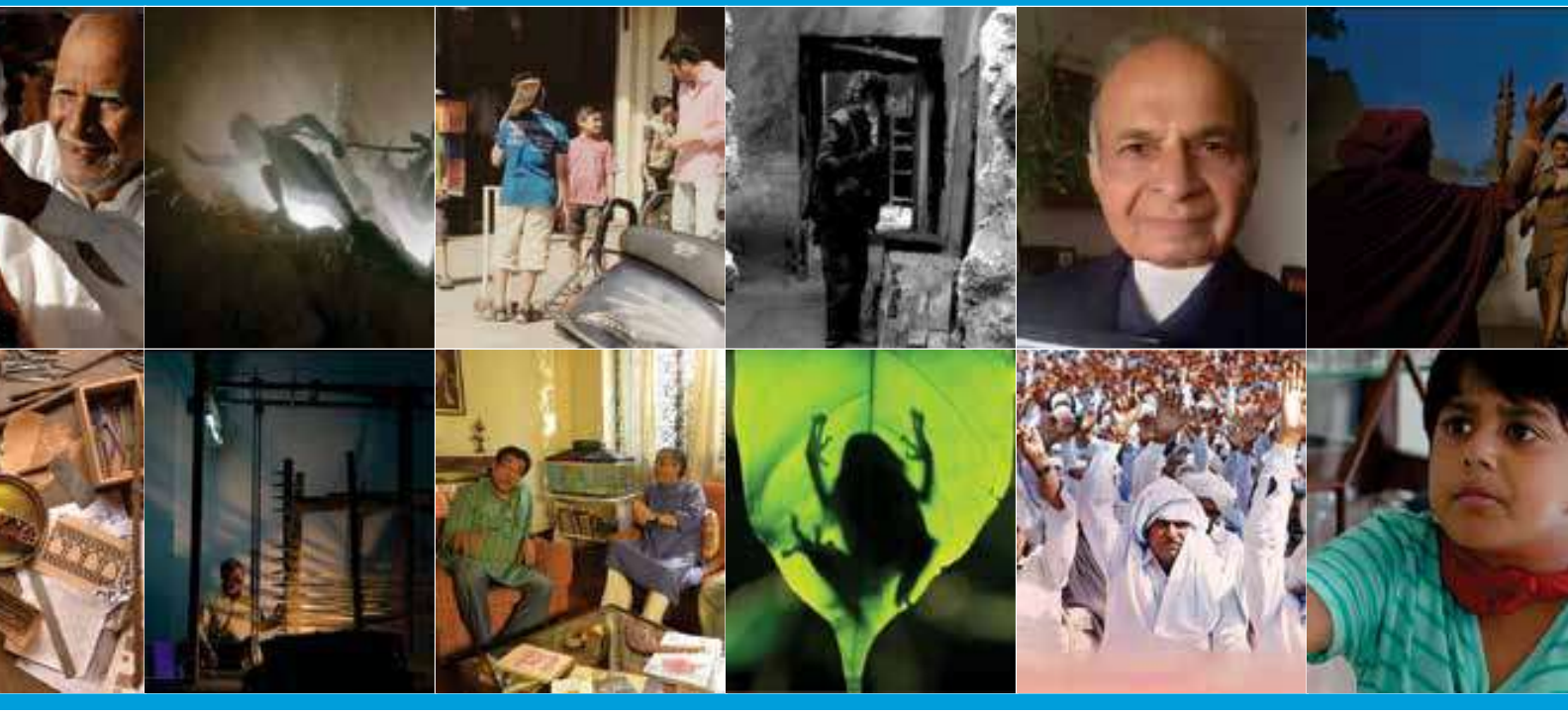

LADDOO (Hindi)
Special Mention

लड्डू (हिन्दी)
विशेष उल्लेख

MADHUBANI – THE STATION OF COLOURS (Hindi)
Best Naration Voice-over

मधुबनी–द स्टेशन ऑफ कलर्स (हिन्दी)
सर्वश्रेष्ठ प्रकथन / वायस ओवर

MAHAAN HUTATMA (Kannada)
Special Mention

महान हुतात्मा (कन्नड़)
विशेष उल्लेख

REDISCOVERING JAJAM (Hindi)
Best Promotional Film

रीडिस्कवरिंग जाजम (हिन्दी)
सर्वोत्तम प्रोत्साहन देनेवाली फिल्म

SARALA VIRALA (Kannada)
Best Educational Film

सरला विराला (कन्नड़)
सर्वश्रेष्ठ शैक्षिक फिल्म

THE SECRET LIFE OF FROGS (English)
Best Non Feature Film
Best On-Location Sound Recordist
Best Cinematography

द सीक्रेट लाईफ ऑफ फ्रॉग्स (अंग्रेजी)
सर्वश्रेष्ठ गैर फीचर फिल्म
सर्वश्रेष्ठ ऑन–लोकेशन साउन्ड रेकॉर्डिस्ट
सर्वश्रेष्ठ छायांकन

SON RISE (English, Hindi)
Best Non Feature Film
Best Editing

सन राइज (अंग्रेजी, हिन्दी)
सर्वश्रेष्ठ गैर फीचर फिल्म
सर्वश्रेष्ठ संपादन

SWIMMING THROUGH THE DARKNESS (Bengali)
Best Film On Sports

स्विमिंग थ्रू द डार्कनेस (बंगाली)
खेलों पर आधारित सर्वश्रेष्ठ फिल्म

TAALA TE KUNJEE (English, Hindi)
Best Film On Social Issues

ताला ते कुन्जी (अंग्रेजी, हिन्दी)
सामाजिक मुद्दों पर सर्वश्रेष्ठ फिल्म

WHY ME? (English, Hindi)
Special Jury Award

वाय मी? (अंग्रेजी, हिन्दी)
निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार

THE WORLD'S MOST FAMOUS TIGER (English)
Best Environment Film

द वर्ल्ड्स मोस्ट फेमस टाइगर (अंग्रेजी)
सर्वश्रेष्ठ पर्यावरण फिल्म

सन राइज़
सर्वश्रेष्ठ गैर फ़ीचर फ़िल्म

Son Rise | Best Non-Feature Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,50,000/-

Hindi | 120 Mins | Director: Vibha Bakshi | **Production Company:** V2 Film and Design Pvt. Ltd. | **Editor:** Hemanti Sarkar | **DOP:** Attar Singh Saini

कथासार - लड़का–लड़की के बीच लिंगानुपात में भारी अंतर को लेकर बदनाम हरियाणा में औरतों के खिलाफ अपराध में बढ़ोतरी तो है लेकिन सब कुछ खत्म नहीं हुआ है। ऐसा ही कुछ यह फिल्म बताने की कोशिश करती है। ये फिल्म बताती है कि किस तरह एक साधारण इंसान असाधारण काम करते हुए महिलाओ के अधिकार और लैंगिक समानता के लिए लड़ता है। एक आधुनिक सोच का गांव प्रधान और दो बेटियों का बाप, क्षेत्रीय राजनीति के अखाड़े में जहां पुरुषों का दबदबा है महिलाओं के प्रवेश के लिए संघर्ष करता है, वहीं एक किसान जो समाज के विरोध के बावजूद सामूहिक बलात्कार पीड़िता के साथ शादी रचाता है। क्या यही वो आशा की किरण है जिसे हम तलाश रहे हैं?

Synopsis - The infamous skewed girl-boy sex-ratio in Haryana may have resulted in an unprecedented rise in crimes against women. However, all may not be lost, as this film follows 'ordinary' men doing the 'extraordinary' work in their struggle for women's rights and gender justice. From a forward-thinking village chief and father of two daughters, fighting for women to enter the male-dominated arena of local-politics, to a farmer who, in an arranged marriage, defies society by marrying a gang rape survivor. Can these glimmers be the rays of hope we have been looking for?

परिचय

विभा बक्षी (Vibha Bakshi)

विभा बक्षी एक फिल्मकार, पत्रकार और बोस्टन यूनिवर्सिटी की पूर्व छात्रा हैं। इससे पहले इन्होंने 'डॉटर्स ऑफ मदर इंडिया' (2015) का निर्देशन किया था। इस फिल्म के लिए उन्हें सामाजिक मुद्दों पर सर्वश्रेष्ठ फिल्म का राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार मिला था।

Vibha Bakshi is a filmmaker, journalist and an alumna of Boston University. She earlier directed 'Daughters of Mother India' (2015), which won the National Film Award for Best Film on Social Issues.

PROFILE

वी2 फिल्म एंड डिजाइन (V2 Film and Design)

वी2 फिल्म एंड डिजाइन एक पुरस्कार विजेता फिल्म प्रोडक्शन कंपनी है जिसकी स्थापना फिल्मकार और पूर्व सीएनबीसी पत्रकार विभा बक्षी ने की है।

V2 Film and Design is an award-winning film production company founded by filmmaker and former CNBC journalist Vibha Bakshi.

प्रशस्ति – बदल रहा है समाज, बदल रहे हैं लोग भ्रूण हत्या है एक रोग स्त्री पुरुषों में समानता लानी है अन्याय अत्याचार के खिलाफ आवाज उठानी है जो अब तक नहीं हुआ उसकी ये कहानी है अब एक नई रौशनी फैलानी है।

Citation - For its powerful portrayal of the mindset and effects of female infanticide, one of the country's most heinous mass crimes, and for portraying the courage of those who stand to fight against it where it is most prevalent.

द सीक्रेट लाइफ ऑफ फ्रॉग्स
सर्वश्रेष्ठ गैर फीचर फिल्म

The Secret Life of Frogs | Best Non-Feature Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,50,000/-

English | **54 Mins** | **Directors:** Ajay Bedi, Vijay Bedi | **Production Company:** Bedi Universal | **Cast:** Jeff Alan Greenway

कथासार - 'दि सीक्रेट लाइफ ऑफ फ्रॉग्स' भारत के उभयचरों पर बनी पहली फिल्म है। यह फिल्म कमजोर हो रहे पश्चिमी घाट पर व्यापक रूप से शूट की गई, जो हजारों दुर्लभ वनस्पतियों और जीवों का घर है। फिल्म मेंढकों की अनूठी प्रजातियों को दिखाती है जैसे जामुनी मेंढक जो विलुप्त होने की कगार पर है और जिसे तुरंत संरक्षण की दरकार है। यह वो प्रजाति है जिसके बारे में कोई भी उभयचर विशेषज्ञ अच्छे से जानता है और ऐसा माना जाता है कि ये डायनासोर के वक्त से मौजूद हैं। अगर जामुनी मेंढक के संरक्षण के लिए कोई भी प्रयास किया जा सकता है तो वो होना चाहिए, यह पारिस्थितिकी तंत्र के आदर्श दूत है जो पश्चिमी घाट को बचा सकते हैं।

Synopsis - 'The Secret Life of Frogs' is the first-ever film on Amphibians of India. The film, shot extensively in the fragile Western Ghats, showcases unique species of frogs like the purple frogs which are critically endangered and require immediate protection. It's a species that every amphibian expert is aware of and is believed to have co-existed with dinosaurs. If any effort at all is to be put into conservation it has to go towards the Purple frog, which can be the ideal ambassador for the ecosystem that makes up the Western Ghats, which is home to thousands of rare flora and fauna.

परिचय

अजय बेदी और विजय बेदी (Ajay Bedi & Vijay Bedi)

अजय बेदी और विजय बेदी वन्य जीवन फिल्मकारों की तीसरी पीढ़ी से हैं। ये सबसे युवा एशियाई हैं जिन्होंने अपनी फिल्म 'दि पोलिसिंग लंगूर' और 'शेरब ऑफ दि मिस्ट' के लिए वाइल्डस्क्रीन अवार्ड्स (ग्रीन ऑस्कर) जीता है।

Ajay Bedi & Vijay Bedi are the third generation of wildlife filmmakers. They are the youngest Asians to have won the Wildscreen Awards (Green Oscar) for their films: 'The Policing Langur' and 'Cherub of the Mist'.

PROFILE

बेदी यूनिवर्सल (Bedi Universal)

बेदी यूनिवर्सल कई नामी फिल्मकारों और सुप्रसिद्ध अंतर्राष्ट्रीय चैनलों को अलग अलग विषयों के लिए फिल्म प्रोडक्शन की सेवा दे चुका है।

Bedi Universal has provided film production services to leading filmmakers and well-known international channels on a wide spectrum of subjects.

प्रशस्ति – टर्र टर्र टर्र... एक अनजानी भाषा से संवाद। कुएं के मेढक के जीवन को देती विस्तार। ध्वनि, दृश्य का अद्भुत चमत्कार।

Citation - For telling the tale, with profundity and beauty, of one of the world's most unique and hitherto neglected amphibians.

फेलूदा: 50 इयर्स ऑफ रेज डिटेक्टिव निर्देशक की पहली सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म

FELUDA : 50 Years of Ray's Detective | Best Debut Film of a Director

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,50,000/-

Bengali | 112 Mins | Director: Sagnik Chatterjee | **Producer:** Sagnik Chatterjee | **Editor:** Sujoy Dutta Ray | **Cast:** Sandip Ray, Soumitra Chatterjee, Sabyasachi Chakraborty, Abir Chatterjee, Kushal Chakraborty, Saswata Chatterjee, Ritwick Chakraborty, Paran Bandopadhyay

कथासार - 2017 में फेलुदा 50 के हो गए. सत्यजीत रे द्वारा तैयार किया गया यह लोकप्रिय कालप्निक प्रायवेट डिटेक्टिव किरदार अपनी पैनी नजर, विश्लेषण और आत्मविश्लेषण के साथ ही शारीरिक क्षमता के लिए भी लिए याद रखा जाता है। किसी काल्पनिक किरदार के जीवन पर बनी यह पहली भारतीय फिल्म है और ये वृत्तचित्र बेहतरीन इंटरव्यू, चित्रण, अनोखे फुटेज, ऑडियो क्लिप, रेडियो, ऑडियो बुक, कॉमिक स्ट्रिप के जरिए इस किरदार के 50 साल के सफर को दिखाता है। यह फिल्म बताती है कि किस तरह फेलुदा ने एक कल्ट का स्तर हासिल किया और यह सामाजिक और सांस्कृतिक सोच का हिस्सा बनता गया और जिसके प्रशंसक दुनिया भर में फैले हैं। साथ ही यह फिल्म दुनिया के महान फिल्मकारों में से एक सत्यजीत रे के साहित्यिक और डिजाइनर आयाम पर भी रोशनी डालती है।

Synopsis - In 2017, 'Feluda' turned 50. Created by the maestro Satyajit Ray, this iconic fictional private detective is renowned for his remarkable observation, analytical, and introspective qualities, alongside physical attributes bordering on the fantastic. As the first Indian biopic on a fictional character, this documentary showcases and analyses the 50-year journey through fascinating interviews and illustrations, rare film and audio clips, radio plays, audio books, comic strips. It explores how he attained 'cult' status, and eventually became part of the 'socio-cultural' existence, with admirers worldwide. It also throws light on the designer and literary genius side of one of the world's greatest filmmakers, Satyajit Ray.

परिचय | PROFILE

सग्निक चटर्जी (Sagnik Chatterjee)

सग्निक चटर्जी एक लेखक, निर्देशक और निर्माता हैं जो कोलकाता, पश्चिम बंगाल से हैं और कई राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय वृत्तचित्रों के निर्माण के लिए जाने जाते हैं. इन्होंने अपनी पहली लघु फिल्म फेलुदा : 50 ईयर्स ऑफ रेज डिटेक्टिव (2019) के लिए गैर फीचर फिल्म श्रेणी में नवोदित निर्देशक के लिए राष्ट्रीय फिल्म सम्मान हासिल किया है।

Sagnik Chatterjee is a writer, director and producer from Kolkata, West Bengal and is known for producing national and international documentaries. He won a National Film Award for Best Debut Non-Feature Film of a Director for his first short film 'Feluda: 50 Years of Ray's Detective' (2019).

प्रशस्ति – कहानी के हैं पात्र, पात्रों की है कहानी सुनी है पढ़ी है देखी है कइयों ने ये कहानी ध्वनि, दुर्लभ चित्र, चित्रण, संवाद, प्रकथन
की है जुबानी निर्देशक की सर्वोत्तम प्रथम गैर फीचर फिल्म निर्णायकों ने जानी।

Citation - For springing to life and celebrating Satyajit Ray's most popular fictional character, with depth and aesthetic, across varied media.

बुनकर – द लॉस्ट ऑफ द वाराणसी वीवर्स
सर्वश्रेष्ठ कला | सांस्कृतिक फ़िल्म

Bunkar: The Last of the Varanasi Weavers | Best Arts/Cultural Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

English | **67 Mins** | **Director:** Satyaprakash Upadhayay | **Production Company:** Narrative Pictures & Sapana Sharma | **Screenplay:** Sarah Lucy Beach | **DOP:** Vijay Mishra | **Editor:** Arunabha Mukherjee

कथासार - यह फिल्म बनारस के बुनकरों की जिंदगी को दिखाती है और साथ ही यह भी कि भारत की विरासत को जिंदा रखने के लिए इन्हें क्या कीमत चुकानी पड़ रही है। यह बुनकर बेहद बारीक बुनाई के जरिए मनुष्य के जहन में आई किसी भी कल्पना को जीवित कर सकते हैं। लेकिन सस्ता पावरलूम कपड़ा तेजी से हमारी जिंदगी में शामिल हो रहा है जिसकी वजह से इनका जीवन अधर में लटक गया है। फिल्म हमें सोचने पर मजबूर कर देगी कि इनकी जिंदगी में फर्क लाने के लिए हम क्या कर सकते हैं। वरना इस कला को हम हमेशा के लिए खो देंगे।

Synopsis - This film captures the lives of Varanasi weavers and the price they pay to keep Indian legacy alive. These weavers can weave with precision almost anything that the human mind can imagine. However, with cheap power loom fabrics rapidly making their way into our wardrobes, they stand at a cross roads. The film compels us to rethink the role we can play in making a difference to their lives. Else, we may lose this art forever.

परिचय

सत्यप्रकाश उपाध्याय (Satyaprakash Upadhyay)

सत्यप्रकाश उपाध्याय एक निर्माता और निर्देशक हैं और नैरेटिव पिक्चर्स के सहसंस्थापक हैं. इनकी लघु फिल्म नीर के लिए इन्हें 8वें दादा साहेब फालके फिल्म समारोह 2018 में निर्माता के लिए विशेष ज्यूरी सम्मान मिला था. बुनकर इनकी पहली निर्देशित फिल्म है. फिल्म को भारतीय पैनोरेमा, इफ्फी 2018 के साथ ही और भी कई फिल्म समारोह में चयनित किया गया.

Satyaprakash Upadhyay is a producer and director and the co-founder of Narrative Pictures. His short film 'Neer' as a producer won special jury mention in the 8th Dada Saheb Phalke Film Festival 2018. 'Bunkar' is his directorial debut. The film was selected for various film festivals including the Indian Panorama, IFFI 2018.

PROFILE

नैरेटिव पिक्चर्स (Narrative Pictures)

नैरेटिव पिक्चर्स एक फिल्म निर्माण कंपनी है जिसके संस्थापक निर्देशक सत्यप्रकाश उपाध्याय और सपना शर्मा हैं जो मुंबई की एक फिल्म निर्माता हैं.

Narrative Pictures is a film production company co-founded by director Satyaprakash Upadhayay and Sapana Sharma, a film producer from Mumbai.

प्रशस्ति – कला, सभ्यता, संरक्षण का है यह ताना बाना बुनकरों के जीवन से समाज को अवगत है कराना।

Citation - For it's rich, textured tapestry of the history, life, craft and art of the traditional Varanasi weaver, and their cultured dignity in the face of numerous challenges.

जी. डी. नायडू – द एडिसन ऑफ इंडिया
सर्वश्रेष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी फ़िल्म

G.D Naidu: The Edison of India | Best Science & Technolgy Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

English | **53 Mins** | **Director:** Ranjith Kumar | **Production Company:** Films Division | **Editor:** Shanmuganathan | **DOP:** Rajendran

कथासार - फिल्म भारत के महान आविष्कारक जी डी नायडू (1893–1974) के जीवन पर आधारित है जिन्हें भारत का एडिसन भी कहा जाता है। इस वृत्तचित्र को कुछ बेहद खास फुटेज की मदद से बनाया गया है जो आविष्कारक के निजी संग्रह का हिस्सा है। एक हरफनमौला जीनियस की जीवन और संघर्ष जब गरीबी और शिक्षा के अभाव के बावजूद वह एक बेहद काबिल उद्यमी बने जिन्होंने कई मशीन, औजार और उपकरणों का आविष्कार किया। नायडू, दूसरे विश्व युद्ध में स्टुगर्ट की बमबारी में बचे हैं और उन्हें उस इलाके के उद्यमी परिवार ने शरण दी थी। इस दोस्ती को आज भी दोनों के परिवार निभा रहे हैं। फिल्म में कई वैज्ञानिक, उद्योगपति और विशिष्ट हस्तियों ने नायडू के अनोखे आविष्कार और प्रयत्नों के बारे में बात की है।

Synopsis - The film is a biopic tracing the life and times of the great inventor of India, GD Naidu (1893-1974), popularly known as the Edison of India. The documentary traces, with the help of well preserved footage from the personal collection of the inventor himself, the life and times of the versatile genius who despite poverty and poor education, went on to become an entrepreneur and inventor of many machines, tools and devices. Naidu survived the bombing of Stuttgart in World War II and was given shelter by a family of entrepreneurs in the region. The resulting friendship continues even today between the grandchildren of both families. The film is enriched by various scientists, industrialists and eminent persons speaking about Naidu's unique endeavours and inventions.

परिचय

के. रंजीत कुमार (K. Ranjith Kumar)

के रंजीत कुमार ने 2007 में एमजीआर फिल्म एंड टीवी इंस्टीट्यूट ऑफ तमिलनाडु से डीएफटेक में डिप्लोमा लिया है। इन्होंने 2007 में तमिल फिल्म उद्योग में बतौर सहायक कैमरामैन शुरूआत की थी। इन्होंने चैन्नई की कई कंपनियों और 350 से ज्यादा भारतीय भाषाओं की फीचर फिल्मों के लिए फिल्म स्कैनिंग और रिकॉर्डिंग तकनीशियन के तौर पर भी काम किया। फिलहाल वह फिल्म प्रभाग, मुंबई में लैब सहायक के तौर पर काम कर रहे हैं।

K. Ranjith Kumar did a diploma in Film Processing and TV Production (DFTech) at the MGR Film & TV Institute of Tamil Nadu in 2007. He started as assistant cameraman in the Tamil film industry in 2007. He worked as a film scanning and recording technician for various companies in Chennai and for more than 350 Indian languages feature films from 2009 to 2013. Currently, he is working as a laboratory assistant in Films Division, Mumbai.

PROFILE

फिल्म प्रभाग (Films Division of India)

फिल्म प्रभाग – जिसे फिल्म डिविजन भी कहा जाता है की स्थापना 1948 में आजादी के ठीक बाद हुई थी। यह भारत सरकार की पहली फिल्म निर्माता एवं वितरण ईकाई है।

Films Division of India (FDI) commonly referred as Films Division was established in 1948 soon after independence of India. It was the first state film production and distribution unit.

प्रशस्ति – जीवन पर्यंत अपनी जिज्ञासाओं को शांत करने के लिए घूमता यायावर। एक अनुसंधानक, एक शिक्षक, प्रेरणा स्रोत व्यक्तित्व के जाने अनजाने पहलुओं को निर्देशन द्वारा उजागर करती श्रेष्ठ वैज्ञानिक एवं तकनीकी फिल्म।

Citation - For its portrayal of GD Naidu's incisive mind and extraordinary life, spotlighting the inspirational range of his scientific inventions.

रीडिस्कवरिंग जाजम
सर्वश्रेष्ठ प्रोत्साहन देने वाली फ़िल्म

Rediscovering Jajam | Best Promotional Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Hindi | **26 Mins** | **Directors:** Avinash Maurya, Kriti Gupta | **Production Company:** Rachel Bracken Singh | **Editors:** Kriti Gupta Sanjay Maharishi | **DOP:** Ashish Garg Other Sankalp Agarwal

कथासार - तेजी से बढ़ते नगरीकरण के चलते सार्वजनिक बैठक स्थल (चौपाल) खत्म होती है जा रही हैं, भारतीय शिल्पकार जाजम से जुड़ी अपना कहानी साझा करते हैं, एक वृहत कपड़ा संबंधी परंपरा एक बैठक की जगह थी जिसमें राजस्थान के ग्रामीण जन एकत्र हुआ करते थे। रिडस्कवरिंग जाजम बताती है कि किस तरह जाजम की उपस्थिति लोगों की जिंदगी में प्रस्तुत होती है, उनके अनुभव और इनकी इस पर विश्वास को प्रदर्शित करती है।

Synopsis - As public spaces are going missing in the face of rapid urbanisation, Indian craftsmen share their stories of Jajam, a large traditional textile that was a gathering space for people in the villages of Rajasthan. 'Rediscovering Jajam' is about how Jajam's presence has featured in peoples' lives, their experiences of it, beliefs and so on.

परिचय

अविनाश मौर्या, कीर्ति गुप्ता (Avinash Maurya & Kriti Gupta)

अविनाश मौर्या एक स्वशिक्षित वृत्तचित्र फिल्मकार है जिन्होनें फिल्म निर्माण की औपचारिक शिक्षा हासिल नहीं की है। वे दिल्ली से ताल्लुक रखते हैं।

कीर्ति गुप्ता राजस्थान से ताल्लुक रखती हैं, वे भी एक वृत्तचित्र फिल्मकार हैं। इन्होंने फाइन आर्ट्स से स्नातोकोत्तर की डिग्री हासिल की है।

Avinash Maurya is from the capital city of Delhi. He is a documentary filmmaker and has no formal training in film making.

Kriti Gupta is from the state of Rajasthan in India. She is a documentary filmmaker with post-graduate degree in Fine Arts.

PROFILE

राशेल ब्रेकेन (Rachel Bracken Singh)

राशेल ब्रेकेन सिंह राजस्थान के एक फिल्म निर्माता है। और वे अपने वृत्तचित्र रिडस्कवरिंग जाजम के लिए जाने जाते हैं।

Rachel Bracken Singh is a film producer based in Rajasthan, India, and is known for producing the documentary, 'Rediscovering Jajam'.

प्रशस्ति – पारम्परिक कारीगरी को प्रोत्साहित करती, रंगों की छाप, रिश्तों को निभाती बिरादरी की जाजम (चादर)।

Citation - For effectively promoting the traditional craft of Jajam, (a spread textile), inextricably woven within the social fabric of local communities in Rajasthan, now fading with time.

द वर्ल्डज मोस्ट फेमस टाइगर
सर्वश्रेष्ठ पर्यावरण फ़िल्म

The World's Most Famous Tiger | Best Environment Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

English | **44 Mins** | **Director** : Subbiah Nallamuthu | **Production Company:** Natural History Unit India | **Editor:** Ralph Quattrucci | **DOP:** Subbiah Nallamuthu | **Narrator:** Ace Bhatti

कथासार - मछली – पश्चिमी भारत के रणथम्बौर नेशनल पार्क की वो बाघ जो अपने जज्बे, बहादुरी और आत्मविश्वास के लिए जानी जाती है। इसे लेडी ऑफ द लेक और क्वीन मछली भी कहते हैं। मछली की मृत्यु 27 साल पूरे करके हुई लेकिन इससे पहले उसने सरिस्का और रणथम्बौर नेशनल पार्क में बाघ की आबादी को फिर से बढ़ाने में अहम रोल अदा किया। फिल्म मछली के सुनहरे दिनों से लेकर उसकी मौत तक के सफर को दिखाती है, सुनाती है मछली की सत्ता के पीछे की अनोखी कहानियां, उसके पतन की दास्तान और वो शानदार विरासत जो वो अपने पीछे छोड़ गई।

Synopsis - Machli, the legendary Tiger Queen of Ranthambhore National Park in Western India, was known for her fierce determination, bravery and confidence. Also known as 'Queen Machli' and 'Lady of the Lake', Machli died at the record age of 27 years but not before she had played a key role in the regeneration of tiger population in the Ranthambhore and Sariska National Park. This film chronicles Machli's journey from her prime to her death; telling the incredible stories behind Machli's rise to power, her heartbreaking descent and the extraordinary legacy she left behind.

परिचय

नल्ला मुथु (Subbiah Nallamuthu)

नल्ला मुथु एक जाने माने वाइल्ड लाइफ फिल्मकार हैं जिन्हें बाघ केंद्रित फिल्में बनाने में महारत हासिल है. एफटीआईटी, चेन्नई से सिनेमेटोग्राफर नल्ला ने इसरो और फिल्म प्रभाग के लिए बतौर कैमरामैन काम किया है.

Subbiah Nallamuthu is a leading wildlife filmmaker specialising in tiger-centric films. A cinematographer from FTIT, Chennai, he has also worked as cameraman with ISRO and Films Division.

PROFILE

नैचुरल हिस्ट्री यूनिट इंडिया (Natural History Unit India)

नैचुरल हिस्ट्री यूनिट इंडिया – एक निर्माण कंपनी है जो विशेष तौर पर वन्य जीव आधारित वृत्तचित्र और फुटेज पर ध्यान केंद्रित करती है. 2001 मे स्थापित हुई यह कंपनी भारत के विविध भू–भाग, संपन्न और अनोखे वन्यजीवन और उनकी विचित्र कहानियों को दर्शकों तक पहुंचाती है.

Natural History Unit India (NHUI) is a production house focusing exclusively on wildlife documentaries and footage. Set up in 2001, its aim is to explore India's varied terrain, rich and unique wildlife and bring its incredible stories to the television viewing audience.

प्रशस्ति – प्रकृति के चक्र को दर्शाती, रणथम्भोर राष्ट्रीय उद्यान के महान बाघ मच्छली की जन्म से मरण की अजीबो गरीब दास्तान।
Citation - For capturing the life and extraordinary legacy of Machli, the erstwhile Queen of Ranthambore and her part in regenerating tiger population that helps keep the forest alive.

ताला ते कुंजी
सामाजिक मुद्दों पर सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म

Taala Te Kunjee | Best Film of Social Issues

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Hindi, Punjabi | 83 Mins | Director: Shilpi Gulati | **Producer:** Simardeep Singh Bhatia | **Screenplay:** Shilpi Gulati | **Editor:** Vikash Malhotra | **DOP:** Udit Khurana

कथासार - पंजाब के नशा मुक्ति केंद्र में नशे की लत से मुक्त हुए पांच लोग राज्य में तेजी से फैल रही नशे की समस्या से मुक्त होने के लिए परिवारों की मदद करते हैं। वहीं नए रिश्तों को बनाने के दौरान उन्हें अपने गुजरी जिंदगी का सामना भी करना पड़ता है। उनकी पत्नियां प्यार की मायनों को समझने में प्रयास करती है। ताला ते कुंजी जिंदगी के रोजमर्रा के संघर्षों और रिश्तों की एक बेहतरीन तस्वीर गढ़ती है।

Synopsis - Five recovering addicts at a rehabilitation center in Punjab, India, are helping families recover from the rampant drug problem in the state. While they struggle to establish new relationships with their pasts, their wives strive to redefine the meaning of love. An intimate portrayal of recovery, 'Taala Te Kunjee' is about relationships and the labor of everyday.

परिचय

शिल्पी गुलाटी (Shilpi Gulati)

शिल्पी गुलाटी नई दिल्ली की एक वृत्तचित्र फिल्मकार और सिनेमा छात्र हैं। इनकी फिल्म किस्सा ए–पारसी ने 2014 की सर्वश्रेष्ठ मानव जाति विज्ञान फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार जीता था। इनका स्वतंत्र प्रोजेक्ट 'देरे तन दिल्ली' (2012) और इन्साइड आउठ (2010) कई अंतर्राष्ट्रीय महोत्सव में प्रदर्शित हो चुकी है। वे वर्तमान में जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय से सिनेमा स्टडीज में पीएचडी कर रही हैं। इनका ज्यादातर काम भारत में क्षेत्रीय समुदायों के कथन और लिंग भेद पर आधारित है।

Shilpi Gulati is a documentary filmmaker and cinema scholar based in New Delhi. Her film 'Qissa-e Parsi' won her the National Film Award for the Best Ethnographic Film of 2014. Her independent projects 'Dere tun Dilli' (2012) and 'Inside Out' (2010) have been screened at various festivals internationally. She is currently pursuing her PhD in Cinema Studies from Jawaharlal Nehru University. Her body of work largely engages with gender, identity and oral narratives of regional communities in India.

PROFILE

सिमरदीप सिंह (Simardeep Singh)

अपनी मेडिकल की पढ़ाई पूरी करने के बाद, **सिमरदीप सिंह** ने बतौर निर्माता ताला ते कुंजी के जरिए पंजाब में महामारी की तरह फैल रहे नशे की लत को उजागर करने का प्रयास किया है। इनके लिए फिल्म राज्य में तेजी से फैल रही नशे की समस्या से निपटने के उनके परिवार के नजरिये को पूरा करने में एक सहयोग है।

Having recently finished medical school, **Simardeep Singh** has made a humble attempt to highlight drug epidemic in Punjab with 'Taala Te Kunjee' as the producer. For him, the film is next in line in a series of contributions that resonate with his family's vision to rid the land of five rivers of rampant drug abuse.

प्रशस्ति – लाखों लोगों के लिए प्रेरणादायक वास्तविक कहानी। नशे के जाल में फंसे गिरते संभलते लोगों की जीवन गाथा, उनके अपनों की जबानी। अंधेरे कमरों में लगे तालों को रोशनी की कुंजी से खोलती सामाजिक सरोकारों पर बात करती 'ताले की कुंजी'।

Citation - For empathetically shining a light on the recovery of addicts and the role of loved ones, while quietly yet potently depicting the destruction that substance abuse brings to home and family.

सरला विरला
सर्वश्रेष्ठ शैक्षणिक फ़िल्म

Sarala Virala | Best Educational Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Kannada | 57 Mins | Director, Cinematographer & Editor: Ere Gowda | **Production Company:** Sujatha H.R

कथासार - फिल्म अस्सी साल के एक साधारण से ऑरगेनिक किसान एल. नारायण रेड्डी की जिंदगी में झांकती है. जो सम्मानों, ख्याति, धन और भौतिकता से परिपूर्ण नवयुगीय जिंदगी के बीच अपने सीधे सादे जिंदगी जीने के तरीके पर विश्वास और आस्था के साथ अटल रहे. उन्होंने दशकों के पर्यावरण से जुड़े ज्ञान के जरिए प्राकृतिक तरीके से जीवन जीने के तरीकों को लोगों के बीच साझा किया. उनके खेती करने के तरीके, ज्ञान को वो हमेशा बांटते रहे और उनकी साधारण जीवनचर्या परेशानियों से भरे हुए आधुनिक किसानों से बिल्कुल उलटी नजर आती है. सरला दृ विरला इसी विरोधाभास को दिखाती है, ये वर्तमान के हमारे समाज के लिए एक इंसान की कहानी है जो मिसाल है.

Synopsis - The film is an insight into the life of L. Narayana Reddy, an octogenarian organic farmer and a simple man, who remained steadfast and true to his beliefs in the midst of awards, popularity, wealth, and the materialistic new-age lifestyle. He imparted knowledge about the environment-friendly agriculture gained from decades of practice to people from all walks of life. His farming methods, the knowledge he shares, and the simple lifestyle he leads is a stark contrast to the problem-laden modern farmer. It is this contrast that 'Sarala Virala' dwells upon, thus documenting a man of example for present-day society.

परिचय

एरे गौड़ा (Ere Gowda)

एरे गौड़ा एक कन्नड़ फिल्म निर्देशक हैं जो अपनी फिल्म बालेकेम्पा (2018) के लिए जाने जाते हैं. वे पुरस्कार विजेता कन्नड़ फिल्म तिथि (2015) के पटकथा लेखक भी हैं.

Ere Gowda is a Kannada film director known for his film 'Balekempa' (2018). He was also the screenwriter of the award-winning Kannada film 'Thithi' (2015).

PROFILE

सुजाथा एच. आर. (Sujatha H. R.)

सुजाथा एच. आर एक कवयित्री और लेखक हैं. इनका पहला निबंध संग्रह नीली मुंगिना नट्टू (नीली की नथ) और पहली कविता संग्रह काडु जेडा मट्टु बट्टु कोली हु (जंगली मकड़ी और बतख के फूल) ने पाठकों और समीक्षकों से खूब वाहवाही लूटी. और इसे कई अवार्ड भी प्राप्त किए जिसमें स्टेट एकेडमी बुक अवार्ड शामिल है। सरला–विरला निर्माता के तौर पर इनका पहला वृत्तचित्र है।

Sujatha H. R. is a poet and a passionate writer. Her first essay collection 'Neeli Moogina Nattu' (Nose Ring of Neeli) and first poetry collection 'Kaadu Jeda Mattu Baatu Koli Hoo' (Wild Spider and Flower of Duck) caught the attention of discerning critics as well as the readers and won many awards including the State Academy Book Award. Her passion for experimentation has now turned to production of documentaries. 'Sarala Virala' is her first endeavour as a producer.

प्रशस्ति – सरल है वह व्यक्ति, विरला है उसका व्यक्तित्व श्री एल नारायण रेड्डी एक किसान जो अपने सिद्धांतों पर अड़िग जैविक खेती की ओर प्रेरित करती शैक्षणिक कहानी प्राकृतिक तरीके से स्वस्थ जीवन जीने की कला सिखाती फिल्म।

Citation - For highlighting the fundamentals of organic living through the life of L Narayan Reddy, whose simplicity, philosophy and knowledge is an example for others to follow, especially the young.

स्वीमिंग थ्रू दि डार्कनेस
सर्वश्रेष्ठ खेल फ़िल्म

Swimming through the darkness | Best Film on Sports

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Bengali | **76 Min** | **Director:** Supriyo Sen | **Production Company:** Perspective | **Screenplay:** Supriyo Sen | **Editing:** Saikat Sekhareswar Ray | **Camera:** Mrinmoy Mondal

कथासार - एक गरीब परिवार से ताल्लुक रखने वाला नेत्रहीन लड़का, कनाई चक्रबोर्ती एक गायक बनकर भीख मांगने के बजाए तैराकी का चुनाव कर जोखिम भरी जिंदगी का चुनाव करता है. लेकिन उसकी खेल में मिली सफलता उसे नौकरी नहीं दिला सकती है, यहां तक कि 40 की उम्र में भी, वो अपने सम्मान को बरकरार रखने के लिए लगातार तैराकी करता है. वो दुनिया के सबसे लंबी तैराकी प्रतियोगिता में हिस्सा लेता है और पावन नदीं गंगा में 81 किलोमीटर तैर कर उसे साधता है. उसे क्षणिक सफलता हासिल होती है लेकिन कनाई की अनिश्चतता का पीछा करने की अजीब फितरत जारी रहती है और उसे एक शादीशुदा महिला से प्यार हो जाता है. फिल्म कनाई की उथल पुथल भरी हुई जिंदगी को दर्शाती है जो अपने सपनों को पूरा करने की चाहत में लगातार अभाव, तमन्ना और नियति के वारों को झेलता है और जूझता है.

Synopsis - Hailing from a poor family, a blind boy Kanai Chakraborty chooses the daring life of a swimmer instead of becoming a singer and begging for living. But his success in the sport couldn't ensure him a job. Even at the age of 40, he has to continue swimming to retain a respectable identity. He participates in the world's longest swimming competition and tames mighty river Ganges covering 81 kms! His success brings in temporary glory but Kanai's uncanny knack for chasing uncertainty remains a constant as he falls in love with a married woman! The film chronicles the roller coaster journey of Kanai who constantly negotiates with destitution, desire and destiny while chasing his dream.

परिचय | PROFILE

सुप्रियो सेन (Supriyo Sen)

सुप्रियो सेन एक स्वतंत्र वृत्तचित्र फिल्मकार हैं जिन्होंने वे बैक होम, होप डाइज लास्ट इन वॉर, वागा, स्वीमिंग थ्रू दि डार्कनेस आदि वृत्तचित्रों का निर्माण किया है . वे तीन बार राष्ट्रीय पुरस्कार जीत चुके हैं जिसमें होप डाइज लास्ट इन वॉर के लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ वृत्तचित्र का पुरस्कार हासिल हुआ था. यही नहीं वे अपनी फिल्म के लिए बर्लिन, कार्लोवि वेरी, बिल्बाओ, क्राको, टेंप्येर, हेमबर्ग, उप्पसला, मंन्सटर, ह्यूस्का, अबु धाबी, दमास्कस, जेग्रेब, इफ्फी (गोआ), रियो–दि–जेनेरियो, पार्नु, मुंबई (एमआईएफएफ) आदि में 36 अलग अलग अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं.

Supriyo Sen is an independent documentary filmmaker who has directed documentaries like 'Way Back Home', 'Hope Dies Last in War', 'Wagah', 'Swimming Through The Darkness', etc. He won three National Awards including one for the Best Documentary for 'Hope Dies Last in War'. He has also won 36 different international awards for his films in Berlin, Karlovy Vary, Bilbao, Krakow, Tampere, Hamburg, Uppsala, Munster, Huesca, Abu Dhabi, Damascus, Zagreb, IFFI (Goa), Rio-de-Janeiro, Parnu, Mumbai (MIFF), etc.

प्रशस्ति – अँधेरे में घिरे जीवन को सतह पर लाने के लिये नित्य संघर्ष, इच्छा, मंजिल को पाने के लिये एक विलक्षण साहसी कहानी सुनाने के लिये असंभव को संभव होता दिखाने के लिये।

Citation - For thoughtfully portraying the challenges and life-quest of its visually impaired swimmer, as he indefatigably pursues his sport, his dreams and desires, through impeding darkness.

अमोली
सर्वश्रेष्ठ खोजपरक फ़िल्म

Amoli | Best Investigative Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Hindi | **29 mins** | **Directors:** Jasmine Kaur Roy and Avinash Roy | **Production Company:** Culture Machine Pvt. Ltd. | **Editor:** Tinni Mitra | **DOP:** Arnab Gayan | **Narrator:** Rajkummar Rao

कथासार - 15 साल की अमोली अचानक पश्चिम बंगाल के चाय बागान में अपने घर से गायब हो गई। अमोली की तरह हर आठ मिनट में एक बच्चा/बच्ची गायब होता है। ये बच्चे कहां जाते हैं? इनके साथ क्या होता है? अमोली कहानी है उन बच्चों की जो सेक्स के बाजार के लिए तस्कर करके बेचे जाते हैं। फिल्म इस धंधे के स्याह पहलू को दिखाती है और उन बहादुर बच्चों की आपबीती सुनाती है जो इस नर्क के जीवन से बचकर अपनी दर्दनाक कहानी कहने के लिए बच पाए।

Synopsis - Amoli, 15, suddenly goes missing from her home in the remote tea gardens of West Bengal, India. Like Amoli, a child goes missing every eight minutes in India. Where do these children go? What happens to them? 'Amoli' is the story of children who are trafficked and sold into commercial sex work. The film takes a look into the workings of this dark, nefarious trade and narrates the stories of some brave survivors who have been through hell and lived to share their harrowing tales

परिचय

जसमीन कौर रॉय और अविनाश रॉय

(Jasmine Kaur & Avinash Roy)

जसमीन कौर रॉय और **अविनाश रॉय**, स्वंतत्र फिल्मकार हैं जिन्होंने वंडरलस्ट फिल्म्स के तहत कई लघु फिल्में और वृत्तचित्रों का निर्माण और निर्देशन किया है। इन्होंने अलग–अलग मुद्दों पर फिल्में बनाई है जैसे मानव तस्करी, शिक्षा, जीवन यापन और जमीनी स्तर पर सशक्तिकरण।

Jasmine Kaur Roy and **Avinash Roy** are independent filmmakers who produce and direct short films and documentaries under their banner Wanderlust Films. They have made films on varied range of issues like human trafficking, education, livelihood & grassroots empowerment.

PROFILE

कल्चर मशीन (Culture Machine)

कल्चर मशीन एक डिजिटल मीडिया कंपनी है जिसे समीर पिटालवाला ने 2013 में तैयार किया था। इसका मिशन तकनीक और कहानियों के जरिए बड़े मीडिया ब्रांड बनाना है। कल्चर मशीन, द एल्फ ग्रुप, सिंगापोर की पूर्णतः नियंत्रित कंपनी है और इसका कार्यालय भारत (मुबंई, पुणे, दिल्ली, चेन्नई और हैदराबाद) और अमेरिका (कैलिफोर्निया) में है।

Culture Machine is a digital media company founded in 2013 by Sameer Pitalwalla. Its mission to use technology and storytelling to build great media brands. Culture Machine is a wholly-owned subsidiary of The Aleph Group, Singapore, and has offices in India (Mumbai, Pune, Delhi, Chennai and Hyderabad) and the US (California).

प्रशस्ति – देह व्यापार के जंजाल में फसी नाबालिग कन्याओं की काली अँधेरी खोजी दास्तान।

Citation - For its gritty examination of why and how young girls are coerced into commercial sex work, destroying their lives and minds, and for depicting their courage to survive

खरवास
सर्वश्रेष्ठ लघु कल्पित फ़िल्म

Kharvas | Best Short Fiction Film

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Marathi | 38 Mins | Director: Aditya Suhas Jambhal | **Production Company:** Shree Mahalasa Productions Ponda | **Screenplay:** Aditya Suhas Jambhal | **Editor :** Aditya Suhas Jambhale & Amogh Barve | **DOP:** Ravi Ranjan | **Cast:** Veena Jamkar, Sandesh Kulkarni, Swati Bowalekar, Dilip Desai, Ketan Jadhav, Vardhan Kamat, Purnima Naik, Madhukar Joshi, Gauri Kamat

कथासार - आसावरी पेशे से चित्रकार हैं जिसने एक मृत बच्ची को जन्म दिया। अफसोस जताने आए लोगों से तंग आकर वह कोंकण गांव के अपने पुश्तैनी घर में जा बसी। लेकिन इस सदमे से उभरने के संघर्ष को तब सबसे बड़ा झटका लगा जब आसावरी को पता चला कि उसके घर के तबेले में रहने वाली गाय जल्द ही एक बच्चा देने वाली है। (खरवास एक दूध की बनी मिठाई है जो गाय की खीस से बनती है और पश्चिमी भारत में काफी लोकप्रिय है।)

Synopsis - Aasawari, who is a painter by profession, has just lost her girl child who was still born. Totally frustrated by the condolence visits, she withdraws to her ancestral house in a remote Konkan village. However, Aasawari's struggle to overcome this trauma is met with ultimate provocation when she accidentally learns about a pregnant cow due to deliver soon in their own cowshed. (Kharvas is a sweet milk pudding made from cow colostrums, and is highly popular in western India).

परिचय

आदित्य सुहास जम्भाले (Aditya Suhas Jambhale)

आदित्य सुहास जम्भाले एक राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता फिल्म– थिएटर निर्देशक और लेखक हैं जो गोवा से ताल्लुक रखते हैं और वर्तमान में मुबंई में रहते हैं. इनकी पहली लघु फिक्शन आबा एकटे ना (2016) ने 2017 में इन्हें सर्वेश्रेष्ठ निर्देशन के लिए राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार दिलवाया था. इन्होंने 8 मराठी नाटक का निर्देशन एवं लेखन किया है जिसमें हिन्दी/मराठी मेगा ड्रामा वंदे मातरम (2014), 4 एकल नाटक और कोंकणी भाषा में रुपांतरित नाटक शामिल हैं.

Aditya Suhas Jambhale is a National Award-winning Goan film/theatre director and writer, currently based in Mumbai (Maharashtra). His debut short fiction 'Aaba Aiktaay Naa?' (2016) won the National Film Award for Best Direction in 2017. He has written and directed 8 Marathi plays including Hindi/Marathi mega drama "Vande Mataram" (2014), 4 One Act plays and adapted plays in Goan Konkani language. He is credited for writing and Directing. His debut appearance on screen was in Director Pan Nalin's "Angry Indian Godesses".

PROFILE

श्री महालसा प्रोडक्शन्स पोंडा

(Shree Mahalasa Productions Ponda)

श्री महालसा प्रोडक्शन्स पोंडा, गोवा की एक निर्माण कंपनी है जिसे आदित्य सुहास जम्भाले ने 2016 में शुरू किया. यह फिल्म, वृत्तचित्र और मराठी नाटक, एकल नाटक निर्माण का काम में संलग्न है. आबा एकटे ना इनका पहला निर्माण हैं.

Shree Mahalasa Productions Ponda is a Goa-based production house founded by Aditya Suhas Jambhale in 2016. It has been producing films, documentaries, Marathi plays, One Act dramas, etc. 'Aaba Aiktaay Naa ?' was its first production.

प्रशस्ति – आँचल का दूध जब भर दे आँखों में पानी। अपने से संघर्ष, अपने से समाधान अपने ही अंतर्द्वंद में उलझी एक अनजिये रिश्ते की मार्मिक कहानी – खरवस।

Citation - For its production, direction and powerful performances in engagingly telling the story of how the psyche may implode and then heal, through an unleashing of trauma

चलो जीते हैं
पारिवारिक मूल्यों पर सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म

Chalo Jeete Hain | Best Film on Family Values

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Hindi | 32 Mins | Director: Mangesh Hadawale | **Production Company:** Sundial Ventures Pvt. Ltd. | **Story Screenplay Dialogue:** Mangesh Hadawale | **Editor :** Sanjay Ingle | **DOP:** Rishi Punjabi | **Production Designer:** Ashwini Shrivastav

कथासार - एक संवेदनशील बच्चा, विवेकानंद के इस कथन से प्रभावित है कि वही जीते हैं जो दूसरों के लिए जीते हैं। अपनी छोटी सी दुनिया में बच्चा कोशिश करता है कि वो दूसरों के लिए कुछ करके अपने जीवन का उद्देश्य हासिल कर सके। यह फिल्म इस सफर में उसके शुरूआती कदम की कहानी है।

Synopsis - An impressionable boy is struck hard by a quote by Vivekanand – "Wahi jeete hain, jo doosro ke liye jeete hain". On the quest for purpose of life, the boy tries to pursue what he can do for others in his small world. This film is about his first steps towards that journey.

परिचय

मंगेश हाडवले (Mangesh Hadawale)

मंगेश हाडवले एक फिल्म लेखक, निर्देशक और विज्ञापन फिल्मकार हैं. इनकी पहली फिल्म तिन्या (2008, मराठी) है जिसे व्यावसायिक और समीक्षकों की वाहवाही मिली. इनकी दूसरी फिल्म देख इंडियन सर्कस है जो कि हिन्दी में थी और इसने भी कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार हासिल किये.

Mangesh Hadawale is a film writer, director and ad filmmaker. His first film 'Tingya' (2008, Marathi) received huge commercial as well as critical acclaim. His second film 'Dekh Indian Circus' was in Hindi which received many national and international awards.

PROFILE

सनडायल वेंचर्स (Sundial Ventures)

Sundial Ventures

सनडायल वेंचर्स को महावीर जैन ने शुरू किया जिसकी पहली फिल्म देख इंडियन सर्कस (2011) है जिसने चार राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कारों के साथ कई अंतरराष्ट्रीय सम्मान हासिल किए।

Sundial Ventures was started by Mahaveer Jain, with its first production 'Dekh Indian Circus' (2011) which won many international awards including four National Film Awards.

प्रशस्ति – वसुधैव कुटुम्बकम के अनुसार सारी दुनिया एक परिवार है। अपने लिए जिये तो क्या जिये।
इस बात की प्रेरणा देती भारतीय पारम्परिक पारिवारिक मूल्यों पर आधारित।

Citation - For highlighting, through its young protagonist, the humanitarian value of how one may live for others, beyond one's own self.

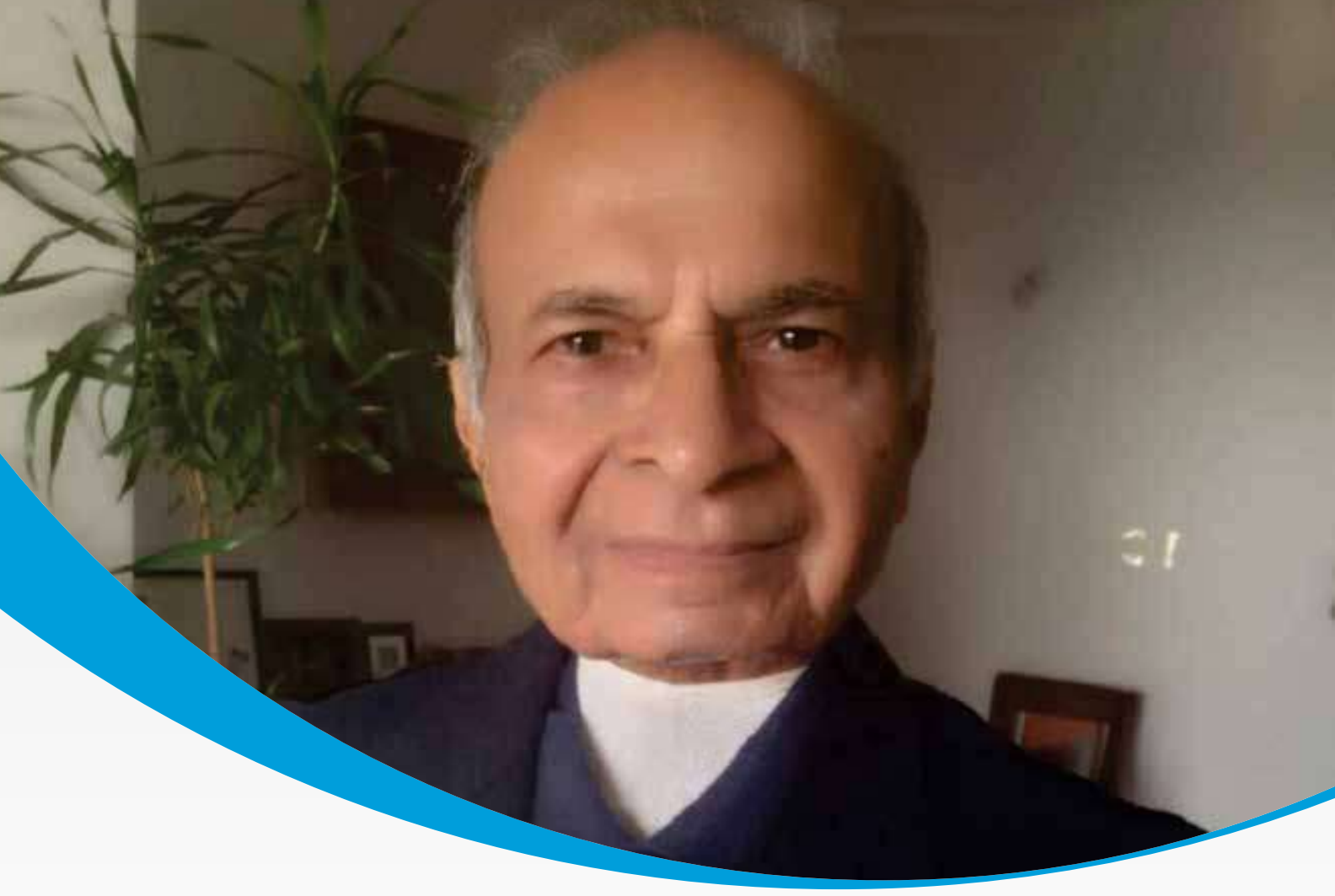

वाय मी?
निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार

Why Me? | Special Jury Award

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

Hindi, English | 29 Mins | Director: Harish Shah | **Production Company:** Harish Shah Productions | **Editor:** Kuresh Maharana | **DOP:** Shatrujit Mishra | **Narrator:** Harish Bhimani

हरीश शाह (Harish Shah)

हरीश शाह भारतीय सिनेमा जगत के एक जाने माने निर्देशक और निर्माता है. अपने पांच दशक के कार्यकाल में, शाह की फिल्मों ने कई विषयों और विधाओं को छुआ, इनमें से कुछ हैं, मेरे जीवन साथी, जाल– दि ट्रेप. एक अनुभवी निर्माता के तौर पर शाह के वर्णन काफी वृहत है. और वे राजेश खन्ना, संजीव कुमार, रेखा, रिशी कपूर सनी देओल और तबु जैसे सुपर स्टार के साथ काम कर चुके हैं.

Harish Shah is a well-known producer and director in the Indian film industry. In a career of almost five decades, Shah's films have covered many themes and genres in his films. Some of his include 'Mere Jeevan Saathi', 'Zalzala', 'Jaal: The Trap'. Shah has an extensive profile and experience as a producer and has worked with super stars like Rajesh Khanna, Sanjeev Kumar, Rekha, Rishi Kapoor, Sunny Deol and Tabu.

प्रशस्ति – एक फिल्मकार के कैंसर से संघर्ष की जज्बाती कहानी। अपने तमाम सवालों के जवाब खुद ही देती हुई एक अत्यंत प्रेरणादायक फिल्म।

Citation - For the tenor of the director's indomitable spirit, even as throat cancer claims his voice.

Synopsis of the film at page no. 181

एकांत
निर्णायक मंडल का विशेष पुरस्कार

Ekaant | Special Jury Award

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 1,00,000/-

Hindi | **25 mins** | **Director:** Sarthak Bhasin | **Producer:** FTII | **Editor:** Sumit Kumar | **DOP:** Pretheepan Selvarathnam | **Art Director:** Neeraj Singh | **Cast:** Jitendra Shastri

नीरज सिंह (Neeraj Singh)

नीरज सिंह ने बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी से फाइन आर्ट्स (पेंटिंग) की पढ़ाई की है जिसके बाद इन्होंने 2017 में पुणे एफटीआईआई से कला निर्देशन एवं प्रोडक्शन डिजाइन में डिप्लोमा हासिल किया। इन्होंने अपनी डिप्लोमा फिल्म एकांत के लिए संकल्पनात्मक डिजाइन को तैयार किया। इस फिल्म को बीजिंग फिल्म अकादमी के सम्मानित अंतरराष्ट्रीय छात्र फिल्म एवं वीडियो समारोह में जगह मिली, साथ ही बिलिसी अंतरराष्ट्रीय छात्र लघु फिल्म समारोह में भी चुना गया।

Neeraj Singh studied Fine Arts (Painting) at Banaras Hindu University, followed by a Diploma in Art Direction and Production Design from Film and Television Institute of India (FTII), Pune in 2017. He undertook development of conceptual design for his diploma film 'Ekaant', which was selected at Beijing Film Academy's prestigious International Student Film & Video Festival (ISFVF) in China and also in Tbilisi International Students Short Film Festival.

प्रशस्ति – मानवीय संवेदनाओं और भौतिक जीवन के द्वंद में फंसे मनुष्य पर प्रकृति के कहर को श्वेत श्याम रंग के माध्यम से दर्शाती 'एकांत'। जिसे कला निर्देशक ने कुशलता से सृजित किया है।

Citation - For its surrealistic design and imagery of a bleak, impending catastrophe.

आई शपथ
सर्वश्रेष्ठ निर्देशन

Aai Shappath | Best Direction

स्वर्ण कमल | SWARNA KAMAL ₹ 1,50,000/-

Marathi | 15 Mins | Director: Gautam Vaze | **Producer:** Tanvi Patil | **Editor:** Swabha Pal | **DOP:** Akhilesh Srivastav | **Cast:** Madhura Welankar Satam, Rujuta Deshmukh, Sachin Deshpande, Abhijeet Kelkar, Abhishek Bachankar, Aryan Dalvi, Vidya Patwardhan , Pooja Gore

गौतम वाजे (Gautam Vaze)

गौतम वाजे एक कम्प्यूटर साइंस ग्रैजुएट है जिन्होंने 12 साल पहले मराठी टीवी सीरियल से फिल्म निर्माण में कदम रखा था। इन्होंने 200 से ज्यादा टीवी विज्ञापनों के निर्माण का काम किया है। बाद में यह राम गोपाल वर्मा और धर्मा प्रोडक्शन्स की कुछ फीचर फिल्म में कार्यकारी निर्माता बने। आई शपथ इनकी पहली निर्देशित फिल्म है।

Gautam Vaze, a computer science graduate, ventured into filmmaking 12 years back with Marathi TV serials. He has produced and line-produced more than 200 TVCs. He later become executive producer for few feature films for Ram Gopal Varma and Dharma Productions. 'Aai Shappath' is his directorial debut.

प्रशस्ति – आई शपथ... मासूम बचपन के मासूम डर को दर्शाती इस फिल्म में निर्देशक ने पारिवारिक मूल्यों का चित्रण अत्यंत संवेदनशीलता से किया है।
Citation - For its unpretentious execution and sensitive treatment of an anxious eight-year-old, gripped by the fear of a false promise.

Synopsis of the film at page no. 180

द सीक्रेट लाइफ ऑफ फ्रॉग्स
सर्वश्रेष्ठ छायांकन

The Secret Life of Frogs | Best Cinematography

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

English | **54 Mins** | **Directors:** Ajay Bedi, Vijay Bedi | **Production Company:** Bedi Universal | **Cast:** Jeff Alan Greenway

अजय बेदी और विजय बेदी (Ajay Bedi & Vijay Bedi)

वन्य जीवन फिल्मकारों की तीसरी पीढ़ी से हैं। ये सबसे युवा एशियाई हैं जिन्होंने अपनी फिल्म 'दि पोलिसिंग लंगूर' और 'शेरब ऑफ दि मिस्ट' के लिए वाइल्डस्क्रीन अवार्ड्स (ग्रीन ऑस्कर) जीता है।

Ajay Bedi & Vijay Bedi

The third generation of wildlife filmmakers. They are the youngest Asians to have won the Wildscreen Awards (Green Oscar) for their films: 'The Policing Langur' and 'Cherub of the Mist'.

प्रशस्ति – कैमरे से प्रकृति के अनदेखे बिम्बों को काव्य रूप में चित्रित करती, मेंढकों के प्रेम के अनदेखे पहलुओं की दास्तान।

Citation - For its consistent, relentless and splendid work in formidable circumstances, of visually capturing the life cycle and habitat of an endangered amphibian.

Synopsis of the film at page no. 181

द सीक्रेट लाइफ ऑफ फ्रॉग्स
सर्वश्रेष्ठ ऑन–लोकेशन साउंड पुरस्कार

The Secret Life of Frogs | Best On-Location Sound

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

English | 54 Mins | Directors: Ajay Bedi, Vijay Bedi | **Production Company:** Bedi Universal | **Cast:** Jeff Alan Greenway

अजय बेदी (Ajay Bedi)

अजय बेदी और विजय बेदी वन्य जीवन फिल्मकारों की तीसरी पीढ़ी से हैं। ये सबसे युवा एशियाई हैं जिन्होंने अपनी फिल्म 'दि पोलिसिंग लंगूर' और 'शेरब ऑफ दि मिस्ट' के लिए वाइल्डस्क्रीन अवार्ड्स (ग्रीन ऑस्कर) जीता है। ये जुड़वा भाई प्रकृति से जुड़े इतिहास पर आधारित वृत्तचित्र, सामाजिक संदेश देने वाली फिल्म और कुछ जाने माने अंतर्राष्ट्रीय उद्योंगो के लिए कॉरपोरेट फिल्म निर्माण का काम कर चुके हैं।

Ajay Bedi is third generation of wildlife film maker in a family, that has a long history of expertise in this highly specialized field. Starting young, he is in fact among the youngest Asians to have won the Wildscreen Awards known as Green Oscar for his films – 'The Policing Langur' and the 'Cherub of the Mist'..

प्रशस्ति – कौन कहता है खामोशी की जबान नहीं होती। सुनिए सम्मोहित करने वाली, प्रकृति की प्राकृतिक आवाज।

Citation - For uniformly capturing the delicate sounds of its tiny protagonists and of the wild and unpredictable environs they inhabit.

Synopsis of the film at page no. 181

चिल्ड्रन ऑफ द सोइल
सर्वश्रेष्ठ ध्वनि आलेखन

Children of the Soil | Best Audiography

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Hindi | **4 Mins** | **Director:** Ranadeep Bhattacharyya & Judhajit Bagchi | **Production Company:** Yaanus Films & Passion Film | **Screenplay:** Ranadeep Bhattacharyya & Judhajit Bagchi | **Editors:** Judhajit Bagchi & Ranadeep Bhattacharyya | **DOP:** Sylvester Fonseca

बिस्वदीप दीपक चटर्जी

बिस्वदीप दीपक चटर्जी एक दिग्गज साउंड डिजाइन रहैं जिन्होंने राष्ट्रीय पुरस्कार जीता है। उनकी लोकप्रिय फिल्मों में परिणिता (2005), लगे रहो मुन्ना भाई (2006), एकलव्य (2007), मद्रास कैफे (2013), पीकू (2015) और अक्टूबर (2018) शामिल हैं।

Bishwadeep Dipak Chatterjee is a National award-winning veteran sound designer. Some of his popular films include 'Parineeta' (2005), 'Lage Raho Munna Bhai' (2006), 'Eklavya' (2007), 'Madras Cafe' (2013), 'Piku' (2015) and 'October' (2018).

प्रशस्ति – जमीन से उगते कंक्रीट के जंगलों में दबकर मिट्टी के लोगों के मिट्टी में मिलने की आवाज।

Citation - For potently bringing to life, through sound design, every element in this poignant tale of farmer suicides.

Synopsis of the film at page no. 180

सन राइज़
सर्वश्रेष्ठ ऑन–लोकेशन साउंड पुरस्कार

Son Rise | Best Editor

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Hindi | **120 Mins** | **Director:** Vibha Bakshi | **Production Company:** V2 Film and Design Pvt. Ltd. | **Editor:** Hemanti Sarkar | **DOP:** Attar Singh Saini

हेमंती सरकार (Hemanti Sarkar)

हेमंती सरकार, एफटीआईआई, पुणे से स्नातक (1994) हैं और यह कई फीचर फिल्में और वृत्तचित्र का संपादन कर चुकी हैं। इन्होंने परिणिता (2005), पीपली लाइव (2010), इंग्लिश विंग्लिश (2012), आयलैंड सिटी (2015), एयरलिफ्ट (2016), डियर जिंदगी (2016), सीक्रेट सुपरस्टार (2017) और स्त्री (2018) का संपादन किया है। इन्होंने डॉटर्स ऑफ मदर इंडिया (2015), रुबरू रोशनी (2018), डॉटर्स ऑफ द पोलो गॉ (2018) और सन राइज (2018) जैसे पुरस्कार विजेता वृत्तचित्रों का संपादन भी किया है।

Hemanti Sarkar a 1994 graduate from FTII Pune has been editing both feature films and documentaries. Features such as Parineeta (2005), Peepli [Live] (2010), English Vinglish (2012), Island City (2015), Airlift (2016), Dear Zindagi (2016), Secret Superstar (2017) and Stree (2018). She has also edited award winning documentaries like Daughters Of Mother India (2015) , Rubaru Roshni (2018), Daughters of the Polo god (2018), SonRise (2018).

प्रशस्ति – जो कातिल थे कभी, अब मुहाफिज हैं। जिन्होंने कभी घोंटा था गला, आज बन गए है आवाज। रूढ़ियों को तोड़ती,अच्छे बुरे रिश्तों को संपादित करती... सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ संघर्ष की कहानी।

Citation - For its powerful portrayal of the mindset and effects of female infanticide, one of the country's most heinous mass crimes, and for portraying the courage of those who stand to fight against it where it is most prevalent

Synopsis of the film at page no. 181

ज्योति
सर्वश्रेष्ठ ध्वनि आलेखन

Jyoti | Best Music

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Marathi | 26 Mins | Director: Yogesh Soman , Rashmi Deo | **Production Company:** Yogesh Soman | **Screenplay:** Yogesh Soman | **Editor and Sound Design:** Mahesh Limaye | **DOP:** Dinesh Kandarkar | **Cast:** Yogesh Soman, Shrikant Bhide, Nita Donde, Abhishek Ratnaparakhi, Rugved Soman, Anushka Thakur (Child Artist)

केदार अच्युत दिवेकर (Kedar Achyut Divekar)

केदार अच्युत दिवेकर ने मराठी फीचर फिल्म के लिए संगीत निर्माण किया, इनकी फिल्मों में दांडगी मुला (2010), विष्णुपंत दामले–दि हीरो ऑफ टॉकीज, एक डॉक्यूड्रामा जिसने 2010 में रजत कमल हासिल किया।

Kedar Achyut Divekar has composed music for the Marathi feature film 'Dandgi Mula' (2010); 'Vishnupant Damle - The hero of Talkies', a docudrama which won the Rajat Kamal in 2010' and background score and four songs for blockbuster Marathi film 'Farzand'. He has composed background score for movies like 'Zenda Swabhimanacha', 'Jyoti', and a single-shot 81 minutes Konkani movie 'Mahaprayan'; and also a few audio book series.

प्रशस्ति – कन्या शिक्षा की अलख जगाती, दृश्य और पारंपरिक संगीत का उत्कृष्ट संयोजन। शांत जीवन में संगीत के रंग भर उन्हें नये मायने देने का प्रयास करती फिल्म।

Citation - For its use of folk and traditional verse and music to suitably build on this 19th century tale of women's education.

Synopsis of the film at page no. 180

मधुबनी–दि स्टेशन ऑफ कलर्स
सर्वश्रेष्ठ नेरेशन / वॉइस ओवर

Madhubani: The Station Of Colours | Best Narration/Voice Over

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Hindi | **37 Mins** | **Director:** Dr. Bindeshwar Pathak, Kamlesh K Mishra | **Producer:** Usha Sharma | **Editor:** Biren Jyoti Mohanti | **Writer:** Dr. Bindeshwar Pathak, Kamlesh K Mishra | **Voice Over:** Urvija Upadhyay, Deepak Agnihotri | **Cast:** Paritosh Sant, Diksha Nisha

उरविजा उपाध्याय, दीपक अग्निहोत्री (Urvija Upadhyay, Deepak Agnihotri)

उरविजा उपाध्याय एक वॉइस ओवर आर्टिस्ट हैं, इन्होंने कई बड़े ब्रांड क्लाइंट्स जैसे निसान, जॉनसन एंड जॉनसर, पेटीएम, रोस्ता, फिजर, कैडबरी, वुडवार्ड्स इत्यादि के लिए आवाज दी है।

दीपक अग्निहोत्री पिछले 18 सालों से वॉइस ओवर, वीडियो फिल्म, एडिटिंग, कंप्यूटर ग्राफिक्स, डबिंग और साउंड–वीडियो एडिटिंग कर रहे हैं।

Urvija Upadhyay is a voice over artist. She has voiced for many big brand end clients like, Nissan, Johnson & Johnson, Paytm, Rostaa, Fizer, Cadbury, Woodwards etc.

Deepak Agnihotri has been doing voice over, video film editing, computer graphics, dubbing and sound/video editing for about 18 years. e-corporate events/shows as background voice over for companies like Google for India, FIAT, Samsung, Asus, etc.

प्रशस्ति – मिथिला के रंग, मधुबनी चित्रों के संग। स्थानीय कलाकारों की कूँची का चमत्कार। कलम , कला, कलाकारों का जीवंत आख्यान – मधुबनी द स्टेशन ऑफ कलर्स।

Citation - For narrating, with conviction and eloquence, the unique story of Madhubani folk art and its use in the town's railway station.

Synopsis of the film at page no. 180

महान हुतात्मा
विशेष उल्लेख

Mahaan Hutatma | Special Mention
प्रशस्ति पत्र | CERTIFICATE

Kannada | 34 Mins | Director: Sagar Puranik | **Production Company:** Akshay Entertainment, Puranik Productions | **Screenplay:** Sagar Puranik, Akshara Bharadwaj, Shravan Kavattur | **Editor:** Mahesh Reddy | **DOP:** Abhilash Kalathi | **Cast:** Akshay Chandrashekhar, Srinath , Sagar Puranik, Adhvithi Shetty, Achinthya Puranik, Varun Srinivas

सागर पुराणिक (Sagar Puranik)

सागर पुराणिक एक स्वतंत्र फिल्मकार और अभिनेता हैं। वे पुराणिक प्रोडक्शन के नाम से अपना खुद का प्रोडक्शन हाउस चलाते हैं जो वेब सीरिज, लघु फिल्म, फीचर फिल्म और टीवी शोज का निर्माण करता है। बेंगलुरू से बिजनेस में स्नातक है, इन्होंने अपना फिल्मी सफर बतौर बाल कलाकार शुरु किया आगे चलकर इन्होंने कई टीवी सो, और कुछ फिल्मों में अभिनय किया। वहीं साथ ही साथ में सहायक, असोसिएट, और सह–निर्देशक के तौर पर कई वृत्तचित्रों, कॉरपोरेट फिल्म, टीवी और फिल्मों में काम करते रहे हैं।

Sagar Puranik is an independent filmmaker and actor. He runs his own production house called Puranik Productions which produces web series, short films, feature films and TV shows. A business graduate from Bengaluru, he started his career as a child actor. He went on to act in several TV shows and a couple of films, while simultaneously working as an assistant, associate and co-director for several documentaries, corporate films, TV and films.

प्रशस्ति – देश भक्ति की भावना जगाती, स्वतंत्रता सेनानीयों की महानता दर्शाती, आज के सिपाहियों की शहादत को सम्मान दिलाती उत्तर से दक्षिण का मेल कराती।

Citation - For portraying the power of the patriotic spirit, and infusing it across generations.

Synopsis of the film at page no. 181

ग्लो वॉर्म इन ए जंगल
विशेष उल्लेख

Glow Worm In A Jungle | Special Mention

रजत कमल | RAJAT KAMAL ₹ 50,000/-

Marathi | **15 Mins** | **Director:** Ramana Dumpala | **Producer:** Film & Television Institute of India | **Editor:** Fareeda Am | **DOP:** Ravishankar Krishna | **Sound Designer:** Naithik Mathew Eapen | **Subject:** Hema Sane

रमाना दुम्पाला (Ramana Dumpala)

रमाना दुम्पाला का जन्म श्रीकाकुलम, आंध्र प्रदेश में हुआ और उन्होंने हैदराबाद से फिल्म निर्माण में कदम रखा जहां इनहोंने तेलुगू फिल्म उद्योग में दो फीचर फिल्मों में बतौर सहायक लेखक काम किया। इसके बाद इन्होंने एफटीआईआई, पुणे से संपादन और निर्देशन की पढ़ाई की।

Ramana Dumpala was born in Srikakulam, Andhra Pradesh. He started his filmmaking journey from Hyderabad, where he worked in Telugu film industry as an associate writer for two feature films. After that he studied both editing and direction at Film and Television Institute of India, Pune.

प्रशस्ति – न्यूनतम आवश्यकताओं के साथ पत्थरों के शहर में प्रकृति के बीच जुगनू के मानिंद चमकती 'हेमा साने' की दास्तान। जिसे निर्देशक ने सहज रूप में बिना किसी सिनेमाई चमत्कार के फिल्माया है।

Citation - For the Director's amazing find and crisp portrayal of Hema Sane - author, philosopher and former professor - who lives unusually, without amenities, in the city.

Synopsis of the film at page no. 180

लड्डू
विशेष उल्लेख
Laddoo | Special Mention
प्रशस्ति पत्र | CERTIFICATE

Hindi | 20 Mins | **Director:** Sameer Sadhwani, Kishor Sadhwani | **Producer:** Shital Bhatia | **Editor:** Praveen Kathikuloth | **DOP:** Amol Rathod | **Writer:** Pankaj Chaturvedi | **Cast:** Kabir Sajid, Kumud Mishra, Mansi Parekh, Raj kumar Kanojia, Alok Pandey

किशोर सांधवानी, समीर साधवानी (Kishor Sadhwani, Sameer Sadhwani)

किशोर सांधवानी ने फिल्म और कमर्शियल का निर्देशन किया।

समीर साधवानी एक फिल्मकार है जिनमें फीचर फिल्म और कमर्शियल के निर्देशन के लिए अलग ही जुनून है।

दोनों ने मिलकर थियेटरिक्स नाम से एक थियेटर ग्रुप की स्थापना की जहां नाटक का निर्माण होता है और अभिनेताओं को प्रशिक्षण दिया जाता है.

Kishor Sadhwani directs films and commercials.
Sameer Sadhwani is a filmmaker with a passion for directing commercials and feature films.
Both of them founded 'Theatrix', a theatre group that produces plays and trains actors.

प्रशस्ति – सामाजिक सौहार्द की मिसाल पेश करती, बाल सुलभ मन के सवालों से कई जटिल समस्याओं को समाधान देती – लड्डू।
Citation - For enlivening religious harmony, through the innocent yet adamant questions of its seven-year-old protagonist.

Synopsis of the film at page no. 180

कथासार | Synopsis

आई शपथ (Aai Shappath)

आठ साल का सोहम खुश है कि छुट्टी के दिन उसकी आंटी और उनका बेटा उससे मिलने आ रहे हैं। लेकिन हालात तब उसके लिए अजीब हो जाते हैं जब उसकी मौसी का बेटा निनाद अपनी मां की झूठी कसम खाता है। सोहम की पूरी छुट्टी अपनी मौसी की चिंता में ही बीत जाती है।

Soham, 8-year-old is delighted as his beloved aunty and cousin visit him over the weekend. Things start getting uneasy for him when his cousin Ninad, takes a false swear on his mother. Little Soham falls into pit of worry and anxiety over the entire weekend that lasts a century in his mind worrying about the consequences of a false mother promise

चिल्ड्रन ऑफ सॉईल (Children of the Soil)

फिल्म भारतीय किसानों की सदियों की अवस्था को दिखाती है। सुनहरे दिनों से लेकर शहरीकरण और औद्योगिकरण के हाथों की कठपुतली बनने तक की कहानी उन मूर्तियों के जरिए दिखाई गई है जिसे किसानों की बंजर पड़ चुकी जमीन से ली गई मिट्टी से बनाया गया है। फिल्म एक विचारक टिप्पणी है भारतीय किसान समुदाय के उन मुद्दों पर जिसने उन्हें घेर रखा है जैसे कर्जे का जंजाल, बेघर, भुखमरी, शहरों में पलायन, जरूरतों से वंचित रहने से लेकर अपने खेत, अपनी पहचान को खो देना।

Sculptures made of soil collected from the barren fields of farmers, are used to document the plight of Indian farmers over centuries, from glory to misery at the iron hand of urban industrialization. The film "Children of the Soil" is a thought provoking visual comment on events plaguing India's farmer community with its associated evils like starvation, debt trap, homelessness, deprivation, begging and urban migration to losing their very farmland that defines them.

ग्लोवॉर्म इन द जंगल (Glowworm in the Jungle)

शोरगुल के बीच अगर आप पुणे के बुधवार पेठ में जाएंगे तो आपको मिलेगा एक घर जो पेड़, चिड़िया, कुत्ते, बिल्ली और बहुत सारी किताबों से घिरा होगा। इसमें रहती हैं हेमा साने एक रिटायर्ड बॉटनी प्रोफेसर और एक स्थापित लेखक। इस वृत्तचित्र में वह अपने जीवन के फलसफे, पौधों और जानवरों से उनका लगाव, स्वतंत्र रहने के उनके चुनाव के बारे में बताती हैं और हां, साथ ही यह भी कि उन्होंने जिंदगी भरबिजली ने इस्तेमाल करने का फैसला क्यों लिया। एक मजबूत इरादों वाली महिला पर आधारित हास्य और गंभीरता से परिपूर्ण वृत्तचित्र जो बताता है कि किस तरह वह अपने उसूलों पर खड़ी रही।

In the midst of chaos, if you go to Budhwar Peth, Pune, you will find a house surrounded by trees, birds, cats, dogs and lots and lots of books. In it, resides Hema Sane, a retired botany professor and an established author. In this documentary, she shares a slice of her life with us talking about her philosophy, her love for plants and animals, her choice to live independently, and of course, her decision to not have used electricity ever in her life! A documentary on a strong woman who stood by her principles and which is sprinkled with doses of humor and wisdom.

ज्योती (Jyoti)

19 वीं सदी में, जब महिलाओं की शिक्षा की बात लगभग नामुमकिन थी। ज्योतिबा फुले ने 1851 में लड़कियों की शिक्षा के लि, पुणें में स्कूल की शुरूआत की। सावित्रीबाई फुले इस स्कूल की पहली प्रिंसिपल थी। फिल्म एक पिता महाडु और उसकी बेटी कौशी की कहानी प्रस्तुत करती है। फिल्म महाडु के अपनी बेटी को स्कूल में दाखिला दिलाने की संघर्ष की दास्तान है। यहीं से महिलाओं की शिक्षा की सफर की शुरुआत हुई।

In the 19th century, when women education was unthinkable in India, Jyotiba Phule started a girl's school in Pune in 1851. Savitribai Phule was the first principal of the school. The film captures the story of a father named Mahadu and his daughter Kaushi. The film documents the story of Mahadu's struggle to enroll his daughter in the school. It is from here that the onwards journey of women education started.

लड्डू (Laddoo)

हिंदी रीति रिवाजों के मुताबिक, ऐसी मान्यता है कि पूर्वजों की पुण्यतिथि के अवसर जो कुछ भी उन्हें चढाया जाता है वो पंडित के जरिये उन तक पहुंचता है। लेकिन सात साल का राहुल इस बात को समझ नहीं पाता है, वो इसे लेकर कई मुनासिब से सवाल पूछता है। मसलन, हमें कैसे पता चलता है कि खाना हमारे पूर्वजों तक पहुंच गया? हम इसके बजाये रोजाना ही पंडित को खाना क्यों नहीं खिलाते? यहां तक कि वो इस बात को समझने की बहुत कोशिश कर रहा होता है, उसे अपने दादा की पुण्यतिथि पर पंडित को खाना पहुंचाने की जिम्मेदारी सौंपी जाती है।

As per Hindi rituals, it is believed an offering made to ancestors on their death anniversary reaches them through the Pandit. But a seven-year-old Rahul can't understand how! He asks many pertinent questions – how do we know that the food actually reaches our ancestors? Why don't we feed the Pandit everyday instead? Even as he struggles to understand this concept, he is entrusted with the task of delivering lunch to the Pandit on his grandfather's death anniversary.

मधुबनीः द स्टेशन ऑफ कलर्स (Madhubani: The station of Colours)

ये डॉक्यु–ड्रामा मधुबनी पैंटिग्स के इस्तेमाल के जरिये मधुबनी रेल्वे स्टेशन के बदलाव को दिखाता है। 2015 में रेल्वे स्टेशन के स्वच्छता सर्वेक्षण में, मधुबनी रेल्वे स्टेशन 400 अन्य स्टेशनों के बीच में सबसे निचली पायदान पर था। इसने समस्तिपुर के मंडल रेल प्रबंधक को बदलाव के अभियान के लि, प्रेरित किया। इन्होंने 200 मिथिला पेंटिंग आर्टिस्ट को न्यौता दिया और उसने स्टेशन की दीवारों को पेंट करने के लि, आग्रह किया। मिथिला पेंटिंग वाली दीवारों के साथ इस स्टेशन ने अपनी स्वच्छता,

कथासार | Synopsis

सुंदरता और भव्यता को लेकर सारी दुनिया में सुर्खियां बटोरी। 2018 के स्वच्छता सर्वेक्षण में ये दो सर्वोच्च स्टेशनों में शुमार था। ये फिल्म इस सौंदर्यीकरण प्रोजेक्ट के जरिये मिथिला पेंटिंग की अहमियत और इतिहास का वृतांत बताता है।

This docu-drama showcases the transformation of Madhubani railway station brought about by using Mithila Paintings. In the 2015 Cleanliness Survey of Railway Stations, the Madhubani station ranked lowest among the 400 other stations. This prompted the Divisional Rail Manager (DRM) of Samastipur to undertake a mission of its transformation. He invited around 200 Mithila Painting artists and requested them to paint the walls of the station. With Mithila Paintings on its walls, the station made news all over the world for its grandeur, beauty and cleanliness. It featured among the top two stations in the 2018 Cleanliness Survey of Stations. The movie also chronicles the history and importance of Mithila Painting via this beautification project.

महान हुतात्मा (Mahaan Hutatma)

ये लघु फिल्म बताती है कि किस तरह एक बुजुर्ग आदमी अपने सैनिक बेटे भरत की मौत की खबर अपने पोते विजय को भगत सिंह की प्रेरणादायी कहानी के जरिये सुनाता है। विजय अपने पिता की शहादत की खबर को किस तरह लेता है यहीं महान हुतात्मा की कहानी का निचोड़ है।

This short film is about how an elderly man conveys the news of the death of his soldier son, Bharath, to his grandson, Vijay, through the motivational story of Bhagat Singh. How Vijay receives the news of his martyred father, is MahaanHutatma.

द सीक्रेट लाइफ ऑफ फ्रॉग्स (The Secret Life of Frogs)

'दि सीक्रेट लाइफ ऑफ फ्रॉग्स' भारत के उभयचरों पर बनी पहली फिल्म है। यह फिल्म कमजोर हो रहे पश्चिमी घाट पर व्यापक रूप से शूट की गई, जो हजारों दुर्लभ वनस्पतियों और जीवों का घर है। फिल्म मेंढकों की अनूठी प्रजातियों को दिखाती है जैसे जामुनी मेंढक जो विलुप्त होने की कगार पर है और जिसे तुरंत संरक्षण की दरकार है। यह वो प्रजाति है जिसके बारे में कोई भी उभयचर विशेषज्ञ अच्छे से जानता है और ऐसा माना जाता है कि ये डायनासोर के वक्त से मौजूद हैं। अगर जामुनी मेंढक के संरक्षण के लिए कोई भी प्रयास किया जा सकता है तो वो होना चाहिए, यह पारिस्थितिकी तंत्र के आदर्श दूत है जो पश्चिमी घाट को बचा सकते हैं।

'The Secret Life of Frogs' is the first-ever film on Amphibians of India. The film, shot extensively in the fragile Western Ghats which is home to thousands of rare flora and fauna, showcases unique species of frogs like the purple frogs which are critically endangered and require immediate protection. It's a species that every amphibian expert is aware of and is believed to have co-existed with dinosaurs. If any effort at all is to be put into conservation it has to go towards the Purple frog, which can be the ideal ambassador for the ecosystem that makes up the Western Ghats.

सन राइज़ (Son Rise)

लड़का–लड़की के बीच लिंगानुपात में भारी अंतर को लेकर बदनाम हरियाणा में औरतों के खिलाफ अपराध में बढ़ोतरी तो है लेकिन सब कुछ खत्म नहीं हुआ है। ऐसा ही कुछ यह फिल्म बताने की कोशिश करती है। ये फिल्म बताती है कि किस तरह एक साधारण इंसान असाधारण काम करते हुए महिलाओ के अधिकार और लैंगिक समानता के लि, लड़ता है। एक आधुनिक सोच का गांव प्रधान और दो बेटियों का बाप, क्षेत्रीय राजनीति के अखाड़े में जहां पुरुषों का दबदबा है महिलाओं के प्रवेश के लि, संघर्ष करता है, वहीं एक किसान जो समाज के विरोध के बावजूद सामूहिक बलात्कार पीड़िता के साथ शादी रचाता है। क्या यही वो आशा की किरण है जिसे हम तलाश रहे हैं?

The infamous skewed girl-boy sex-ratio in Haryana may have resulted in an unprecedented rise in crimes against women. However, all may not be lost, as this film follows 'ordinary' men doing the 'extraordinary' work in their struggle for women's rights and gender justice. From a forward-thinking village chief and father of two daughters, fighting for women to enter the male-dominated arena of local-politics, to a farmer who, in an arranged marriage, defies society by marrying a gang rape survivor. Can these glimmers be the rays of hope we have been looking for?

वाय मी? (Why me?)

ये फिल्म हरीश शाह के जिंदगी के एक सच्ची घटना से प्रेरित है। जो एक फिल्म निर्माता और निर्देशक हैं। वो गले के कैंसर से पीड़ित हुए लड़े और फिर उससे बाहर भी निकले। ये फिल्म इनकी कैंसर से बहादुरी से लड़ी लंबी लड़ाई की कहानी है। हरीश शाह ने इस फिल्म को स्वंय ही निर्देशित किया और अभिनय किया।

This film is inspired by the true incident of the life of Mr. Harish Shah who by profession is a film producer director and suffered terribly from throat cancer and its about his journey as in how he fought against it. Mr. Harish Shah himself acted and directed it.

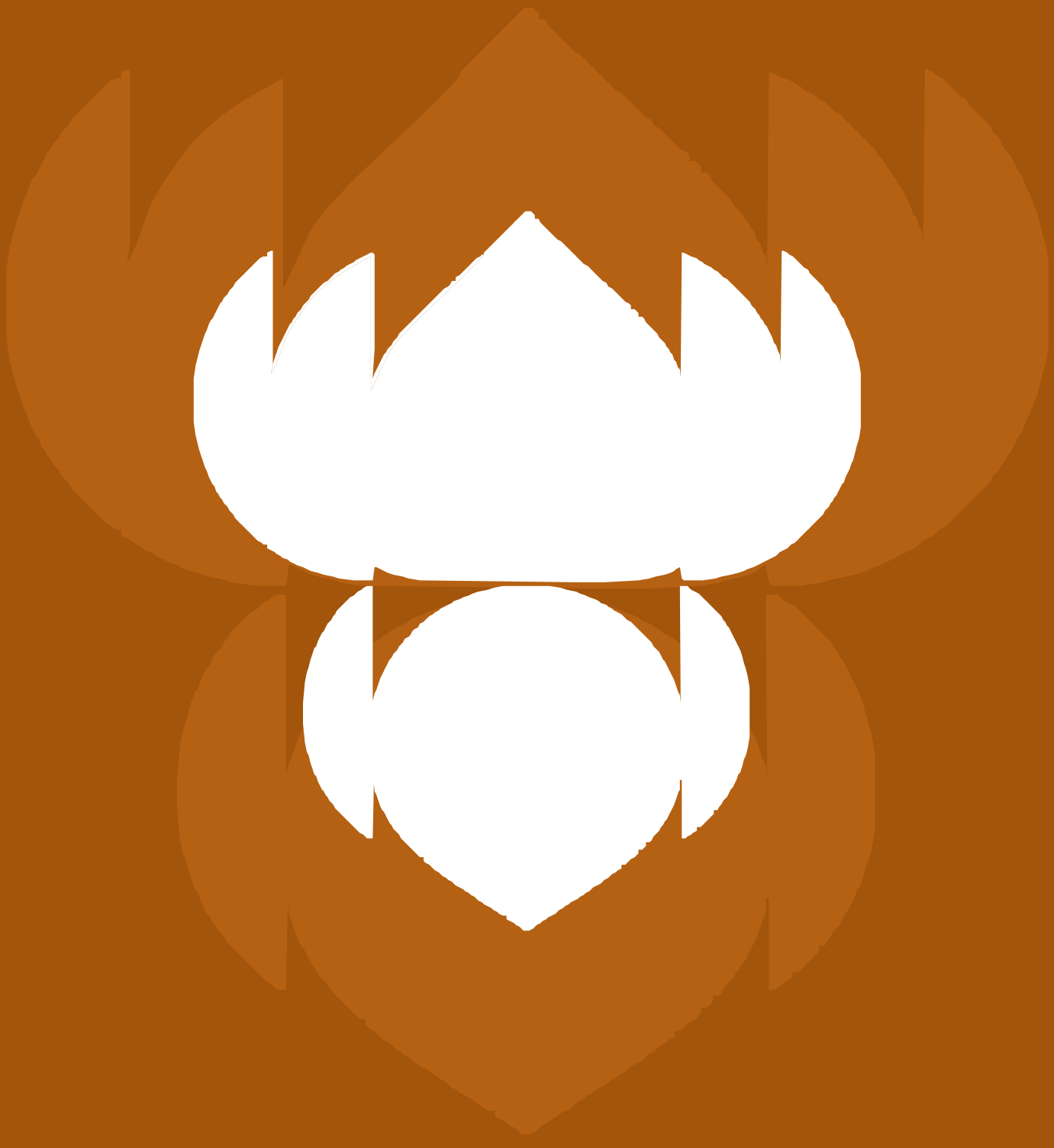

सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ लेखन

BEST WRITING ON CINEMA

राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार 2018

NATIONAL FILM AWARDS 2018

पुस्तकों, लेखों एवं समीक्षा के माध्यम से सिनेमा का एक कला के रूप में मूल्यांकन करने के लिए यह पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

The awards aim at encouraging study and appreciation of cinema as an art form and dissemination of information and critical appreciation of this art form through publication of books, articles, reviews, etc.

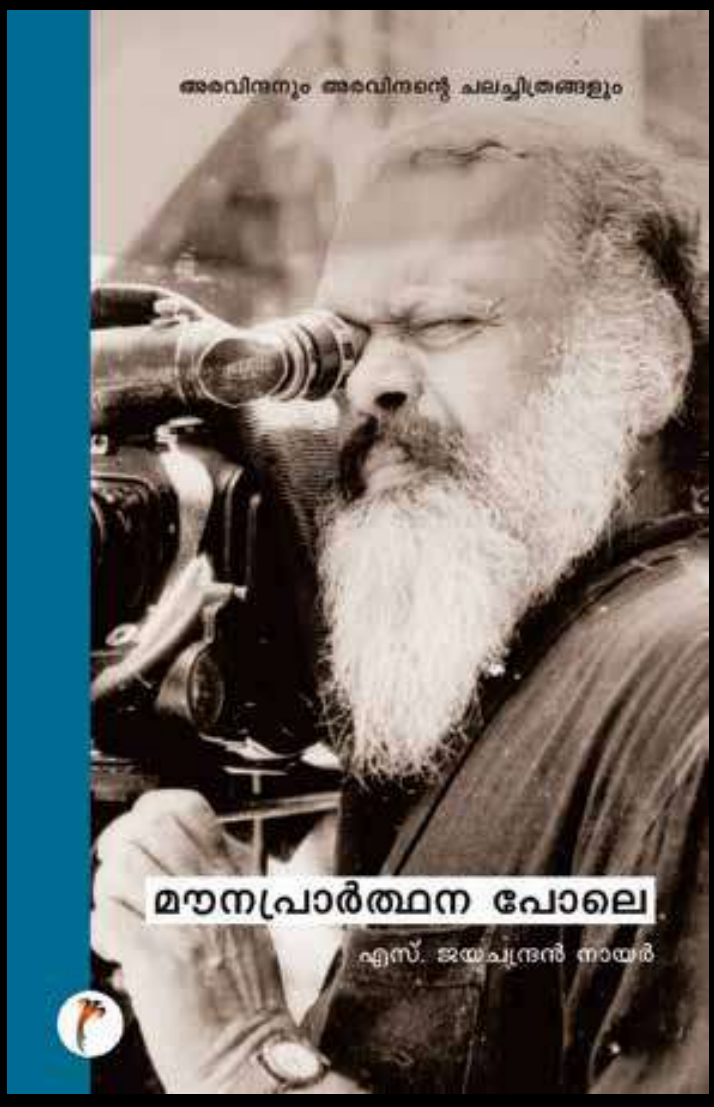

मौन प्रार्थना पोल

सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ पुस्तक

Mouna Prarthana Pole | Best Book On Cinema

स्वर्ण कमल | SWARNA KAMAL ₹ 75,000/-

पुस्तक परिचय - विख्यात समीक्षक चिदानंद दासगुप्ता के मुताबिक भारतीय सिनेमा के शेक्सपियर, जी. अरविंदन केरला मे संस्कृति और सिनेमा की आधुनिकीकरण पर एक लंबी छाया की तरह पड़ता है। एस. जयचंद्रन नायर, केरला के एक सम्मानीय संपादक और अरविंदन की जवानी के दिनों के साथी हैं। उन्होंने अरिविंदन के लगभग पेटिंग को शब्दों के जरिये 12 अध्यायों में, उतारा है, बचपन से लेकर तब का जब ये निर्देशक अपनी पेंटिंग और कार्टून स्ट्रिप्स (जो मलयालम की विख्यात साप्ताहिक पत्रिका मातृभूमि में छपती थी) से लेकर उनके धीरे धीरे एक महान फिल्म निर्देशक बनने के सफर को बयान करती है। तमाम उद्धरणों, टिप्पणियों और अपने वक्त की जानी मानी सांस्कृतिक और साहित्यिक हस्तियों की राय के साथ ये किताब इनकी फिल्मों की सीन दर सीन गहराई से अध्ययन करती है। एक रिपोर्ताज के तरीके से ये अरविंदन की फिल्मों के परदे की पीछे की कहानियां बयान करती है। एक सरल, सहज तरीके से लिखी गई ये किताब केरला के सांस्कृतिक और साहित्यिक दुनिया के साथ अरविंदन के जुड़ाव दिखाती है। लेखक गहरी मानवीयता को बाहर निकालते हुए बतलाते हैं कि किस तरह अरविंदन की फिल्म मानवीय जीवन की आंतरिक संवेदनाओं का खाका खींचती है। ये किताब बताती है कि फिल्में भावों का एक चित्रण हैं और यादों का खजाना हैं।

About the Book - Considered by eminent critic Chidanand Dasgupta as "The Shakespeare of Indian Cinema", G. Aravindan casts a long shadow on the modern discourse over cinema and culture in Kerala. In the book of 12 chapters, S. Jayachandran Nair, one of Kerala's respected editors and a companion of Aravindan during his heydays, pens almost a painting of Aravindan - right from his childhood, to the days when the director was known for his paintings and cartoon strips published in the esteemed Malayalam magazine, 'Mathrubhumi Weekly', to his eventual transformation into a legendary film director. Peppered with quotes, comments and observations from influential literary and cultural figures of the times, the book goes in-depth to study his movies scene-by-scene. In a true reportage style, it also gets to hitherto known behind-the-scenes stories of Aravindan's movies. Written in a plain, simple style, the book is also a record of Aravindan's influential engagement with the literary and cultural world of Kerala. The author has brought out with deep humanism, how Aravindan's films depict the empathy intrinsic to human life. The book describes the movies as a panorama of emotions, and a treasure trove of memories.

लेखक परिचय | About the Author

एस. जयचंद्र नायर (S. Jayachandran Nair)

एस. जयचंद्रन नायर ने पिरावी (1989) फिल्म लिखी और निर्माण किया, इस फिल्म ने काफी सरहाना बटोरी. आगे चलकर इन्होंने स्वाहम (1994) का निर्माण किया। पिरावी को 4 राष्ट्रीय अवार्ड, केन्स फिल्म महोत्सव में केमरा दिओर पुरस्कार, पहला चार्ली चेप्लिन अवार्ड, और अन्य अंतर्राष्ट्रीय अवार्ड प्राप्त हुए। इन्होंने 14 किताबें लिखी जिसमें 5 उपन्यास शामिल हैं।

S. Jayachandran Nair produced the much-acclaimed movie 'Piravi' (1989), which was followed by 'Swaham' (1994). 'Piravi' won 4 National Film Awards; Caméra d'Or Award at the Cannes Film Festival; the First Charlie Chaplin Award, and other international awards. He has to his credit 14 books including 5 novels.

केरला स्टेट चलचित्र एकेडमी

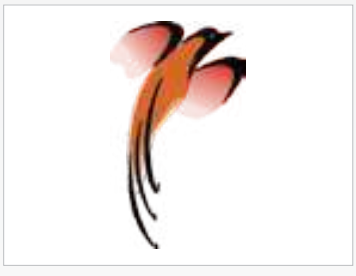

(Kerala State Chalachitra Academy)

केरला स्टेट चलचित्र एकेडमी को 1998 में केरला सरकार ने स्थापित किया था। इस एकेडमी के मुख्य कामों में – सरकार और फिल्म उद्योग के बीच तार जोड़ना, राज्यभर में फिल्म महोत्सव आयोजित करना, मलयालम फिल्मों का संरक्षण, फिल्म शिक्षा में हस्तक्षेप करना, मलयालम सिनेमा के इतिहास का दस्तावेजीकरण करना।

Kerala State Chalachitra Academy was set up by the Government of Kerala in August, 1998. The core objectives of the Academy include: being a link between the Government and the film industry, the conducting of Film Festivals all over the state, the preservation and propagation of Malayalam Cinema, to intervene in film education, to document the history of Malayalam Cinema.

प्रशस्ति - एस. जयचंद्र नायर की मौनप्रार्थना पोल(एक शांत प्रार्थना की तरह) अपनी तरह की अनूठे फिल्मकार जी अरविंदन के सिनेमा का विस्तार से वर्णन करती है. किताब का लेखन इस तरह का है कि वो गंभीर सिनेमा के छात्र और आम आदमी, दोनों के लिए ही पठनीय हो जाती है. किताब अरविंदन की रचनाओं को उनके सांस्कृतिक और निजी जीवन के नजरिए से जांचती है, और फिल्मकार और उनकी फिल्म दोनों को समझाती है।

Citation - S. Jayachandra Nair's Mouna Prarthana Pole (Like A Silent Prayer) is a detailed appreciation on the cinema of auteur G. Aravindan's in a format that makes for approachable reading for both the serious cinema student and the common man. The book analyses Aravindan's creations from the point of view of his cultural and personal backgrounds, and deals with both the filmmaker and his films.

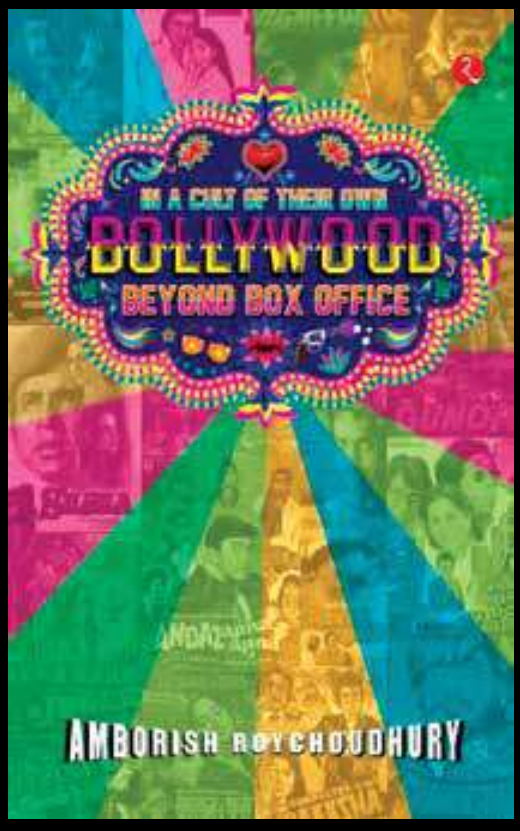

इन अ कल्ट ऑफ देयर ओन: बॉलीवुड बियॉन्ड बॉक्स ऑफिस

विशेष उल्लेख

In a Cult of Their Own: Bollywood Beyond Box Office | Special Mention

प्रशस्ति पत्र | CERTIFICATE

अम्बरिश रॉयचौधरी

अम्बरिश रॉयचौधरी खुद को एक गंभीर फिल्मी दीवाना कहलाना पसंद करते हैं। जब से उन्हें याद पड़ता है, तभी से वो खुद को सिनेमा के बीच पाते हैं। वैसे तो वह हर तरह का सिनेमा हजम कर लेते हैं, लेकिन हिंदी सिनेमा की तरफ उनका लगाव कुछ ज्यादा है। एंबोरिश ने करीब एक दशक वित्तीय सेवाओं में और करीब आधा दशक डिजिटल मार्केटिंग उद्योग में अपना हुनर दिखाया है। वे अपनी पत्नी के साथ मुंबई में रहते हैं।

Amborish Roychoudhury takes considerable (albeit somewhat misplaced) pride in calling himself a Film Buff. Ever since he can remember, he has been obsessing about cinema of all kinds, with a pronounced bias for Hindi cinema. Amborish has spent nearly a decade in financial services and about half a decade in the digital marketing industry, selling his wares. He lives with his wife in Mumbai.

रूपा पब्लिकेशंस के प्रकाशन का सफर 80 साल पहले शुरू हुआ। वे भारत के अग्रणी प्रकाशकों एवं वितरकों में से एक हैं।

Rupa Publications, which began its journey more than 80 years ago, is one of India's largest book publishers and distributors.

प्रशस्ति – इन अ कल्ट ऑफ देयर ओन – बॉलीवुड बियॉन्ड बॉक्स ऑफिस, अम्बरिश रॉय चौधरी की यह किताब हिन्दी सिनेमा की उन विभिन्न शैलियों को एक अलग ढंग से दिखाती है जो मजाकिया लहजे में एक गंभीर बात कहती दिखती हैं। लेखक ने कुछ ऐसी कल्ट फिल्मों के बारे में लिखा है जो सिनेमाई पहलू के अलावा कुछ और वजहों से कालजयी कहलाई गई। ये किताब एक बेहतरीन उदाहरण है जो बताती है कि किस तरह सिनेमा की समीक्षा सिनेमा की गुणवत्ता के ऊपर प्रभाव छोड़ती है।

Citation - *IN a Cult of Their Own: Bollywood Beyond Box Office*, by Amborish Roychoudhury is a unique look at various genres of Hindi cinema that fuses the serious with the tongue in cheek. The author fluidly writes on some of the cult films, including some which have acquired their legendary status because of reasons other than cinematic. This book is a fine example of how cinema criticism can transcend quality or the lack of it in cinema itself.

ब्लैज जॉनी
सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म समीक्षक

Blais Johny | Best Film Critic

स्वर्ण कमल | SWARNA KAMAL ₹ 75,000/-

ब्लैज जॉनी

ब्लैज जॉनी स्कूल ऑफ इंग्लिश एंड फॉरेन लैंग्वेजेस, दि गांधीग्राम रुरल इंस्टीट्यूट, तमिलनाडु में डॉक्टरेट के शोधार्थी हैं। इनके शैक्षणिक और शोध के विषयों में फिल्म, सांस्कृतिक अध्ययन और लोकप्रिय संस्कृति जैसे विषय भी शामिल हैं। इनके अंग्रेजी और मलयालम के विभिन्न जर्नल, मैग्जीन और ऑनलाइन पोर्टल में सिनेमा पर कई अध्ययनशील लेख प्रकाशित हो चुके हैं। इन्हें 2018 में सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ लेख का केरला राज्य सम्मान भी प्राप्त हो चुका है। इसके अलावा इन्हें 2017 और 2018 में सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ लेख के लिए केरल फिल्म क्रिटिक्स असोसिएशन अवार्ड से भी नवाजा जा चुका है। यही नहीं, ये सांस्कृतिक अध्ययन पर एक पुस्तक का सह–संपादन कर रहे हैं और एक पेशेवर अनुवादक भी हैं।

Blais Johny is a doctoral research scholar in the School of English & Foreign Languages, The Gandhigram Rural Institute, Tamil Nadu. His areas of academic and research interests include film studies, cultural studies and popular culture. He has contributed several scholarly articles on film studies to various academic journals, magazines and online portals in English and Malayalam. He received the Kerala State Film Award for the Best Article on Cinema in 2018. Also, he bagged the Kerala Film Critics Association Award for the Best Article on Cinema in 2017 & 2018. He is co-editing a book on Cultural Studies and is a practicing translator.

प्रशस्ति - समीक्षक ने कई विषयों पर अपनी बात रखी है जैसे सिनेमा में अस्तित्व और जाति आधारित राजनीति का असर, ट्रेलर का महत्व, विशेषकर तमिल और मलयालम फिल्मों में. उनकी लेखनी में शोधपरक गहराई है लेकिन इसके बावजूद इसे आसान शब्दों में समझाया गया है।

Citation - The critic has written on a wide range of subjects, ranging from impact of identity & caste politics on cinema to the influence and importance of trailers, especially in the context of Tamil and Malayalam cinema. His in depth writing is well researched yet presented in a manner comprehensible to everyone.

अनंत विजय
सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म समीक्षक

Anant Vijay | Best Film Critic

स्वर्ण कमल | SWARNA KAMAL ₹ 75,000/-

अनंत विजय, वर्तमान में दैनिक जागरण के साथ जुड़े हैं और यह एक वरिष्ठ पत्रकार, स्तंभकार और साहित्यकार हैं। इनके पास दो दशकों से अधिक की पत्रकारिता का अनुभव है। सिनेमा, कला और संस्कृति पर दैनिक जागरण में लिखा जाने वाला इनका रविवारीय स्तंभ काफी पढ़ा जाता है। वे इस स्तंभ को विगत दस सालों से लिख रहे हैं. इन्होंने विभिन्न विधाओं में 10 से भी अधिक पुस्तकें लिखी हैं और वे बेस्टसेलर पुस्तक 'बॉलीवुड सेल्फी' के भी लेखक हैं। अनंत विजय हिन्दी के एकमात्र लेखक हैं जो विदेशी पुस्तकों के बारे नियमित तौर पर लिखते रहते हैं। इनकी हाल ही में प्रकाशित पुस्तक 'मार्क्सवाद का अर्धसत्य' है जिसने साहित्य जगत में एक वैकल्पिक सोच को जन्म दिया है। वर्तमान में ये हिंदी सिनेमा की महान हस्तियों पर सुपरस्टार सेल्फी नाम की पुस्तक लिख रहे हैं। यह इंदिरापुरम, गाज़ियाबाद में अपनी पत्नी और बेटी के साथ रहते हैं।

Anant Vijay, currently with the Dainik Jagran, is a senior journalist, columnist and author with more than two decades of journalistic experience. His Sunday column in Dainik Jagran on Cinema, art and culture is widely read. He is writing this column for the last 10 years. He has written 10 books across various genres and is the author of the bestselling book 'Bollywood Selfie'. Anant Vijay is the only author in Hindi who regularly writes on foreign languages books. His latest book is 'Marxwad ka Ardhsatya', which has created an alternative narrative in literary circles. Currently, he is working on a book, 'Superstar Selfie' on legends of Hindi Cinema. He lives in Indirapuram, Ghaziabad with his wife and daughter.

प्रशस्ति - इनकी लेखनी शोधपरक होती है और किस्से–कहानियों से भरपूर पढ़ने में आसान होती है. हिन्दी सिनेमा की मौजूदा सामाजिक–राजनीतिक बारिकियां इनकी लेखनी में झलकती है।

Citation - His writing is well researched, embellished with anecdotes and is easy to read. His understanding of the contemporary socio-political nuances of Hindi cinema is reflected in his articles.

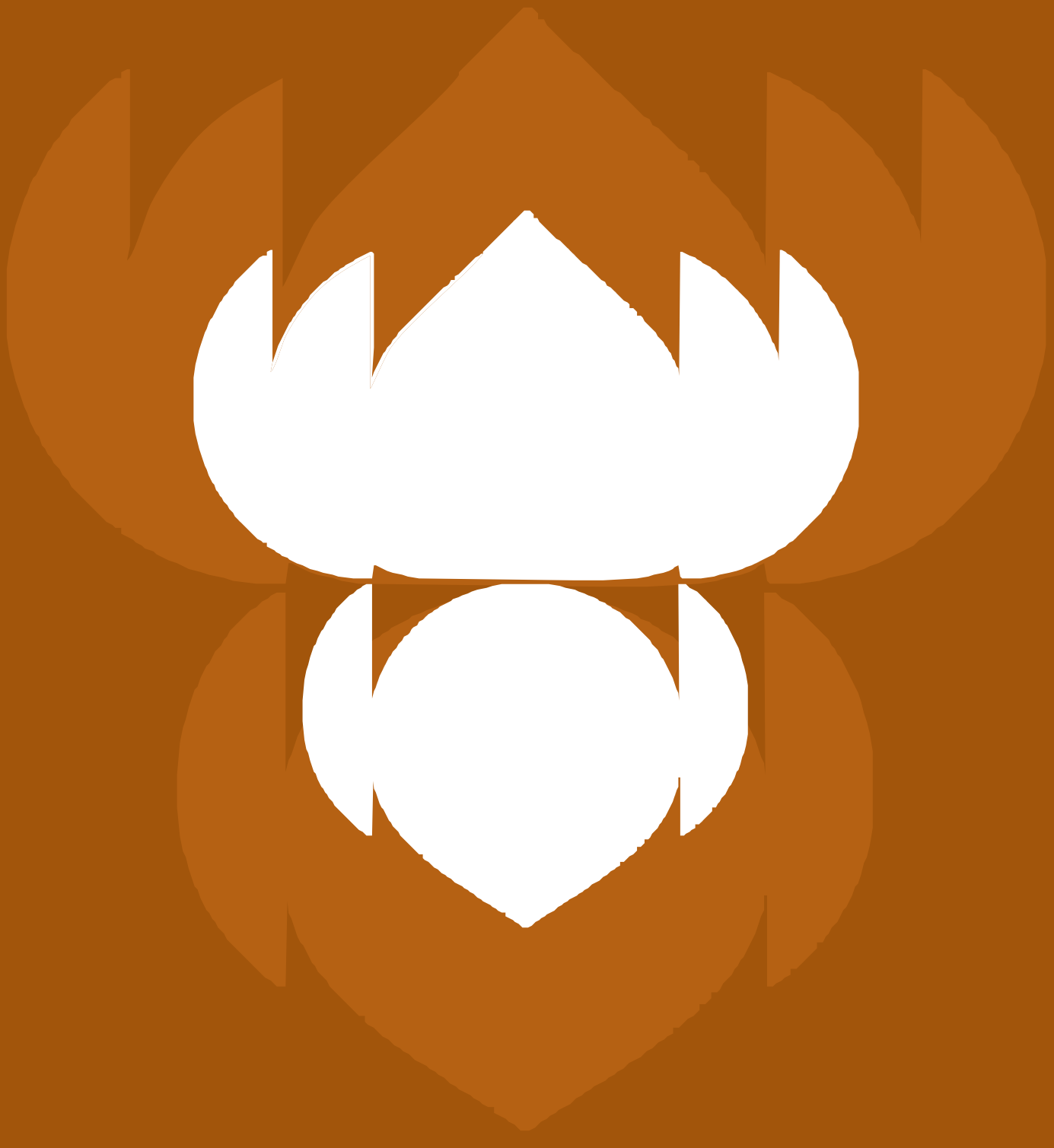

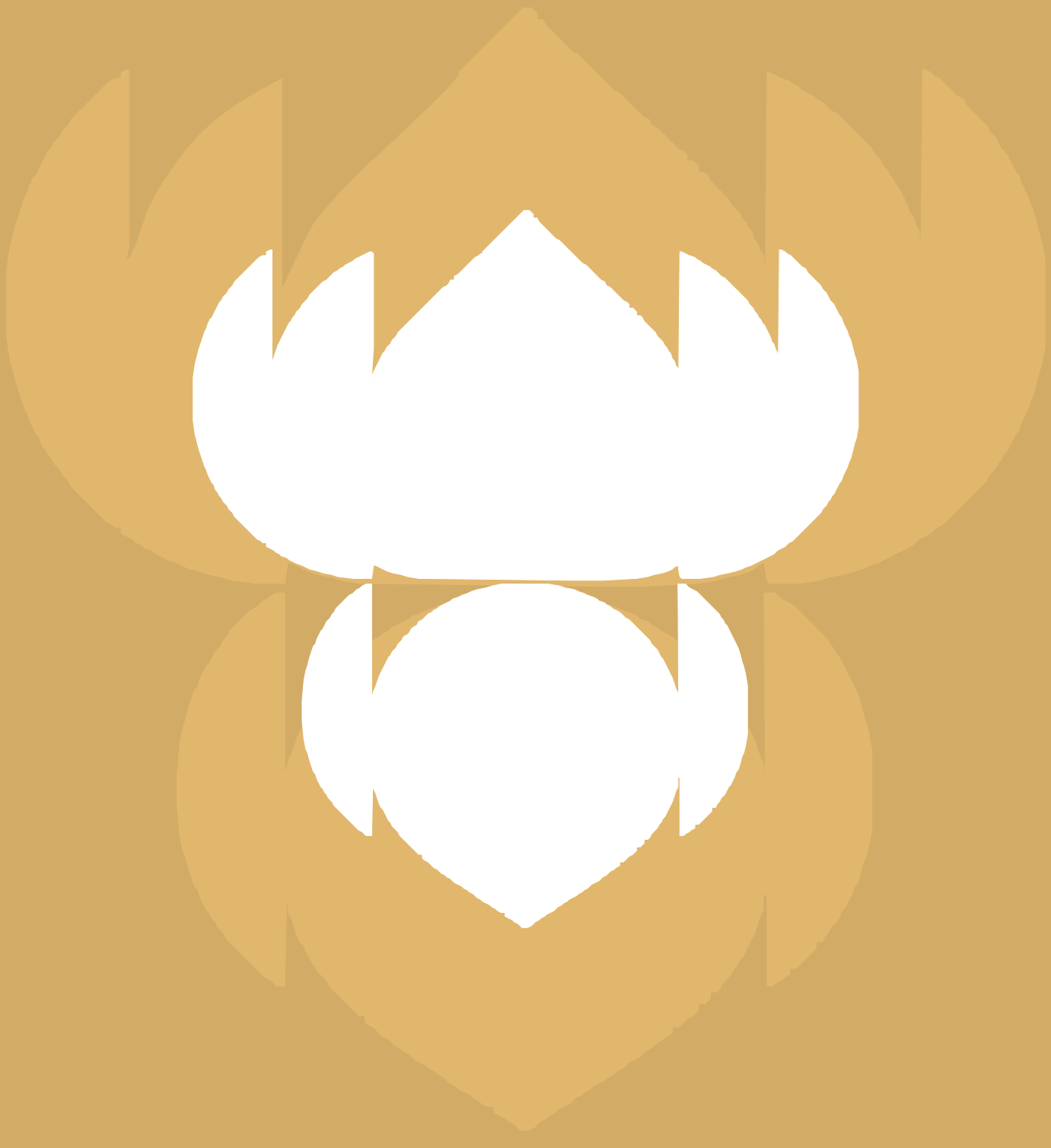

फ़िल्म अनुकूल प्रदेश पुरस्कार
FILM FRIENDLY STATE AWARD

राज्य सरकार द्वारा सिनेमा गतिविधियों और प्रमोशन के लिए समर्पित प्रयास, जो भारतीय सिनेमा के संवर्धन के लिए सकारात्मक माहौल बनाए, 'फ़िल्म अनुकूल राज्य' पुरस्कार के योग्य होगा।

A state government that makes dedicated effort in the direction of facilitating film shootings, and in creating a conducive environment towards promotion of Indian Cinema shall be eligible for the award for 'Most Film-Friendly State'.

उत्तराखंड (Uttarakhand)

सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म अनुकूल राज्य
Most Film-Friendly State

रजत कमल एवं प्रशस्ति पत्र
Rajat Kamal & Certificate

प्रशस्ति (Citation)

राज्य के तौर पर फिल्म उद्योग को आगे बढ़ाने के लिए, जिसमें राज्य का फिल्म निर्माण के लिए सहज माहौल तैयार करना शामिल है. हुनर और कला के विकास के लिए प्रोत्साहन, बंद पड़े सिनेमा हॉल को फिर से खोलने के लिए प्रोत्साहित करने, फिल्म विकास कोष का निर्माण, फिल्म निर्माण के लिए पहले से प्रोत्साहन देने की योजना जारी रखने, अन्य सक्रिय भागीदारियों के अलावा उत्तराखंड फिल्म विकास समीति का निर्माण

For furthering the growth of the film industry in the State by creating an environment for ease of filming in the State, encouraging skill/talent development, incentivising the re-opening of closed cinema halls, formation of film development fund, continuing with the earlier incentive plan for filming and formation of Utttarakhand Film Development Council among other pro-active initiatives.

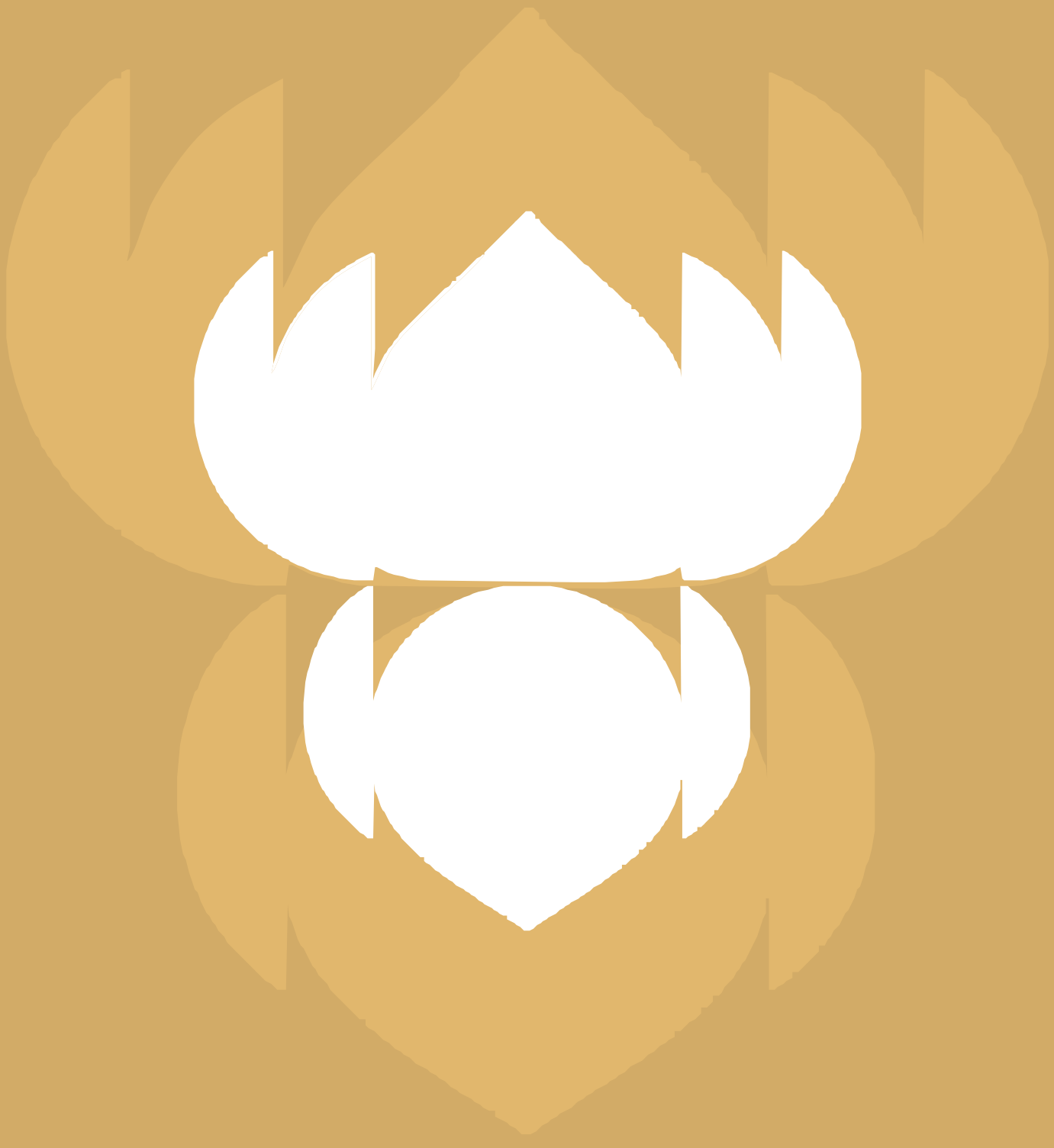

Directorate of Film Festivals Team

K. Prashant Kumar, Deputy Director,DFF
Gulshan Rai Juneja, Deputy Director, Accounts
Ankur Lahoty, Assist. Director,DFF
Mukesh Chand, Official
V.K. Sharma, Official
Vinod Kumar Bassi, Official
Gautam Singh, Official
Deepthi A.S. , Official
Ganesh Chand, Official
Chiranji Lal Meena, Official
Roshan Vats, Official
Devendra Prasad, Official
Chandi Prasad, Official
Kailash Kumar, Official
Amit Kumar, Official
Surinder Kumar, Official
Mahesh Chand, Official
Praveen Kumar Chawla, Official
Govind Ram, Official
Sushant Shrotriya, Unit Manager
Rajendra Kumar, Official
Deepu Choudhary, Official
Abhinay, Technical Assistant

Projection and Technical Supervision, Siri Fort Auditorium and Fil Division

S.K. Rohilla, Asstt. Engineer (Civil)
Mahipal Saini, Asstt. Engineer (Elect.)
Ashok Hitaishi, Fil Division

ACKNOWLEDGEMENTS

फ़िल्म निर्माता / निर्माण समूह, विगत डीएसपीए विजेताओं की फ़िल्म से संबंधित सामग्री फ़ोटोग्राफ उपलब्ध करवाने के लिए:
भारतीय राष्ट्रीय फ़िल्म अभिलेखागार, पुणे (भारत सरकार)
फ़िल्म प्रभाग राष्ट्रीय पुरस्कार और डीएसपीए पुरस्कार विजेताओं की दृश्य–श्रव्य प्रस्तुति के लिए

Film Producers/Production Houses for providing the film-related material Photographs of Past DSPA Winners:
National Film Archives of India, Pune (Government of India)
Films Division for DSPA and Doordarshan News for National Award Winners Audio Visual presentation

फ़िल्म समारोह निदेशालय
सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार
सिरी फोर्ट सभागार परिसर, अगस्त क्रांति मार्ग, नई दिल्ली–110049

DIRECTORATE OF FILM FESTIVALS
Ministry of Information and Broadcasting, Government of India
Siri Fort Auditorium Complex, August Kranti Marg, New Delhi – 110049.
www.dff.gov.in